मुण्डारी भाषा का भाषिक संरचना

डॉ. बीरेन्द्र कुमार सोय 'मुण्डा'

मुण्डारी भाषा का भाषिक संरचना

डॉ. बीरेन्द्र कुमार सोय 'मुंडा'

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
नयी दिल्ली ;भारतद्ध

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-85981-17-3

प्रकाशक:
सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस
एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059 दूरभाष: 011-25358642
ई-मेल-satyampub_2006@yahoo.com
मो. 09899665801, 09968277749

मुण्डारी भाषा का भाषिक संरचना

मूल्य : 700.00
प्रथम संस्करण : 2017
© सुरक्षित

भारत में प्रकाशित
श्री आर.डी. पाण्डेय द्वारा **'सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस'**, नई दिल्ली के लिए प्रकाशित। **कॉन्वेक्स पब्लिशिंग सोल्यूश** द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा **विशाल कौशिक प्रिंटर्स**, शहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Satyam

अर्जुन मुण्डा
पूर्व मुख्यमंत्री
झारखण्ड सरकार

ओल्ड सर्किट हाउस, सर्कुलर रोड
राँची-834001, झारखण्ड (भारत)
टेलीफैक्स : +91-651-2360060
ई-मेल : arjun.munda@gmail.com

पत्रांक : .....

दिनांक : .....

शुभकामना

'प्रोटोऑस्ट्रॉलॉयड' वंश की मुण्डारी भाषा अत्यन्त ही प्राचीन है। भाषा और समुदाय ने कई सभ्यताओं का निर्माण किया। जीवंतता हेतु मुण्डारी भाषा लेखन प्रतिनिधित्व का सशक्त माध्यम बनना चाहिए। भाषायी विरासत ही सांस्कृतिक निधि है। भाषा साहित्य और संस्कृति इंसान के सभी पक्षों को प्रभावित करते हैं। स्थायित्व प्रदान करने हेतु सृजनात्मक, रचनात्मक अभिरूचि को जगाने की आवश्यकता है। साहित्य के सभी पक्षों व विधाओं में लिपिबद्ध होना चाहिए। लिखित रूप देना वर्तमान की चुनौती एवं आवश्यकता है। कवि, कलाकार, संस्कृतिकार, साहित्यकार समाज के स्तम्भ होते हैं। चिंतन और चेतना को व्यवहारिक रूप देना ही साहित्य है।

डॉ. बीरेन्द्र कुमार सोय 'मुण्डा', मुण्डारी भाषा एवं साहित्य को जीवंत रूप देने में प्रयत्नशील हैं। प्रबुद्धजनों और युवा साहित्यकारों की भूमिका को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।

युवा लेखक डॉ. सोय को हार्दिक शुभकमनाएँ।

(अर्जुन मुण्डा)

समर्पण

श्रद्धेय गुरूवर पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुण्डा
(पूर्व कुलपति एवं सांसद, राज्यसभा) को सादर समर्पित!

प्राक्कथन

मुण्डाओं की भाषा मुण्डारी, ऑस्ट्रिक कुल के ऑस्ट्रोएशियाटिक शाखा के अन्तर्गत आती है जो मेडागास्कर से प्रशांत महासागर के इस्टर नामक द्वीप तक फैली हुई है। मैक्समूलर, फेडरिक मिलर, डब्ल्यू.जी. आर्चर, फा. जॉन हॉफमैन, रेयनोत्रोत, लैमेनदोन, स्मिट, केनेडी, ह्विटली जे.सी., जेम्स हेवर्द, पी. पोनेट, नॉरमन जाइड, तोशिकी ओसादा, जी; डिपलोथ, शरतचन्द्र राय, एम.वी. भादुड़ी, जगदीश त्रिगुणायत, स्वर्णलता प्रसाद, रोमिला थापर, गोर्डन चाइल्ड, हेरोल्ड हवीलर, डॉ. एस.एम. पाठक, पी.डब्ल्यू समिट, विलियम एथ लांगू, एल.पी. विद्यार्थी, कुमार सुरेश सिंह, एच.एच. रिजले, एन.के. सिन्हा, सच्चिदानंद, जियाउद्दीन अहमद, डी.एन. मजुमदार, दाउद दयाल सिंह होरो, निरमल सोय, जयपाल सिंह मुण्डा, भैयायराम मुण्डा, बलदेव मुण्डा, दुलाम चन्द्र मुण्डा, रामदयाल मुण्डा, सुलेमान बडिंग, दिवर हंस, सागु मुण्डा, मनमसीह मुण्डू, काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे', मेनस राम ओड़ेया, पी.एन.जे. पूर्ती, लॉरेन्स सिलास हेम्बरोम, विशु लकड़ा, निकोदिम केरकेट्टा, जुसब कन्डुलना, बीरेन्द्र कुमार सोय, भीमा हेरेंज, प्रो. लगनी हेरेंज आदि ने मुण्डा एवं मुण्डारी भाषा व साहित्य पर कई महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

प्रथम अध्याय में राज्य में प्रादेशिक भाषा की मान्यता, भाषा परिवर्त्तन के तत्व या कारक, क्षेत्रीय रूपों का विकास, ग्रामीण, हाट, शहर, भाषा उपयोग करने का नमूना, विभिन्न योजना, मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की तुलना पर विशेष अध्ययन किया गया है। अनुसंधान के द्वितीय अध्याय में भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की भाषिक संरचना पर प्रकाश

डाला गया है। भाषिक संरचना को अध्ययन के लिए भाषा विज्ञान के पक्षों जिसमें वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक भाषा विज्ञान पर संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है। भाषिक संरचना के ध्वनि, शब्द, समास, वाक्य, अर्थ संरचना पर अध्ययन प्ररूतुत किया गया है। तृतीय अध्याय में मुण्डारी भाषा का मानक स्वरूप निर्धारण व अन्तः क्षेत्रीय भाषिक संबंध के अन्तर्गत पाश्चात्य विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन की शुरूआत रोमन लिपि में की गई। इस अवधि में शासन की सहजता एवं ईसाईयत का प्रचार दोनों को ध्यान में रखकर पाश्चात्य विद्वानों ने यहां की भाषाओं का अध्ययन किया। भारतीय विद्वानों ने भी मुण्डारी भाषा के विभिन्न पक्षों पर अध्ययन प्रस्तुत किया है। साथ ही मुण्डा समुदाय के विद्वानों द्वारा भी मुण्डारी भाषा पर कई महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। इस अध्याय में लेखक एवं उनके द्वारा प्रयोग में लाये गये स्वर, व्यंजन वर्णों पर प्रकाश डाला है। शब्द द्वारा तुलना, वाक्य द्वारा तुलना कर एक रूप दर्शाने का प्रयास किया है। अनुसंधान चतुर्थ अध्याय में मैने मुण्डारी भाषा तब और अब पर वर्णन प्ररूतुत किया है। पूर्व के दिनों के प्रचलित मुण्डारी भाषा सरकारी संरक्षण के प्रावधान से संबंधित कार्यालयादेश का पत्रांक संख्या और वर्त्तमान में उसका अनुपालन आदि तथ्यों पर प्रकाश डाला है। साथ ही उसकी दिशा और दशा के पक्षों को दिखाने या लाने का प्रयास किया गया है। मुण्डारी भाषा के विभिन्न रूपों में बहुत सारी ऐसी विशेषताएँ है जो लोगों को एकसूत्र में बांधती है। इन सूत्रों के माध्यम से सामाजिक, भाषिक, सांस्कृतिक उत्थान की बात सामूहिक रूप से होती है। प्रस्तुत अनुसंधान का संबंध सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनीतिक, भाषिक व साहित्यिक एकता से है। इसका उद्देश्य भाषिक परिवर्त्तन की वास्तविकता को क्रमबद्ध वस्तुनिष्ठ रूप से समझना है। साथ ही साथ ज्ञान को व्यवहारिक जीवन में पायी जाने वाली समस्याओं के समाधान के लिए प्रयुक्त करना भी है।

अनुसंधान के क्रम में कई बार मुझे मार्गदर्शन एवं परामर्श की आवश्यकता हुई थी पर क्रमबद्ध रूप से अध्ययन के उपरांत यह दूर हुई। अनुसंधान के सफलता पूवर्क सम्पन्न होने में आदरणीय शोध निदेशक, समाज के विद्वानगण, साहित्यकार, भाषा सेवीगण, पुस्तकों को उपलब्ध कराने की संस्थानों के पदाधिकारीगण, क्षेत्र परिभ्रमण के दौरान ज्ञानार्जन के सहयोगी माननीय बुजुर्गगण, प्रोत्साहन देने वाले सहयोगी मित्रगणों के सुझावों एवं विचारों से अनुसंधान की परिपूर्णता हुई है।

-डॉ. बीरेन्द्र कुमार सोय 'मुण्डा'

आभार

ऑस्ट्रिक कुल के मुण्डा समुदाय और मुण्डारी भाषा को प्राचीनकाल में संजोकर रखने वाले पुरखों को नमन करता हूँ, जिनकी बदौलत आज हम अपनी भाषा के प्रति गर्व महसूस करते हैं और हमें एक पहचान मिली है।

ज्ञानार्जन की साधना में अनुसंधान एक प्रमुख कारक है। इसमें सूक्ष्मता, सरलता, व्यापकता, स्पष्टता, नये तत्वों की उपलब्धता, लोगों के सामने नये विचारों, कल्पनाओं के विषय बिन्दुओं का सृजन कर समाज, समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करने की सीख पैदा करता है। ज्ञान के विस्तृत दायरे को सांचे में ढालकर उनको मंजिल की पराकाष्ठा में पहुंचाने वाले महान विभूतियों को जिनके अथक प्रयास ने झारखंड के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं को पनपने, विकास का मार्ग दिखाने तथा मातृभूमि, मातृभाषा सुरक्षा के आत्मविश्वास को लगाने का काम किया है। समाज, समुदाय की समरसता को कायम करने का सफल मंत्र फूंका है। 'मुण्डारी भाषा का भाषिक संरचना' पुस्तक मुण्डारी भाषा एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति का जीवंत कृति है।

परिवार वालों के स्नेह एवं प्रोत्साहन से सृजनात्मक लेखन में बल मिला है। स्नेही श्रीमती वेरोनिका तिडू, पुत्र-बानम जय मुण्डा, पुत्री सालु मुण्डा का अनमोल समय मेरे लिए मिला। त्याग और साधना में हमेशा मनोबल ऊँचा बनाये रखने वाले पूजनीय पिताजी श्री मंगल सिंह मुण्डा, सेवानिवृत शिक्षक, के प्रति हृदय से आभारी हूँ।

प्रोत्साहन एवं शुभकामना हेतु **श्री अर्जुन मुण्डा, माननीय पूर्व मुख्यमंत्री (झारखण्ड)** का दिल से आभारी हूँ।

ज्ञानार्जन एवं प्रकाशन से जुड़े मेरे गुरुजनों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। पुस्तक प्रकाशन में 'दिन दुनी रात चौगुनी' परिश्रम करने वाले हितचिंतक 'सत्यम् पब्लिसिंग हाऊस' नई दिल्ली के आदरणीय आर.डी. पाण्डेय एवं उनके अभिन्न श्री धर्मेन्द्र जी का हार्दिक दिल से आभारी हूँ। इनके अथक परिश्रम से प्रकाशित पुस्तक पाठकों के हाथ में मौजूद है।

यह पुस्तक पठन-पाठन, अनुसंधान एवं इससे जुड़े सभी लोगों के लिए उयोगी और महत्वपूर्ण है। फिर भी पुस्तक में कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं, वह मेरी है। सृजनात्मक, रचनात्मक, प्रकाशनात्मक अभिरूचि बना रहे। विनम्र निवेदन है पाठकों से, आपका सहयोग मिलता रहे।

-डॉ. बीरेन्द्र कुमार सोय 'मुण्डा'

अनुक्रम

प्रथम अध्याय	:	राज्य में प्रादेशिक भाषा की मान्यता	1
द्वितीय अध्याय	:	भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की भाषिक संरचना	46
तृतीय अध्याय	:	मुण्डारी भाषा का मानक स्वरूप एवं अन्तरक्षेत्रीय भाषिक संबंध	145
चतुर्थ अध्याय	:	मुण्डारी भाषा तब और अब	189
		उपसंहार	205
		संदर्भ सूची	211

प्रथम अध्याय

राज्य में प्रादेशिक भाषा की मान्यता

भाषा की समस्या मूलत: जातीय समस्या का ही एक अंग है। इस देश में अनेक भाषाएँ बोलने वाली जातियाँ रहती हैं। इनसे मिलकर भारत राष्ट्र बना है। इस राष्ट्र में जातियों की सम्पर्क भाषा क्या हो, एक ही सम्पर्क भाषा हो या अनेक हों–यह समस्या का एक पक्ष है। कुछ लोग इस देश को एक उपमहाद्वीप कहते हैं, उनका मत है कि राष्ट्रीयता का भाव अंग्रेजों का विरोध करने से पैदा हुआ। वास्तव में यह देश राष्ट्र नहीं है क्योंकि यहाँ एक भाषा के बदले अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। कोल भाषा परिवार भारत का अत्यंत प्राचीन भाषा परिवार है। इस परिवार की भाषाएँ बोलने वाले अंग्रेजों के विरूद्ध स्वाधीनता संग्राम में लड़ चुके हैं। इनमें संतालों का वीरतापूर्ण संग्राम विशेष रूप से स्मरणीय है। ये लोग पश्चिम से पूर्व तक पूरे मध्यभारत में फैले हुए हैं। कोल भाषाएँ बोलने वाले लोग जातीय निर्माण की विभिन्न मंजिलों में हैं। इनके सामाजिक विकास का विस्तृत अध्ययन करके इनकी भाषा–समस्या सुलझाने का यत्न करना चाहिए। [1]

भारतीय भाषाओं का जनक वैदिक भाषा साहित्य को माना जाता है। वैदिक काल में प्रचलित रचित सामग्रियों का संकलन जिस भाषा में किया गया, उसे उस काल के हिसाब से वैदिक भाषा कहा गया। भाषा का प्रवाह निरंतर होने के कारण इस भाषा से संस्कृत भाषा की उत्पति हुई। इसे वैदिक साहित्य का अपभ्रंश या विकसित रूप कह सकते है। इसके बाद क्रमश: भाषाओं का विकास होने लगा। इसी क्रम में संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से

अपभ्रंश और अपभ्रंश से आधुनिक भाषाओं की उत्पति हुई। [2]

उपर्युक्त कथन भारत के दो प्रमुख भाषा–संस्कृति के विद्वानों के हैं। दोनों के विचार से स्पष्ट है कि भारत में भाषाओं को लेकर अनेक मत–मतांतर हैं। भारत की भाषायी समस्या बहुआयामी है और इसको लेकर गंभीर विमर्श हो रहे हैं। भाषा समस्या कई अर्थों में उन जातीय अन्तर्संघर्षों की उपज है, जो अपनी सांस्कृतिक अस्मिता और पहचान की उपेक्षा के फलस्वरूप आजादी के बाद भारत के उत्पीड़ित इलाकों में उठ खड़ी हुई थी। ये वे लोग हैं जिन्होंने भारतीय सभ्यता को अपनी श्रम–संस्कृति से हजारों वर्षों के कालखण्ड में विकसित किया था। जब भारत को स्वतंत्रता मिली और इनके अधिकारों तथा अस्मिता को कुचला जाने लगा तो प्रतिरोध एवं टकराव स्वाभाविक ही था। भारत का भाषायी एवं जातीय टकराव इस लिहाज से दो वर्गों का संघर्ष है। एक वह जो समर्थ है और दूसरा वह जो वंचित है।

यह स्थापित और स्वीकृत हो चुका है कि भारत के मूल निवासियों में आस्ट्रिक भाषा के लोग सबसे पुराने हैं। आर्य या अन्य लोग बाद में आये। इसलिए आर्य भाषाओं के पूर्व आस्ट्रिक भाषा की मौजूदगी के प्रमाण मिलते हैं। इन्हीं भाषा समुदाय के लोगों ने पाषाण सभ्यता का निर्माण किया। डॉ. रामदयाल मुण्डा के अनुसार–''आर्य द्रविड़ पूर्व किसी समय यह भाषा परिवार सारे भारत की भाषा रही होगी और सिन्धु घाटी तथा इसके पहले की सभ्यताओं के निर्माण में इन्हीं भाषा–भाषी लोगों का हाथ रहा होगा।'' [3] जगदीश त्रिगुणायत ने लिखा है–''ऑस्ट्रिक परिवार की भाषाएँ भारत की विभिन्न जातियों द्वारा बोली जाती है, वे सब की सब मुण्डा भाषाएँ कहलाती है।'' [4]

भाषा वैज्ञानिक कहते हैं कि भारत के पास 600 से अधिक भाषाएं और पांच हजार से अधिक बोलियों की समृद्धशाली विरासत है। इनमें कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जिनका व्याकरण है और वे दैनिक उपयोग में काम ली जाती हैं। कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जिनका व्याकरण है और उनका समुचित अध्ययन भी हो चुका है, पर वे आज सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान की भाषा बन कर रह गई हैं। परंतु अधिकांश भाषाओं का न तो अध्ययन हो पाया है और ना ही उनका व्याकरण बनाया जा सका है। इन भाषाओं का मानकीकरण नहीं हुआ है तथा उनके लोकसाहित्य को भी लिपिबद्ध नहीं किया जा सका है। ये भाषाएँ आदिवासियों की हैं। सवाल यह है कि आखिर इन आदिवासी भाषाओं में ऐसा अनमोल या

असाधारण क्या कुछ है जिसके चलते इन्हें बचाने की जरूरत है। क्यों आदिवासी भाषाओं को बचाने और इन्हें संरक्षित करने की अपील संयुक्त राष्ट्र संघ कर रही है। बाजार और मुनाफे के इस दौर में आदिवासी भाषाओं के बचाये रखने का औचित्य है? [5]

2001 में जारी संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि मानव समाज के पारंपरिक ज्ञान का एक बड़ा हिस्सा आदिवासी भाषाओं में समय के प्रवाह के बावजूद आज भी सुरक्षित है। इन समाजों में पढ़ने–लिखने की परंपरा की शुरुआत एकदम नयी है। उनके पास पीढ़ी दर पीढ़ी संचित ज्ञान का जो अनमोल खजाना है, वह लिपिबद्ध नहीं है। लिहाजा उनकी भाषाएं इंसानी समाज के ज्ञान का अद्‌भुत विशाल भंडार हैं। इस अर्थ में किसी भी आदिवासी भाषा और उसकी संस्कृति के लोप होने का सीधा अर्थ है प्रकृति के एक विशाल जीवित संदर्भग्रंथ को हमेशा हमेशा के लिए खो देना। सदियों की जीवन यात्रा के दौरान किये गये मौलिक शोध व अनुभव से हासिल कृषि विज्ञान, कला–कौशल, तकनीक, औषधीय पौधे तथा पर्यावरण संरक्षण का ज्ञान आदिवासी भाषाओं के लोप के साथ समाप्त हो जाएगा। इंसानी समाज की यह सबसे बड़ी अपूरणीय क्षति होगी। इसीलिए संयुक्त राष्ट्र संघ समय रहते सभी देशों से इस भाषायी और सांस्कृतिक विविधता को बचा लेने की अपील कर रहा है। [6]

वर्त्तमान झारखण्ड राज्य के सन्दर्भ में भी इसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टि डालने से यही मालूम होता है कि यहाँ सबसे पहले ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के लोगों या समुदाय का आगमन हुआ। निश्चित रूप से अपने साथ वे अपनी भाषा, संस्कृति, समाजिक दस्तूर, प्रशासनिक व्यवस्थाएँ लेकर आए थे। उन दिनों सम्पूर्ण राज्य में ऑस्ट्रिक परिवार के मुण्डारी भाषा का प्रचलन था। इतिहासकारों ने रिसा मुण्डा के नेतृत्व में मुण्डाओं का झारखण्ड में आगमन 600 ई. पू. बताया है। वे मानते हें कि 64 वीं शताब्दी ई. पू. तक जबकि यहाँ नागवंश प्रारंभ अस्तित्व में नहीं आया था, मुण्डाओं की सुदृढ़ सभ्यता थी। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कहा जाता है कि मदरा मुण्डा मुण्डाओं का अंतिम राजा था और उसकी राजधानी सुतिआम्बेगढ़ थी। मदरा मुण्डा के शासन काल में सम्पूर्ण प्रदेश में मुण्डारी भाषा से ही कार्यों का निष्पादन किया जाता था। नागवंशी राजा फणिमुकुट के राजा बनने के बाद भी मुण्डाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक पक्ष से कोई छेड़छाड़ नहीं हुई।

कालान्तर में झारखण्ड प्रदेश में अनेक जातियों के आव्रजन से कई भाषाओं का प्रादुर्भाव हुआ। द्रविड़ और आर्य जातियों के आगमन से भाषाओं का सम्पर्क एक दूसरे से हुआ। कई सम्पर्क भाषाएँ बनी। ऑस्ट्रिक भाषा समुदाय के लोगों ने खेतों को बनाया और विस्तृत क्षेत्र में फैले। आर्य जातियों ने आस्ट्रिक समुदाय की ईमानदारी, सादगी को जानकर वे भी उन क्षेत्रों में रहने लगे, जहाँ ऑस्ट्रिक समुदाय के लोग रहते थे। इस तरह भाषाओं के सम्मिलन की प्रक्रिया शुरू हुई। इस सम्मिलन के फलस्वरूप भाषा संबंधी समस्याओं का जन्म हुआ। जातीय टकराव मूलत: भाषायी और सांस्कृतिक संघर्ष ज्यादा है। इसीलिए कहा भी जाता है कि झारखंड आंदोलन संस्कृति अस्मिता और भाषायी पहचान का आंदोलन है।

झारखंड की लोक संस्कृति का इतिहास जितना पुराना है, उसकी विविध ता भी उतनी ही विशिष्ट है। इसीलिए यह स्वाभाविक है कि झारखंड की सांस्कृतिक विशेषताओं के संदर्भ में लोक संस्कृति की सैद्धांतिक अवधारणा स्थिर की जाय। इसका कारण है कि झारखंड अपनी विलक्षणता के बावजूद उपेक्षित रहा है। डॉ. विसेशवर प्रसाद केशरी कहते हैं–''जिस तरह यह पूरा क्षेत्र जातीय एवं वर्गीय शोषण का असह्य शिकार रहा है, उसी तरह इसकी भाषा और संस्कृति भी। पूरा क्षेत्र राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उपेक्षित है।'' [7]

भारत की 114 मुख्य भाषाओं में से 22 को ही संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इनमें हाल–फिलहाल शामिल की गयी संताली और बोड़ो ही मात्र आदिवासी भाषाएं हैं। अनुसूची में शामिल संताली (0.62), सिंधी, नेपाली, बोड़ो (सभी 0.25), मिताइ (0.15), डोगरी और संस्कृत भाषाएं एक प्रतिशत से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं। जबकि भीली (0.67), गोंडी (0.25), टुलु (0.19) और कुडुख 0.17 प्रतिशत लोगों द्वारा व्यवहार में लाए जाने के बाद भी आठवीं अनुसूची में दर्ज नहीं की गयी हैं। (जनगणना 2001)। गुजरात, त्रिपुरा, उत्तराखंड, अंडमान, चंडीगढ़, दादरा और नगर हवेली, दमन एवं दिउ तथा पुदुचेरी आदि राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में एक से अधिक भाषाओं को राजभाषा का दरजा प्राप्त है। पुदुचेरी में तो तमिल और अंगरेजी के साथ ही फ्रेंच को भी राजभाषा का सम्मान मिला हुआ है। [8]

देश की सभी बोलियों और भाषाओं के संरक्षण तथा विकास के लिए, उनके प्रचार–प्रसार तथा मान–सम्मान के लिए भारतीय संविधान में 12 अनुच्छेद हैं। प्रथम अध्याय में 120, 210, 343 और 344, द्वितीय अध्याय में 345 से 347, तृतीय अध्याय में 348–49 और चतुर्थ अध्याय में 350, 350–ए, 350–बी और 351 धाराएं हैं। अनुच्छेद 345 में एक से अधिक भाषाओं को राजभाषा का दरजा देने की बात की गयी है, तो 347 में राज्य की कुल जनसंख्या में से किसी एक हिस्से की जनसंख्या की भाषा के संरक्षण व विकास का 7प्रावधान है। धारा 350 में क्षेत्रीय और आदिवासी भाषाओं को बचाये रखने का संकल्प है, 350–ए में मातृभाषाओं में प्राथमिक स्तर से शिक्षा प्रदान करने तथा 350–बी में अल्पसंख्यक भाषाओं के विकास, संरक्षण और उसके अस्तित्व रक्षा पर जोर दिया गया है। [9]

उपर्युक्त संवैधानिक व्यवस्थाएँ जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गई थी, वह आज तक लंबित है। प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषाओं में मिले इसके लिए सिद्धांतत: जोर दिया गया लेकिन व्यवहार में इसे लागू नहीं किया गया।

झारखंड आंदोलन के लम्बे संघर्ष के परिणामस्वरूप सन् 2000 में झारखंड अलग राज्य का गठन हुआ। इस तरह अनगिनत शहादतों के बाद अंतत: सांस्कृतिक अस्मिताओं के संघर्ष के आगे भारतीय सरकार को झुकना पड़ा। नये राज्य के गठन के बाद उम्मीद बंधी कि अब राज्य की आदिवासी सांस्कृतिक पहचान की रक्षा के लिए विशेष उपाय किये जाएंगे। ऑस्ट्रिक परिवार की सभी आदिवासी भाषाओं को राजभाषा की मान्यता प्रदान की जाएगी और नई पीढ़ी प्राथमिक स्तर से ही अपनी मातृभाषाओं में शिक्षण ग्रहण कर सकेंगे। आदिवासी अस्मिता के प्रमुख आधारों–जल, जंगल एवं जमीन की रक्षा होगी, लेकिन बहुत जल्दी ही ये आशाएँ धूमिल हो गई। राज्य बनते ही झारखंड सरकार ने खनन एवं औद्योगिकरण के लिए 50 से अधिक कंपनियों के साथ एम. ओ. यू. किया। परंतु भाषाओं के विकास, झारखंडी साहित्य के प्रोत्साहन और संस्कृति संरक्षण की दिशा में कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी। राज्य गठन के आठ साल बाद भी भाषाओं का सवाल उपेक्षित है। झारखंड में बांग्ला, उड़ीया और भोजपुरी को राजभाषा का दर्जा देने की बात हो रही है जबकि झारखंडी भाषाएँ अपने संरक्षण एवं विकास के लिए जूझ रही हैं।

झारखंड में सरकारी स्तर पर झारखंडी भाषाओं को समुचित सम्मान नहीं

मिला है। झारखंडी भाषाओं के विकास एवं संरक्षण के लिहाज से आंशिक काम ही हो पाया है। प्रारम्भिक स्तर से स्नातकोत्तर एवं राज्य लोक सेवा आयोग में झारखंड की भाषाओं को स्थान मिला है और इससे नयी उम्मीद भी जगी है, लेकिन यहाँ की भाषाओं को विकास का जितना अवसर मिलना चाहिए, नहीं मिल पा रहा है, इसलिए सरकार को चाहिए कि इनके समुचित विकास के लिए इच्छा शक्ति और अपने अधिकारों का प्रयोग करे।

निष्कर्षत : कहा जा सकता है कि संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद झारखंड में आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को उनके हक से वंचित रखा गया है। राज्य गठन के आठ वर्षों बाद भी आदिवासी एवं जनजातीय भाषाओं के संरक्षण तथा विकास के लिए कोई स्पष्ट भाषा नीति नहीं बनायी गयी है। मुण्डारी भाषा प्राचीनकाल की भाषा है। यह संस्कृत के समक्ष या उससे भी प्राचीन है। मुण्डा कुल की भाषाएँ ही यहाँ अधिक प्रचलन एवं व्यवहार में है। इसलिए इन भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया जाना चाहिए। अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा वर्ष 2008 में सरकार इस ओर ध्यान देगी, ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए। समाज को भी नये संकल्प के साथ भाषायी सम्मान के लिए उठना चाहिए।

भाषा परिवर्तन

सभ्यताओं का विकास बताता है कि समाज कभी भी स्थिर नहीं रहा। भाषा भी चूँकि संस्कृति का अंग है, इसलिए समाज परिवर्तन के साथ–साथ उसमें भी बदलाव का होना स्वाभाविक है। अत: भाषा परिवर्तनशील है। सभ्यता विकास के पहले चरण से लेकर वर्तमान समय तक भाषाओं में उतार–चढ़ाव होता रहा है। इस परिवर्तनशीलता के कई कारक होते हैं। भाषा वैज्ञानिकों में श्याम सुन्दर दास, देवेन्द्रनाथ शर्मा, दीप्ति शर्मा एवं कर्ण सिंह ने भाषा परिवर्तन के कारकों पर अध्ययन प्रस्तुत किया है।

देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार–''परिवर्तन सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का नियम है, भाषा परिवर्तन के इस नियम का अपवाद नहीं है।'' [10]

डॉ. कर्ण सिंह ने भाषा की परिवर्तनशीलता पर ''चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी'' कहावत का उल्लेख करते हुए लिखा है–''जिस प्रकार निरन्तर प्रवाहशील नदी की धारा अविच्छिन्न होते हुए भी ज्यों–ज्यों आगे बढ़ती है त्यों–त्यों बदलती जाती है, उसी प्रकार भाषा की धारा को समझना चाहिए।'' [11]

इंसानी समाज के इतिहास पर नजर डालने से या फिर प्रकृति एवं परिवेश को देखने से ही हम पाते हैं कि सृष्टि की हर वस्तु गतिशील है। कुछ भी जड़ नहीं है। जड़ सदृश पत्थर भी नहीं जो आँधी–तूफान अथवा जल बहाव के साथ स्थान परिवर्तन करते हैं। प्रकृति जब भाषा के नियंता इंसान को ही परिवर्तन से अछूता नहीं रखती फिर भाषा कैसे जड़ हो सकती है। इसलिए भाषा में बदलाव होता है। भाषा में बदलाव का अर्थ है उसकी समूची रूपगत संरचना में परिवर्तन। भाषा के चारों उपांग–ध्वनि, शब्द, वाक्य और अर्थ, में परिवर्तन होता है, क्योंकि इन्हीं चारों के सम्मुचय को हम भाषा कहते हैं। इस नियम के कारण सबसे ज्यादा परिवर्तन भाषा की शब्द संपदा में होता है।

भाषा वैज्ञानिकों में परिवर्तन को लेकर कोई विवाद नहीं है। लेकिन परिवर्तन के कारणों पर मतभिन्नता जरूर है। भाषा परिवर्तन के कारकों पर विद्वानों की जो सम्मतियाँ आई हैं, उनमें से अधिकांश आंशिक या बहुत दूर तक सही हैं। कोई भी सिद्धांत अपने आप में पूरी तरह से सटीक नहीं है। इसलिए जब भाषा परिवर्तन के कारणों को समझने की कोशिश की जाती है, तो सभी के सिद्धांतों को देखना जरूरी हो जाता है।

अधिकांश भाषाविदों ने भाषा परिवर्तन को दो वर्गों में विभाजित किया है। यह माना जाता है कि परिवर्तन के कुछ कारण तो स्वयं भाषा के भीतर ही उपस्थित रहते हैं। साथ ही बाहरी कारक भी भाषा को परिवर्तित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं। हम भी यहाँ भाषा परिवर्तन के दोनों कारणों को सामने रखकर उसका अध्ययन करेंगे। भाषा परिवर्तन के ये दो प्रमुख कारक हैं–

1. आभ्यन्तर या आन्तरिक कारक
2. बाह्य कारक

1. आभ्यन्तर या आन्तरिक कारक

आभ्यन्तर कारण उसे कहते हैं जो भाषा बोलने वाले के भीतर ही निहित होती है। अर्थात् व्यक्ति अपनी भाषा को जिस तरह से बोलता है, उसके कारण भाषा में बदलाव आ जाता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के उच्चारण अवयवों एवं श्रवण अवयवों के साथ उस व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं का सम्बन्ध होता है, जो इसका प्रयोग करता है। इसके अन्तर्गत निम्न तत्व शामिल रहते हैं– (क) अनुकरण की अपूर्णता (ख) प्रयत्नलाघव (ग) बलाघात (घ) भावावेश

(ड़) और जातीय मनोवृति। संक्षिप्त में इन कारकों के बारे चर्चा करना आवश्यक है–

(क) अनुकरण की अपूर्णता / अपूर्ण अनुकरण : शब्दों के बार–बार प्रयोग से ही बच्चा या भाषा सीखने की इच्छा रखने वाला भाषा सीखता है। कभी–कभी इस प्रक्रिया में कुछ त्रुटियाँ हो जाती हैं। जैसे–ध्वनि उच्चारण में । इसके अन्तर्गत वाग्यन्त्र की भिन्नता, असावधानी, अशिक्षा, लिपि की समस्या आदि आते हैं। इन सभी कारणों से भाषा में परिवर्तन हो जाता है।

(ख) प्रयत्नलाघव : इंसान की प्रवृति है कि कम श्रम कर अधिक इच्छाओं की प्राप्ति करना। प्रयत्नलाघव श्रम की अल्पता का मानक है। इसे मुखसुख भी कहते हैं। शब्दों या वाक्यों की लम्बे उच्चारण को छोटा करके कहना एवं वैसे वाक्यों एवं शब्दों से क्रियाओं का सम्पन्न होना ही प्रयत्नलाघव है। ध्वनि परिवर्तन के हिसाब से प्रयत्नलाघव के कई कारक हैं, जैसे–

आगम, लोप, विकार, वर्ण विपर्यय आदि।

(ग) बलाघात : किसी शब्द को अधिक जोर देकर बोलना या किसी शब्द एवं वाक्य को स्पष्ट करने के लिए अधिक बल का प्रयोग करते हुए बोलना ही बलाघात है। मुण्डारी भाषा में इसका प्रयोग क्रोध अवस्था, आदेश, असहज मानसिक स्थिति उत्पन्न होने पर जिन शब्दों या वाक्यों का प्रयोग होता है, उसे इसके अन्तर्गत रखा जाता है।

जैसे–

(1) फदा मेयाइङ – लात मारूँगा ।

(2) सेकेड़ा हिजुमे – जल्दी आओ ।

(3) बोओर लेल – दुल्हा देखना ।

(घ) भावावेश : लाड़ प्यार, क्रोध, गुस्सा, दु:ख आदि अवस्थाओं में भी भाषा परिवर्तन की संभावना रहती है।

जैसे–

बच्चा का बुचु,

खलबोरा (गाली के क्रम में)

(ङ) जातीय मनोवृति–प्रत्येक जाति या समुदाय की अपनी पहचान

होती है। उनकी भाषा भी उसी दृष्टि से होती है। विद्वानों ने जातीय परिवर्तन को भी भाषा परिवर्तन के कारकों में से एक माना है। कोई जाति अपने को श्रेष्ठ समझती है तो कोई कमतर। इसी के आधार पर उनकी बौद्धिक, साहित्यिक, भाषायिक, सांस्कृतिक पहचान बनती है। संगीत, दर्शन, काव्य–कला का विकास भी अलग–अलग ढंग से होता है। जिन जातियों में सरलता, ईमानदारी, कोमलता होती है उनकी भाषा सरल, मधुर और कर्णप्रिय होती है और जिन जातियों में सबलता एवं दृढ़ता होती है उनकी भाषा कठोर होती है। इस तरह भाषा से भी समुदाय अथवा जाति की मनोवृति और उसके चरित्र का पता चलता है।

2. बाह्य कारक

भाषाविज्ञान के विद्वानों के अनुसार भाषा परिवर्तन के बाह्य कारक निम्न हैं–

(क) भौगोलिक : भौगोलिक वातावरण भाषा परिवर्तन का एक प्रमुख कारक है। भाषा वैज्ञानिक कहते हैं जलवायु अथवा भौगोलिक परिवेश का सीधा असर इंसान के शारीरिक गठन पर तो पड़ता ही है, उसके चरित्र और ध्वनि–पद्धति पर भी पड़ता है। इसलिए भौगोलिक संरचना एवं जलवायु के अनुरूप भाषा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। एक ही भाषा पहाड़ी भागों एवं समतली भागों में समान रूप से नहीं बोली जाती है। उसमें स्थानविशेष के हिसाब से थोड़ा अन्तर आ जाता है। मुण्डारी भाषा स्वयं इसका सबसे उपयुक्त उदाहरण है। भौगोलिक कारण से ही क्षेत्रानुसार मुण्डारी भाषा की चार उपशाखाएँ हो गयी हैं। जिसे हसद:, केरा, नगुरी और तमाड़िया कहते हैं।

डॉ. रामदयाल मुण्डा ने इन चारों उपशाखाओं के लिए नये नामकरण का आग्रह किया है। उन्होंने हसद: मुण्डारी के लिए 'तल (मध्य) मुण्डारी', नगुरी मुण्डारी के लिए 'चेतन् (ऊपरी–पश्चिम) मुण्डारी' और तमड़िया मुण्डारी के लिए 'लतर् (नीचली–पूरब) मुण्डारी' का नया नाम दिया है। इसी के साथ डॉ. मुण्डा रांची के आसपास बोली जाने वाली 'केर: मुण्डारी' को चेतन् मुण्डारी का ही विस्तार माना है। [12]

इन उपशाखाओं में मुण्डारी के कुछ शब्द है जिनमें भिन्नता पायी जाती है।–

हिन्दी	हसद:	नगुरी	केरा	तमाड़िया
नदी	गड़ा	नइ	नइ/ गड़ा	गाडा
रोटी	लद	होलोञ	लद	लाद
क्या	चना /चिकना	चिकना	चिकना	काना

(ख) ऐतिहासिक–ऐतिहासिक कारकों से भी भाषा में परिवर्तन आता है। मुण्डारी भाषा के ऐतिहासिक पक्ष को देखने से स्पष्ट होता है कि सिन्धु नदी घाटी सभ्यता के निर्माण में आग्नेय भाषा समुदायों का हाथ रहा है। उनकी भाषा–संस्कृति उस समय ही फली–फूली और उस समय समस्त कार्यों का निष्पादन उसी भाषा में ही होता था। किन्तु आर्य जातियों के आगमन से वहाँ की संस्कृति एवं भाषा मिश्रित हो गई। इसी तरह झारखण्ड में भी सुतिआम्बेगढ़ में जब मुण्डाओं का शासन फणिमुकुट राय के हाथों में चला गया, मुण्डारी भाषा आर्य भाषा में मिश्रित हुई। मुण्डा शासन तक मुण्डारी भाषा ही सुतिआम्बेगढ़ (रांची) और उसके आसपास की मुख्य कार्यकारी भाषा थी। लेकिन नागवंश के बाद सम्मिश्रण हुआ। यही वजह है कि रांची के आसपास के क्षेत्र में मुण्डारी भाषा का रूप परिवर्तित हुआ और वह 'केरा मुण्डारी' कहलायी। अंग्रेजों के आगमन से भी यहाँ की भाषाओं पर काफी प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप कई शब्द, जैसे–टेबल, लालटेन, टार्च आदि। मुण्डारी एवं नागपुरी सहित अन्य आदिवासी भाषाओं में समाहित हो गये। इस तरह भाषा परिवर्तन में इतिहास की महत्वपूर्ण भूमिका है।

(ग) सांस्कृतिक : मुण्डा भाषा पर कई समुदायों (आर्य, द्रविड़) की संस्कृतियों का प्रभाव पड़ा। सांस्कृतिक सम्मिश्रण के फलस्वरूप भाषाओं का परिवर्तन होना स्वाभाविक है। वैष्णव धर्म प्रचारक चैतन्य महाप्रभु द्वारा हिन्दू ध र्म के प्रचार–प्रसार से झारखण्ड भी अछूता नहीं रहा। इसी का नतीजा है कि राजदरबार में गायक रहे बुधनाथ शिखर ने मुण्डारी भाषा में राम भक्ति एवं कृष्ण भक्ति विषयक गीत रचकर उसे लोकप्रिय बनाया।[13] मुण्डारी भाषा एवं समुदाय के लिए यह परिवर्त्तन का बहुत बड़ा कारण बना। कालान्तर में कई सांस्कृतियाँ मुण्डारी भाषा के सम्पर्क में आयी और उन्होंने इस भाषा को प्रभावित किया।

(घ) साहित्यिक : मुण्डारी भाषा को साहित्यिक रूप से लिपिबद्ध

करने का शुभारम्भ दरबारी गायकों ने वैष्णव धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए राज्याश्रय में किया। इसके प्रणेता बुधनाथ शिखर थे जो बाद में बुदु बाबु कहलाए। उनके लिखे हिन्दू भक्ति गीत ही मुण्डारी में सर्वप्रथम प्रकाशित हुए। इसके बाद पाश्चात्य विद्वानों ने मुण्डारी भाषा का अध्ययन किया। इस क्रम में कई पुस्तकें निर्मित हुई। नृजातीय एवं मानवशास्त्रीय अध्ययन के सिलसिले में भी मुण्डारी लोकगीतों, लोक कथाओं और भाषा एवं व्याकरण की किताबें लिखी गयी। बाद में मुण्डा समुदाय में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण जागृति आई और भाषा, इतिहास के साथ–साथ साहित्य की विभिन्न विधाओं में मुण्डारी लेखकों की पुस्तकें सामने आई। इस तरह मुण्डारी भाषा में लेखन कार्य निरंतर प्रगति पर है। साहित्य की सभी विधाओं पर पुस्तकें लिखी जा रही हैं। मुण्डारी भाषा का चूँकि अपनी कोई स्वतंत्र लिपि नहीं है इसलिए लिखने का काम देवनागरी में हो रहा है। शुरुआत के दिनों में जरूर रोमन आदि लिपियों में भी इस भाषा को लिखा गया, लेकिन अब सर्वमान्य रूप से देवनागरी का ही प्रयोग किया जा रहा है।

(ङ) वैयक्तिक प्रभाव : महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व एवं उनके द्वारा उपयोग किये जाने वाले भाषारूप से भी भाषा प्रभावित होता है। मुण्डारी में बुदु बाबु, दाउद दयाल सिंह होरो, दिलवर हंस आदि विद्वानों ने मुण्डारी भाषा में कई शब्दों का सृजन किया, जो प्राचीनकाल की मुण्डारी भाषा में मौजूद नहीं थे या फिर उनका व्यवहारिक प्रचलन नही था। जैसे, खिड़की के लिए–कपोनटा, स्कूल के लिए इतुसइ आदि।

(च) वैज्ञानिक प्रभाव : आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक ने हर युग में संसार की सभी भाषाओं को प्रभावित किया है। मुण्डारी भाषा भी वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास से अछूता नहीं है। मुण्डारी भाषा में तकनीकी साधनों के प्रयोग के हिसाब से शब्द निर्मित हो रहे हैं। प्राचीन काल में या कुछ वर्षों पूर्व तक मुण्डारी भाषा में तकनीकी शब्दों का प्रयोग आंशिक रूप से ही होता था। लेकिन अब ऐसी शब्दावलियों का प्रयोग बढ़ा है। वर्त्तमान में वैज्ञानिक युग के आधार पर मुण्डारी भाषा के शब्दों को गढ़ने एवं निर्मित करने की आवश्यकता सभी महसूस कर रहे हैं। इससे मुण्डारी भाषा प्रभावित होगी पर वर्त्तमान परिवेश को देखते हुए नये शब्दों का सृजन जरूरी है। इस दिशा में कार्य प्रगति पर है।

(छ) जातीय प्रभाव : जातीय दृष्टिकोण एवं गुणों से भी भाषा प्रभावित

होती है। मुण्डारी भाषा क्षेत्र में कई जातियों का वास स्थान है। कारोबार को सुचारू रूप से चलाने के लिए व्यवसायी वर्ग मुण्डारी भाषा को प्रयोग में लाते है। उनकी बोली मुण्डा समुदाय द्वारा बोली जाने वाली मुण्डारी भाषा से थोड़ी अलग तथा मिश्रित होती है। इससे मुण्डारी भाषा में भी जातीय प्रभावों को परिलक्षित किया जा सकता है।

उपर्युक्त कारणों के अलावे भाषा परिवर्तन के और भी कारण हो सकते हैं। यहाँ हमने उन्हीं प्रमुख कारणों को सामने रखा है जो मुण्डारी भाषा के मनोविज्ञान एवं उसके परिवर्तन के कारक हो सकते हैं।

क्षेत्रीय रूपों का विकास किसी भी भाषा के क्षेत्रीय रूपों का विकास उसके विस्तृत क्षेत्र विस्तार के कारण होता है। भाषा परिवर्तन के कारकों के अध्ययन के क्रम में हमने इस तथ्य को समझा है कि वैयक्तिक विशिष्टता, भौगोलिक आदि कारणों से भाषा में परिवर्तन आ जाता है। क्षेत्र विशेष में जब भाषा भिन्न–भिन्न समुदायों की भाषाओं के सम्पर्क में आती है तब भाषायी अन्तर्मिलन होता है और उसके स्वरूप में बदलाव आ जाता है। ऐसी स्थिति में एक ही भाषा के अनेक क्षेत्रीय रूप विकसित हो जाते हैं।

यह बात कई बार सामने आई है कि भाषा की उत्पति व्यक्ति से होती है। फिर भी, भाषा केवल व्यक्ति सापेक्ष नहीं है, उसका संबंध समुदाय या समाज से भी है। भाषिक समुदाय की सबसे छोटी इकाई परिवार है। परिवार से आरम्भ कर गाँव, जिला, प्रदेश, राष्ट्र होते हुए हम उस महत्तम सामुदायिक इकाई तक पहुँचते हैं जिसे विश्व कहते हैं। वे सब मानव–समाज की इकाइयाँ ही हैं, केवल उनकी सीमा का विस्तार होता गया है। इनमें प्रत्येक स्तर पर भाषा का भेद देखा जा सकता है। [14]

इस प्रकार क्षेत्रीय रूपों का विकास किसी भाषा के क्षेत्रीय विस्तार की अधिकता और विभिन्न भाषिक समुदाय के साथ हुई अन्त:क्रियाओं के कारण होता है। भाषा विज्ञान में क्षेत्रीय रूपों को विभाषा अथवा बोली कहा गया है। लेकिन मुण्डारी के क्षेत्रीय रूपों को विभाषा अथवा बोली की परिभाषा में नहीं रखा जा सकता। क्योंकि मुण्डारी स्वयं अभी मुण्डा भाषा समूह की एक बोली है जो तीव्रता से भाषा बनने की ओर अग्रसर है। झारखंड के मुण्डा भाषा समूह में अनेक बोलियाँ हैं जो मुण्डारी की ही तरह भाषा बनने की अवस्था में पहुँच चुकी हैं। इनमें प्रमुख हैं–खड़िया, हो एवं संताली। मुण्डारी सहित इन सभी

आदिवासी बोलियों को अब भाषा कहा जाने लगा है और विश्वविद्यालय स्तर तक इनकी पढ़ाई भी हो रही है। इसलिए मुण्डारी के क्षेत्रीय रूपों की विशेषताएँ बोली अथवा विभाषा जैसी नहीं है अत: मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों को उस श्रेणी में हम नहीं रख सकते हैं।

मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों के निर्माण में कई कारकों का हाथ रहा है। इसके इतिहास को देखने से यह स्पष्ट होता है कि बाहरी व्यक्तियों का लगातार सम्पर्क इसका एक प्रमुख कारण है। ऐतिहासिक समय से ही मुण्डा भाषा एवं संस्कृति में अन्य समुदायों की भाषा एवं संस्कृतियों का प्रभाव पड़ता रहा है। इससे बचने के लिए मुण्डा समुदाय के लोग स्थानान्तरित होते रहे। किन्तु उनके पीछे–पीछे अन्य जाति–समुदाय (आर्य, द्रविड़) के आगन्तुकों का आना भी जारी रहा। यह परिवर्तन 64 ई. पू. में नागवंश की स्थापना होने से भी पहले जब द्रविड़ भाषा 'कुड़ुख' बोलने वाले उरांव लोग झारखंड आये, तब से हुआ। परंतु नागवंश और आर्य जातियों के आगमन के बाद इस प्रक्रिया में तेजी आयी। उस समय की प्रमुख भाषा मुण्डारी को अन्य जाति समूहों ने अपनाना शुरू किया और मुण्डा लोग भी दूसरी भाषा के सघन प्रभाव में घिर गये। इस तरह से मुण्डा समुदाय एवं मुण्डारी भाषा कई प्रकार के कारकों से प्रभावित हुआ और इसके क्षेत्रीय रूप बन गये।

क्षेत्रीय रूपों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि क्षेत्रीय भिन्नता के बावजूद भाषा की मूल संरचना में कोई बड़ा अंतर नहीं होता। क्षेत्रीय भिन्नता होते हुए भी वे भाषा का ही अंग होती हैं। इसलिए एक ही भाषा के क्षेत्रीय रूपों का इस्तेमाल करने वालों का जब आपस में सम्पर्क होता है और उनमें संवाद चलता है, तो वे क्षेत्रीय भिन्नता के बाद भी एक–दूसरे को अच्छी तरह से समझ लेते हैं। उन्हें भाषिक संवाद में कोई कठिनाई नहीं होती। झारखंड की सभी ऑस्ट्रिक भाषा समूह की आदिवासी भाषाओं में हम क्षेत्रीय रूप पाते हैं। इन आदिवासी भाषाओं का बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और असम तक क्षेत्र विस्तार होने तथा वहां की भाषाओं से सम्पर्क होने के कारण इनके रूप में परिवर्तन होना स्वाभाविक ही है। मुण्डारी के क्षेत्रीय रूपों का विकास भी इसी कारण हुआ है। परंतु यहाँ सिर्फ झारखंड क्षेत्र में मुण्डारी के जो विभिन्न रूप प्रचलित हैं, उसी को केन्द्रित किया गया है। मुण्डारी के क्षेत्रीय रूप बनने में निम्न कारकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है–

(1) गाँव–मुण्डा समुदाय सामूहिकता के आधार पर किसी गाँव का निर्माण करते थे। वर्त्तमान में भी इसी परम्परा का निर्वाह किया जाता है। प्राचीनकाल में मुण्डाओं के गाँव में अन्य समुदाय के लोगों को भी बसाया जाता था, इसलिए कि उनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो सके। कह सकते हैं कि जब मुण्डाओं ने स्थायी रूप से कृषि करना शुरू किया तब इसकी जरूरत समझी गई। इसके लिए गाँवों में बढ़ई, लोहार, स्वाँसी, डोम, चमार, जुलाह, कुम्हार आदि अन्य जातियों को बसाया गया। गाँव में सभी लोग आपसी भाईचारा के साथ रहते थे। मुण्डारी गाँवों में आज भी इसी तरह की बसावट है। ये दूसरी जातियाँ मुण्डारी से भिन्न सम्पर्क बोली का प्रयोग करती हैं। डॉ. वी. पी. केशरी ने इन जातियों को सदान कहा है। [15] सभी जातियाँ मिलजुलकर सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में रहती थी, और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, पर्व–त्योहार में एक दूसरे के सहभागी बनते थे। इसी क्रम में मुण्डारी भाषा और सादरी / नागपुरी बोली एक दूसरे को प्रभावित करने लगी। इससे कालान्तर में मुण्डारी भाषा के अन्य क्षेत्रीय रूपों का जन्म हुआ। मुण्डारी भाषा क्षेत्र के अन्तर्गत जितने भी मुण्डा बहुल गाँव है, उनमें सम्पर्क भाषा के रूप में दूसरी जातियाँ नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा, कुरमाली, बांग्ला आदि बोलते हैं। उनका प्रभाव मुण्डा समुदाय पर प्रभावी रूप से पड़ा है। इस तरह क्षेत्र विशेष में दूसरी बोलियों भाषाओं के सम्पर्क और क्षेत्र विस्तार के कारण मुण्डारी के दूसरे रूपों का विकास हुआ।

(2) हाट–बाजार–भाषा को प्रभावित करने वाले कारकों में गाँव के बाद हाट या बाजार का स्थान आता है। झारखंड क्षेत्र में परम्परागत रूप से दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वालों छोटे–बड़े कई बाजार हैं। इन्हें 'हाट' कहा जाता है। ये हाट साप्ताहिक होते हैं और वर्षों से लगते आ रहे हैं। हाट लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं आसपास के गाँवों में बसे परिवार–संबंधी से मिलने–जुलने का साप्ताहिक मिलन स्थल होता है। समानों की खरीद–बिक्री के साथ ही यह रिश्तेदारों, मेहमानों एवं मित्रों से मिलने–जुलने,

दु:ख–सुख, हाल–चाल, नेग पर्व आदि सूचनाओं के आदान–प्रदान का केन्द्र स्थल है। पूर्व के दिनों में हाट वैवाहिक रिश्तों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होता था। इन्हीं हाटों में लड़का–लड़की एक दूसरे से मिलते थे और फिर उनमें वैवाहिक संबंध स्थापित होता था। कहीं–कहीं अभी भी इस तरह का प्रचलन है।

हाट में निकटवर्ती क्षेत्र के लोगों के अलावे व्यापारी वर्ग दूर दराज से आते हैं। व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिए क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा का इस्तेमाल करते हैं। उनके बोलने में फर्क आ जाता है क्योंकि वे मुण्डारी भाषा का उच्चारण सही ढंग से नहीं कर पाते। लेकिन क्रेता और बिक्रेता के बीच संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से ऐसा करना जरूरी होता है। मुण्डारी भाषा एवं अन्य आदिवासी भाषी क्षेत्रों के हाट में देखा जाता है कि व्यापारी गण टूटी–फूटी आदिवासी भाषाओं का प्रयोग करते हैं। मुण्डारी भाषा एवं झारखंड की अन्य आदिवासी भाषाओं पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। बाह्य भाषाओं के सम्पर्क से मुण्डारी भाषा की पारम्परिक विशिष्टता प्रभावित हुई और हाट–बाजार क्षेत्रीय रूपों के निर्माण का कारक बन गये।

(3) शहर–झारखंड क्षेत्र में नगरों अथवा शहरों के उदय का भी यहाँ की भाषाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। नागवंशी शासन की स्थापना के बाद परम्परागत आदिवासी क्षेत्रों में धीरे–धीरे प्रशासनिक एवं व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना के कारण नगरों का विकास होने लगा। औपनिवेशिक काल में जब अंग्रेज इस क्षेत्र में आए तो उन्होंने पुराने छोटे–बड़े नगरों को तो विकसित किया ही, साथ ही साथ अपनी प्रशासनिक सुविधा के लिए नये शहरों का भी निर्माण किया। इसी समय उन्होंने औद्योगिक जरूरतों को पूरा करने के लिए ठेठ ग्रामीण इलाकों में तथा घने वन–पर्वतों वाले क्षेत्रों में खनन सहित दूसरी औद्योगिक गतिविधियाँ शुरू की, खदान खोले गये, कारखाने बने। इन खदान और कारखानों वाले क्षेत्रों में भी नये–नये नगरों का उदय हुआ। प्रशासनिक कार्यालय, स्कूल, थाने, कचहरी खुलने तथा व्यापारिक गतिविधियों के बढ़ने से आदिवासी

> जीवन में नगरों का हस्तक्षेप हुआ। आजादी के बाद झारखंड अपनी प्राकृतिक संसाधनों की बहुलता के कारण देश का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र बन गया और पुराने छोटे–छोटे नगरों का तेजी से विस्तार हुआ। रांची, जमशेदपुर, चाईबासा, बोकारो, धनबाद, गुमला, दुमका आदि विशाल नगर अस्तित्व में आये। इन औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र वाले नये नगरों में देखते ही देखते दूसरी भाषा बोलने वालों का जनसमुद्र उमड़ पड़ा। नये जातियों के इस जनसमुद्र की भाषाओं और उनके भिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन ने यहाँ की आदिवासी भाषाओं पर गहरा दबाव बनाया।

शहरों के उदय ने एक ओर जहाँ आदिवासी जीवन को प्रभावित किया वहीं उसने मुण्डारी आदि भाषाओं के स्वरूप को भी बदलने का काम किया। दूसरी भाषाओं के सम्पर्क में यह बदलाव होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसलिए झारखंड के अलग–अलग क्षेत्रों में बसे नये शहरों और उन शहरों में रहने वाली आबादी का प्रभाव व्यापक रूप से मुण्डारी पर पड़ा। इससे भी मुण्डारी के नये क्षेत्रीय रूपों का स्वरूप प्रयोग में आया। अतः कह सकते हैं कि मुण्डारी के क्षेत्रीय रूपों के विकास में शहर भी एक प्रमुख कारक बना।

भाषा उपयोग करने का नमूना/योजना

झारखंडी भाषाओं और बोलियों के विकास और विस्तार की दृष्टि से बीसवीं शताब्दी के अंतिम तीन दशक बहुत ही महत्वपूर्ण रहे हैं। इसी अवधि में शिक्षा के साध्य और साधन के रूप में आदिवासी भाषाओं का उपयोग प्रारम्भ हुआ। इसी समय सांस्कृतिक गिरावट, भटकाव और विस्थापन के बीच भाषाओं की अस्मिता के बारे में विभिन्न चिंताओं की बेचैनी तीव्र होती नजर आई। इस क्षेत्र की भाषिक अस्मिता को पत्र–पत्रिकाओं और भाषायी आयोजनों के जरिये अभिव्यक्ति देने का संघर्ष लगातार चलता रहा। इसी के साथ–साथ झारखंड की भाषाएँ अपने अनुप्रयोगात्मक विस्तार के लिए अनुकूल दिशाओं की तलाश करती रहीं। क्योंकि कोई भी भाषा जब मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्रिय होती है, तो उसके प्रयोग क्षेत्र का भी अनवरत विस्तार होता रहता है। भाषा की पहचान केवल उसका साहित्यिक सृजन नहीं होता, बल्कि भाषा की व्यापकतर संप्रेषणीयता का एक अनिवार्य प्रतिफल यह भी है कि उसमें सामाजिक संदर्भों और नये प्रयोजनों को साकार करने की कितनी

संभावना है। संसार भर की भाषाओं में यह प्रयोजनीयता धीरे–धीरे विकसित हुई है और रोजी–रोटी का माध्यम बनने की विशिष्टताओं के साथ भाषा का नया आयाम सामने आया है। यह नई भाषिक भूमिका भाषा की व्यावहारिक प्रयोजनमुखी चेतना से संबंधित है। प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य है ऐसी व्यावहारिक भाषा जिसका उपयोग एकाधिक विशेष प्रयोजनों के लिए हो। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयुक्त भाषा ही प्रयोजनमूलक भाषा है। यह भाषा व्यापकतर जीवनोपयोगी उपकरणों से बनती है और इसकी व्यावहारिक कुशलता में संदेह नहीं किया जा सकता। ऐसे में संस्कृति और भाषा दोनों की संरक्षा के लिए भाषा का प्रयोजनमूलक विस्तार आवश्यक है।

झारखंडी भाषाओं को प्रयोजनमूलक बनाने की दिशा में अभी तक कोई स्पष्ट योजना नहीं बनाई गई है। यहाँ की भाषाओं को जीवन के व्यवहारिक प्रयोग के अनुरूप बनाने लिए जरूरी है कि इनका शिक्षा, प्रशासन, न्यायालय, व्यापार आदि क्षेत्रों में उपयोग की योजना बनायी जाये। विशेषकर शिक्षा के माध्यम से इन्हें ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के लिए सक्षम बनाते हुए रोजगार एवं राजकाज की भाषा हेतु इनके उपयोग की व्यापक योजना बनायी जाये। सांस्कृतिक विरासत की बहुरंगी उपलब्धियों के होते हुए भी आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति के वैश्विक सूत्रों के साथ अपनी भाषा को जोड़े बिना कोई समाज विकसित नहीं हो सकता।

भारत बहुभाषायी राष्ट्र है। इसलिए संविधान में देश के प्रत्येक भाषायी अल्पसंख्यक वर्गों के लोगों की भाषाओं को मौलिक अधिकार के रूप में संरक्षण प्राप्त है। आदिवासी भाषाओं को विकसित, प्रोत्साहित और संरक्षित करने हेतु संविधान में विशेष प्रावधान है जो निम्न है–

(1) संविधान के अनुच्छेद 29(1) में वर्णित है कि भारत के राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग के निवासी नागरिकों के अनुभाग को जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है, उसे बचाए रखने का अधिकार होगा।

(2) संविधान के अनुच्छेद 30 (1) में मौलिक अधिकार के रूप में प्रावधान किया गया है कि "धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गों की अपनी रुचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन का अधिकार होगा।

(3) संविधान के अनुच्छेद 350 (क) में प्रावधान है–प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी, भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निर्देश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबन्ध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

(4) संविधान के अनुच्छेद 45 में प्रावधान है कि राज्य इस संविधान के प्रारम्भ से दस वर्ष की अवधि के भीतर सभी बालकों को चौदह वर्ष की आयु पुरी करने तक नि: शुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने के लिए उपबंध करने का प्रयास करेगा। यह प्रावधान राज्य की नीति निदेशक तत्व के रूप में अंकित है।

(5) संविधान के अनुच्छेद 46 में राज्य की नीति निदेशक तत्व के रूप में इस प्रकार के प्रावधान है कि राज्य, जनता के दुर्बल वर्गों के विशिष्टता, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन जातियों के शिक्षा और अर्थ सबंधी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा।

(6) संविधान के भाग (कुछ वर्गों के सबंध में विशेष उपबन्ध) के अनुच्छेद 339 में प्रावधान है कि "संघ की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार किसी राज्य को ऐसे निर्देश देने तक होगा जो उस राज्य की अनुसूचित जनजातियों के कल्याण के लिए निर्देश में आवश्यक बताई गई स्कीमों के बनाने और निष्पादन के बारे में है।"

(7) संविधान के अनुच्छेद 275 (1) में प्रावधान है कि "ऐसी राशियाँ जिनका संसद विधि उपबन्ध करें, 31 राज्यों के राजस्वों में सहायता अनुदान के रूप में प्रत्येक वर्ष भारत की संचित निधि (कंसोलिडेटेड फंड ऑफ इंडिया) पर पारित होगी, जिन राज्यों के विषय में संसद यह अवधारित करें कि उन्हें सहायता की आवश्यकता है और भिन्न–भिन्न राज्यों के लिए भिन्न–भिन्न राशियाँ नियत की जा सकेगी। परन्तु किसी राज्य के राजस्वों में सहायता अनुदान के

रूप में भारत की संचित निधि में से ऐसी पूंजी और आवर्ती राशियाँ प्रदत की जाएगी जो उस राज्य को उन विकास स्कीमों के खर्चों को पूरा करने में समर्थ बनाने के लिए आवश्यक हो जिन्हें उस राज्य में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण की अभिवृद्धि करने या उस में अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन स्तर को उस राज्य के शेष क्षेत्रों के प्रशासन स्तर तक उन्नत करने के प्रयोजन के लिए उस राज्य द्वारा भारत सरकार के अनुमोदन से हाथ में लिया जाए।''

उपर्युक्त संवैधानिक प्रावधानों को देखने के बाद सरकारी स्तर पर मातृभाषाओं के लिए किये गये प्रयास नगण्य मालूम होते हैं। व्यवहार रूप में, विशेषकर आदिवासी भाषाओं के संरक्षण, प्रोत्साहन और विकास के लिए सरकारी नीतियाँ और कार्यक्रम निराश करती हैं। जब भाषायी–सांस्कृतिक आंदोलन खड़े हुए तब सरकार ने आंदोलनों के दबाव में अकादमियों वगैरह का गठन तो किया लेकिन अकादमियों की भूमिका संदेहास्पद ही रही। बिहार के समय में गठित ''बिहार जनजातीय भाषा अकादमी'' के क्रियाकलापों का अध्ययन इस दृष्टि से अत्यंत दिलचस्प हो सकता है। झारखंड बनने के 8 सालों के भीतर भाषा अकादमियों की स्थापना का नहीं होना भी सरकार के असहयोगत्मक रूख को प्रदर्शित करता है।

झारखंडी भाषाओं के प्रयोजनमूलक उपयोग की दिशा में सरकार को सार्थक पहल करने की जरूरत है। न्यायालय, प्रशासन एवं शिक्षा क्षेत्रों में आदिवासी भाषाओं के व्यावहारिक प्रयोग से स्थितियों में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। मातृभाषा को विकास के रास्ते पर लाने के लिए उस देश या राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। न्यायिक और प्रशासनिक प्रोत्साहन, संरक्षण एवं प्रसार के समुचित व्यवस्था से मातृभाषा के महत्व को समझा जा सकता है। इसके अन्तर्गत कोर्ट, (न्यायालय) पुलिस एवं प्रशासन विभाग महत्वपूर्ण है। इस विभाग का कार्य आम जनता से सीधे तौर पर जुड़े हुए होते हैं। इसको हम संक्षिप्त तौर पर निम्न रूप से देख सकते हैं–

(1) **कोर्ट/न्यायालय**–न्याय दिलाने के जितने भी कोर्ट हैं चाहे सिविलकोर्ट हो या हाईकोर्ट, इनमें कार्यरत जजों, वकीलों, मुंशियों एवं कर्मचारियों को अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय भाषाओं के साथ–साथ स्थानीय भाषा की भी जानकारी होनी चाहिए। चूँकि स्थानीय

व्यक्तिगण कोर्ट की भाषा नहीं समझ पाते हैं। निर्णय किसके पक्ष में हुआ, समझने में दिक्कत होती है। वास्तविकता और सच्चाई की जानकारी मुवक्किल, वकील और जज को होना चाहिए। निष्पक्ष रूप से न्याय व्यवस्था में पारदर्शिता लाने के लिए स्थानीय भाषाओं में न्यायालयों का कार्य आवश्यक है। इससे भाषा की व्यावहारिक उपादेयता बढ़ेगी।

(2) **पुलिस**–इस शब्द का तात्पर्य ही है पुरुषार्थी, लिप्सा रहित, एवं सहयोगी। इन शब्दों की परिभाषा या अर्थ तभी सार्थक होगा जब उस क्षेत्र के लोगों के सुख–दु:ख भाषा–संस्कृति इत्यादि को समझ कर पुलिस जनभावनाओं को समझ सकेगी। जनता का सहयोगी बन सकेगी। लिप्सा का मोह एवं आतंकी छवि त्यागकर जनता और पुलिस के बीच का सबंध मधुर एवं सहयोगपूर्ण होना चाहिए। राज्य को सुचारू एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण बनाने के लिए सरकार ने न्यायिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था कायम की है। बहुध र्मों से सुसज्जित हमारा भारत देश धर्मनिरपेक्षता, अखण्डता के सिद्धान्त पर सन्तुलित है और विकास के मार्ग पर अग्रसर है। आमजन की समस्याओं को दूर करने के लिए सबंधित क्षेत्र के थाना प्रभारियों व सिपाहियों को स्थानीय भाषा का ज्ञान जरूरी है। भाषा नहीं जानने से कई बार पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी वास्तविक स्थिति को नहीं समझ पाते और स्थिति नियंत्रणपूर्ण नहीं रह पाती। वर्त्तमान में देखा यह जा रहा है कि जनता और पुलिस में काफी दूरी है। प्रशासनिक अधिकारियों को भी स्थानीय भाषाओं का ज्ञान नहीं होता। इसलिए समस्याओं के उत्पन्न होने पर उसका हल नहीं निकलता बल्कि समस्या और जटिल हो जाती है। आज लोग पुलिस से दूर भागते हैं, क्योंकि वार्तालाप का माध्यम जनता के अनुरूप नहीं होता है। अत: पुलिसकर्मियों को स्थानीय भाषा सिखाने की व्यवस्था सरकार को करनी चाहिए। इससे न सिर्फ विधि व्यवस्था को सुचारू रूप देने में मदद मिलेगी वरन् झारखंड की स्थानीय भाषाओं के प्रति दुराव कम होगा। भाषा किसी समुदाय विशेष की न रहकर व्यावहारिक उपयोग की भाषा के रूप में स्थापित होगी।

(3) **प्रशासन**–गणतांत्रिक देश भारत में लोकतंत्र की व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रशासनिक व्यवस्था कायम किया गया है। इस के तहत केन्द्र एवं राज्य को सुव्यवस्थित ढंग से चलाया जाता है। सम्पूर्ण क्षेत्र का विकास इसी प्रशासनिक ढांचे के द्वारा होता है। क्षेत्र के विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका संबंधित प्रखण्ड कार्यालय की होती है। यहीं से योजनाओं को जमीनी स्तर पर लागू किया जाता है। विकासीय एवं कल्याणकारी कार्यक्रमों को मूर्त रूप दिया जाता है। बिजली, सड़क, पानी, कुंआ, तालाब, डेम, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास इत्यादि बुनियादी आवश्यकताओं अथवा सुविधाओं को सरकार आम लोगों के लिए उपलब्ध कराती है। वर्त्तमान में राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना के तहत कई कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। इतनी सारी योजनाएँ आम जनता के लिए लागू है परन्तु ये सुविधाएँ लोगों तक कम ही पहुँचती है। प्रखण्ड स्तर पर ही बिचौलियों के सक्रिय तथा जनता के निष्क्रिय होने से ग्रामीणों तक लाभ पहुँच नहीं पाता। गाँव की जनता सीधी–सादी, छल–कपट से दूर, ईमानदारी पूर्वक जीवनयापन करने वाली और लूट की भाषा न समझ पाती है, न बोल पाती है। इससे वे अधिकारों से वंचित हो जाते हैं। अधिकारी और जनता के बीच संवादहीनता से बिचौलियों की चांदी हो जाती है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।

इस विकट समस्या को दूर करने के लिए अधिकारियों को आम जनता के क्षेत्र की भाषा जानना आवश्यक है। भाषा नहीं जानने से विकासीय योजनाओं में भी लोग उसका महत्व नहीं समझने के कारण भागीदारी नहीं करते। इसलिए सरकारी योजनाओं को क्षेत्र की स्थानीय भाषा के माध्यम से बताना समझाना एवं लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। भाषायी समस्या को दूर करके ही हम विकास को गति दे सकते हैं। इसके लिए सरकार को भाषायी प्रशिक्षण की व्यवस्था करना चाहिए। तभी प्रशासन का वास्तविक कार्य धरातल पर दिखेगा नहीं तो सिर्फ फाइलों में ही सिमट कर रह जाएगा और विकास के मद की राशि सरेंडर हो जाएगी। इसका

एकमात्र विकल्प है, भाषा की जानकारी एवं उसको महत्वपूर्ण स्थान देना।

यों तो मुण्डाओं की अपनी स्वतंत्र प्रशासनिक, न्यायिक, सामाजिक व्यवस्था है, जिसे 'मुण्डा मानकी पड़हा' व्यवस्था कहते हैं। यह परंपरागत शासन व्यवस्था अभी भी अनेक मुण्डा इलाकों में प्रभावहीन तरीके से कार्यरत है। ग्राम सभा के पंचायत में किसी भी समस्या का हल सामूहिक निर्णय से ही लिया जाता है। दोषी पाये व्यक्ति को 'डंडे' दण्ड किया जाता है। पड़हा पंचायत का निर्णय सबको मान्य है। इसकी विस्तृत चर्चा पहले अध्याय के सामाजिक, प्रशासनिक व्यवस्था के अन्तर्गत की गई है।

(4) **शिक्षा**–शिक्षा किसी भी समाज, समुदाय, राज्य अथवा देश की बुनियाद होती है। भारतीय संविधान में उल्लिखित भाषायी विकास एवं प्रोत्साहन प्रावधान के आलोक में भारतीय शिक्षा पद्धति को बेहतर बनाने के लिए स्वतंत्रता के 50 वर्षों तक शिक्षा नीति में कई परिवर्तन किये गये। कई समितियों के गठन की अनुशंसा की गयी। शिक्षा में सुधार के लिए सन 1948–1992 तक दस भावी योजना/समिति/नीति/आयोग का गठन हुआ है। जो निम्न है–

1. The University Education Commitee -1948
2. Dr. Mudaluiar Commission For Secondery Education -1952
3. Kothari Education Commission -1964
4. Education Commission -1966
5. NPE -1968
6. The Central Advisory Board of Education (CABE) -1976
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986
8. राष्ट्रीय साक्षरता प्राधिकरण की स्थापना–1988

इन सभी समितियों एवं आयोगों के गठित हाने के बावजूद प्रारम्भिक शिक्षा का साधारणीकरण हमारे देश में एक सपना बना हुआ है। संविधान में

प्रावधान को ध्यान में रखते हुए सन 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा की सार्वजनिकता को उच्च प्राथमिकता दी गई ताकि 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को न्यूनतम आवश्यक शिक्षा प्राप्त हो। इसके लिए प्रखण्ड आधारित अभियान प्रारम्भ हुआ, जिसका नाम ''ब्लैक बोर्ड अभियान'' रखा गया। इसका लक्ष्य प्राथमिक पाठशालाओं के बुनियादी ढाँचे को उन्नत बनाना है। [16]

मातृभाषा को सशक्त बनाने के लिए केन्द्र एवं राज्य में ''त्रिभाषी सूत्र लागू होना चाहिए। इससे अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं स्थानीय भाषा का जुड़ाव होने से भाषायिक समस्या का निदान आसानी से होगा। त्रिभाषी सूत्र के माध्यम से प्राथमिक से उच्चतर स्तर तक पढ़ाई होने से इसकी महत्ता राष्ट्रीय स्तर पर हो सकेगा। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मातृभाषा की विशिष्टताओं को लोगों के समक्ष आसानी से रखा जा सकेगा। इससे भाषायी समृद्धि के साथ ही साक्षरता दर वृद्धि में गति आयेगी।

1982 में रांची विश्वविद्यालय में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खोला गया। विभाग में अभी पांच आदिवासी (हो, मुण्डा, संताली, खड़िया, उरांव) एवं चार क्षेत्रीय भाषाओं (पंचपरगनिया, कुरमाली, नागपुरी, खोरठा) में एम. ए. स्तर की पढ़ाई होती है। महाविद्यालय स्तर पर बाद में इंटर स्तर पर भी इन भाषाओं में शिक्षण शुरू किया गया। लेकिन प्राथमिक स्तर पर अभी भी इन भाषाओं को नहीं पढ़ाया जा रहा है। स्थानीय भाषाओं में शिक्षा देना तो दूर की बात है। हाल ही में राज्य की यूपीए सरकार ने पुलिस, शिक्षक आदि नौकरियों में स्थानीय भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य किया है। राज्य की प्रशासनिक सेवा परीक्षा (जे. पी. एस. सी.) में अब झारखंडी भाषाओं को एक पत्र के रूप में शामिल कर लिया गया है। इससे संभावनाओं के द्वार खुले हैं और भाषाएँ साहित्यिक उपयोगिता से बाहर निकलकर प्रयोजनमूलक होने की दिशा में अग्रसर होने लगी हैं। भारत सरकार ने संताली को संविधान को आठवीं अनुसूची में शामिल कर झारखंडी भाषाओं की महत्ता को संवैधानिक मान्यता दी है। यदि इस ऐतिहासिक कार्य को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही पूरा कर लिया गया होता, तो आज झारखंडी भाषाओं की स्थिति बिल्कुल भिन्न होती।

(5) संचार माध्यम--आज के समय में संचार माध्यमों की उपयोगिता पहले की अपेक्षा कई गुणा बढ़ गई है। अभी के समय को विज्ञापनों का युग कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। समाजशास्त्रियों की माने तो

आज टी.वी चैनल्स, सिनेमा, मोबाइल आदि संचार के विभिन्न माध्यमों में आने वाले विज्ञापन ही हमारे जीवन और समाज की इच्छाओं को, उकसी मानसिकता को नियंत्रित कर रहे हैं। संचार क्रांति के फलस्वरूप अब जीवन का कोई भी क्षेत्र या दुर्गम से दुर्गम भौगोलिक इलाका अछूता नहीं है। मोबाइल के आ जाने से अब हर पल लोग विज्ञापनों की पकड़ में आ गये हैं। पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका तो पहले से ही असंदिग्ध है।

झारखंडी भाषाओं के प्रायोजनिक विस्तार में जन संचार के सभी माध्यमों की भूमिका क्रांतिकारी हो सकती है। लेकिन साधनों के अभाव में समाज इन माध्यमों का उपयोग कर पाने में असमर्थ है। अत: इस ओर सरकारी अथवा निजी घरानों के मदद और उनकी पहलकदमियों की उम्मीद ही की जा सकती है। लेकिन पत्र–पत्रिकाओं को भाषाओं के प्रयोजनमूलक भूमिका में उतारा जा सकता है। परंतु अनुभव यही है कि समय–समय पर प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाएँ सिर्फ जातीय इतिहास, सांस्कृतिक सवालों और साहित्य सृजन तक ही सीमित रही हैं। साहित्य–संस्कृति के अलावा जीवन के विविध विषयों–इतिहास, भूगोल, विज्ञान, कम्प्यूटर, चिकित्सा, अभियांत्रिकी आदि पर पुस्तकें हैं ही नहीं। अब झारखंडी पत्र–पत्रिकाओं को साहित्य संकलन एवं सृजन के अतिरिक्त प्रयोजनमूलक विषयों के लेखन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भाषा के जीवनोपयोगी पक्ष की दृष्टि से झारखंडी भाषाओं का परिदृश्य निराश करने वाला है। इस निराशा के बीच अक्टूबर 2006 से नागपुरी भाषा में शुरू हुई मासिक पत्रिका 'जोहार सहिया' (वंदना टेटे द्वारा प्रकाशित एवं अश्विनी कुमार पंकज द्वारा संपादित) एवं जुलाई 2007 से प्रारंभ किया गया बहुभाषायी पाक्षिक समाचार पत्र 'जोहार दिसुम खबर' (प्रकाशक–संपादक–अश्विनी कुमार पंकज) का उल्लेख जरूरी है। किसी भी झारखंडी भाषा में प्रकाशित 'जोहार सहिया' पहला व्यावसायिक प्रकाशन है, जिससे भाषा के उपयोग के एक नये क्षेत्र का विस्तार हुआ है। इन दोनों का प्रकाशन रांची से शुरू हुआ है।

निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से भाषायी विकास प्रावधान होने के बावजूद केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार ने आदिवासियों की मातृभाषा को प्रोत्साहन देने के लिए कोई नीति, कार्यक्रम एवं कार्ययोजना नहीं बनाई। भाषाएँ कैसे प्रयोजनमूलक बने और वह आम व्यावहार का अनिवार्य हिस्सा हो, इसके लिए सरकारी स्तर पर सोचा ही नहीं गया। इसके

बदले आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को रसातल में ले जाने का उपेक्षापूर्ण रवैया ही अपनाये रखा। इससे न सिर्फ भाषा पर कुप्रभाव पड़ा है बल्कि सम्पूर्ण आदिवासियों के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। साक्षरता दर में कमी लाने एवं आदिवासियों को उनके हक–अधिकार से वंचित रखने के लिए भाषाओं की उपेक्षा को शासक वर्गों ने हथियार बनाया।

डॉ. रामदयाल मुण्डा ने झारखंड की भाषाओं के सामने खड़ी चार चुनौतियों को रेखांकित करते हुए भाषायी चिंताएँ सामने रखी हैं–

1. झारखंडी भाषाओं को संवैधानिक मान्यता दिलाना
2. यहाँ की भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में मान्यता दिलाना,
3. इस क्षेत्र की भाषाओं के मानक रूपों का निर्धारण और विकास,
4. बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करना।

किसी समाज को समूल नष्ट करना है तो उसकी भाषा संस्कृति को समाप्त कर दो। शासक वर्ग की यही नीति रहती है और यही सोच आदिवासियों की भाषा, संस्कृति पर लागू किया जा रहा है। इन सभी कुप्रभावों से बचने के लिए कुछ सुझाव, जो निम्न हैं–

1. संवैधानिक प्रावधान को लागू कराना।
2. वर्त्तमान पद्धति में प्राथमिक, माध्यमिक विद्यालयों में पदस्थापित शिक्षक जो स्थानीय भाषाओं को जानते हैं, उनका सर्वेक्षण करना।
3. पदस्थापित शिक्षक वहाँ की प्रचलित आदिवासी भाषाओं को जानते हैं तो उन्हें वहाँ तत्काल उन भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देना प्रारंभ करना चाहिए।
4. भाषा की जानकारी के आधार पर शिक्षकों को वैसे क्षेत्रों में तबादला किया जाए, जिस भाषा को वे जानते हैं। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें अल्पकालीन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
5. वर्त्तमान विद्यालयों में नये शिक्षकों की नितांत आवश्यकता है। झारखंड में शिक्षितों की कमी नहीं है। अतएव नयी नियुक्तियों में उन शिक्षितों को शामिल किया जाए जो आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की जानकारी रखते हैं।

6. झारखंड क्षेत्र में स्थित सी.बी.एस.ई. तथा आई.सी.एस. ई. बोर्ड के सभी विद्यालयों में आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की पढ़ाई सुनिश्चित की जाए।

7. समाज सुनिश्चित करे कि सभी लोग अपने घरों के सारे क्रिया कलाप अपनी मातृभाषा में ही सम्पन्न करें। जैसे शादी विवाह के रस्म–रिवाज, धार्मिक, सामाजिक बैठकें तथा अन्य अनुष्ठान आदि।

8. समाज सुनिश्चित करे कि उनके क्षेत्रों में जिन पदाधिकारियों की नियुक्ति होती है वे अपने कार्यों को उसी क्षेत्र की स्थानीय भाषाओं में ही सम्पन्न करें। जैसे थानेदार, प्रखण्ड के समस्त अधिकारी, कर्मचारी, अंचल के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी आदि।

9. समाज सुनिश्चित करे कि कोई भी व्यक्ति अपना वाद–विवाद स्थानीय परम्परागत सामाजिक व्यवस्था के तहत निपटारा करे और आवश्यकता पड़ने पर न्यायालयों में जाने पर अपनी अर्जियाँ अथवा बातें या अभिव्यक्तियाँ अपनी मातृभाषा में ही दें। न्यायालय का न्यायाधीश, वकील अथवा अन्य लोग समझे या न समझें। ऐसा करने से न्यायालय विकल्प तलाशेगी।

10. समाज का यह भी दायित्व है कि प्रत्येक समाज अपनी भाषाओं का मानक रूप निर्धारित करें।

11. आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषा को व्यापक रूप में जमीनी स्तर पर पहुँचाने के लिए जरूरी है कि इन कार्यों के क्रियान्वयन में सरकार का सहयोग हो। इसके लिए प्रत्येक क्षेत्र में उपसमिति का गठन किया जाए, समिति में सभी आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित किये जाएं।

12. भाषा और संस्कृति का अन्योन्याश्रय संबंध है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में ही आदिवासी अस्तित्व सुरक्षित है। इसको सुरक्षित एवं संरक्षित रखना हमारा प्रमुख कर्त्तव्य है।

क्षेत्रीय रूपों की तुलना

संसार की सभी भाषाएं परिवर्त्तनशील है। यह परिवर्त्तन उस समुदाय एवं भाषा के भौगोलिक परिवेश, सांस्कृतिक, जातीय, आर्थिक व्यवस्था, लिखित

स्वरूप एवं दैनिक व्यवहार के दृष्टिकोण से प्रभावित होता है, और एक भाषा की कई उपशाखाएं बनती है। झारखंड के संदर्भ में मुण्डारी भाषा इसका ज्वलंत उदाहरण है। मुण्डारी भाषा पर पाश्चात्य, भारतीय एवं मुण्डा समुदाय के विद्वानों ने गहन अध्ययन किया है। फादर जॉन हॉफमैन ने मुण्डारी भाषा की दो उपशाखाओं पर गहन अध्ययन किया है। ये हैं–हसदा: और नगुरी मुण्डारी। डॉ. डी टेरेन्स लेजेन्डेओन, ओहियो स्टेट यूनिर्वसिटी के शोधार्थी ने नगुरी मुण्डारी पर कार्य किया है। [17] फादर हॉफमैन ने मुण्डारी ग्रामर बनायी एवं मुण्डारी भाषा समुदाय की रीढ़ स्तंभ 'इन्साइक्लोपिडिया मुण्डारिका' नामक बृहत शब्दकोश का निर्माण किया। स.अ.वि. दिलवर हंस ने मुण्डारी भाषा को दो भागों में बाँट कर प्रस्तुत किया है–

(1) मुण्डारी भाषा की निकटतम उपशाखाएँ

(2) मुण्डारी भाषा की किंचित दूरस्थ शाखाएँ

दिलवर हंस के अनुसार होड़ो या मुण्डा या संताल, हो या लरका, ये तीन प्रमुख जातियाँ ऐतिहासिक, प्रजातीय दृष्टिकोण से एक हैं। [18] इसका प्रमाण मुण्डारी लोकगीतों में है जो इस तरह है–

(क) मुंडा कोरे हिसि अरंडा, सिंगि दोबु सियु: कमिअ
संता कोरे दुमङ दगड़ि, खनिदा दोबु सुसुन करमअ
(मुंडा दुरङ 416, 504)

मेरालि दो मेरालि सी तला मेरालि
जमबिरा दो जमबिरा गड़ा तला गड़ा जमबिरा
ओको होड़ोए रोअलेदा, सी तला मेरालि
चिमय होड़ोए बिदलेदा, गड़ा तला गड़ा जमबिरा
मुण्डा होन ए रोअ लेदा, सी तला मेरालि
संता होपोन ए बिदलेदा, गड़ तला गड़ा जमबिरा
(मुंडा दुरङ 416, 504)

इस तरह से कई लोक गीत हैं जो मुंडा, संताल और हो लोगों के एकसूत्र में रहने का प्रमाण देते हैं। मुंडा और हो को एक ही माना गया है, इसलिए लोकगीतों में मुंडा और संताल का ही वर्णन मिलता है।

मुण्डारी भाषा की निकटतम उपशाखाएँ

मुण्डारी भाषा की निकटतम उपशाखाओं के संदर्भ में डॉ. बिशप हंस लिखते हैं–राँची चाईबासा मुख्य पथ से पश्चिम क्षेत्र में जो मुण्डारी बोली जाती है वह 'नगुरी मुण्डारी' है। मुख्य पथ से पूरब मध्य क्षेत्र को 'हसद:' कहा जाता है। पाँच परगना क्षेत्र के अन्तर्गत सिल्ली, बुन्डू, राहे, बड़दा, तमाड़ आते है।, इस क्षेत्र में बोली जाने वाली मुण्डारी भाषा को 'तमाड़िया' या 'लतर' मुण्डारी कहा जाता है। राँची सदर के समीपवर्ती क्षेत्रों में बोली जाने वाली मुण्डारी की उपशाखा को 'केर: मुण्डारी' कहा जाता है। [19]

इस भौगोलिक क्षेत्र के दृष्टिकोण से मुण्डारी भाषा की चार निकटतम उपशाखाएँ या क्षेत्रीय रूप हैं। इनमें अर्थ एवं ध्वनि के हिसाब से कितनी समानता और विषमता है, इसका स्पष्ट चित्रण इस प्रकार है–

हिन्दी	हसद:	नगुरी	तमड़िया	केर:
नदी	गड़ा	नइ/नाइ	गडा	गडा
मच्छली	हाइ	हाकु	हाइ	हाकु
चट्टान	सेरेञ	सेरेञ	सेरेङ	मरङ दिरि
सूरज	सिंगि	सिंगि	सिंगि	सिंगि
चाँद	चंडु	चंडु	चण्डु	चण्डु
आकाश	रिम्बिल	सिरमा	रिम्बिल	बदरि, सिरमा
रोटी	लद	होलोञ/जद	लाद	पिटा
रोना	रअ	राअ	राअ/इआम	इयम
दरवाजा	दुवर	दुवर	दुवर	दुरा
और	ओड़ो	ओड़ो:/हडो	ओड़ो	हडो
जमीन	ओते	ओते	ओते	ओते
खेलना	इनुञ	इनुङ	इनुञ	एने
धान	बबा	बबा	बबा	हुडु
धूप	जेटे	सितुङ	जेटे	सितुम

चटाइ	पटि	जटि	जटि	नटि
पानी	दः	दः	दाः	दः
लकड़ी	सान	सहान	सान	सान
पेड़	दारू	दारू	दारू	दारू
सिर	बोः	बो/बोहो	बोः	बोहो
आना	हिजु	हिजु	हिजु	हिजोम
सोना	गिति	गिति	गिति	दुडुम/गिति
नहाना	डेबेल	उमेन	रेआड़ा	उम
चलना	सेन	सेन	सेन	सेन
देखाना	लेल	नेल	लेल	लेल
आम	उलि	उलि	उलि	उल
इमली	जोजो	जोजो	जोजो	जोजो
पाना	नम	नम	नम	नम
तालाब	बंदाः	पोखरा	बंदाः	पोखइर/पोकइर
मैं	अइञ	अइञ	अइञ	अइञ
तुम	अम	अम	अम	अम
वह	इनि	इनि	इनि	इनि
रोटी	लद्	होलोङ	लद्	पिटा/होलोङ
दुध	तोवा	तोवा	तोवा	तोवा
दामाद	अरा	दमाद	अराः	दमाद/अरा
उठना	बिरिद्	बिरिद	बिरिद	बिरिद
बैठना	दुब	दुब	दुब	दुम्

डॉ. रामदयाल मुण्डा ने हसदः मुण्डारी के लिए 'तल (मध्य) मुण्डारी', नगुरी मुण्डारी के लिए 'चेतन् (ऊपरी–पश्चिम) मुण्डारी' और तमड़िया मुण्डारी के लिए 'लतर् (नीचली–पूरब) मुण्डारी' का नया नाम दिया है। 'केरः मुण्डारी' को वे चेतन् मुण्डारी का ही विस्तार मानते हैं। [20]

1. तल मुण्डारी (हसदः मुण्डारी)

मुण्डारी भाषा का यह रूप खूँटी जिला के मुण्डा लोग प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला–खरसावां के कुछ इलाकों में भी तल मुण्डारी प्रचलन में है। मुख्यतः ये वैसे इलाके हैं, जहाँ बाहरी आबादी का हस्तक्षेप नहीं हो पाया। घने वन और पर्वतों के कारण यह इलाका दुर्गम था। इसलिए इन क्षेत्रों में लोगों का आव्रजन नहीं हो पाया। इसी वजह से इधर के मुण्डाओं के भाषा में मौलिकता एवं शुद्धता बनी रही। इन क्षेत्रों में अभी भी कई गाँव ऐसे हैं, जो खाँटी मुण्डारी के अलावा दूसरी कोई भाषा नहीं जानते। जो एक–दो घर दूसरी जातियों के हैं, वे भी मुण्डारी ही बोलते हैं।

2. चेतन् मुण्डारी (नगुरी मुण्डारी)

झारखंड राज्य की सम्पर्क भाषा नागपुरी का मुण्डारी पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। जो मुण्डारी गाँव–क्षेत्र नागपुरी भाषी सदान जातियों की आबादी से सटे थे, उसमें यह प्रभाव स्पष्टतः दिखायी देता है। नागपुरी प्रभाव के कारण ही इसे 'नगुरी (चेतन्) मुण्डारी' कहा जाता है। इसका प्रभाव क्षेत्र मुख्यतः रांची, खूँटी, सिमडेगा जिलों के कर्रा, लापुंग, रनिया, बानो, कोलेबिरा, सिमडेगा तथा उड़ीसा राज्य का बिरमित्रापुर, सुंदरगढ़, राउरकेला आदि है।

3. लतर् मुण्डारी (तमड़िया मुण्डारी)

लतर् मुण्डारी का क्षेत्र मुख्यतः पांचपरगना का बुण्डू–तमाड़ क्षेत्र है। तमाड़ क्षेत्र के नाम के कारण ही उधर के मुण्डाओं की बोली को तमड़िया मुण्डारी कहा गया। बुण्डू, तमाड़, अड़की, सोनाहातु और सिल्ली तक इस मुण्डारी रूप का विस्तार है। झारखंड का यह क्षेत्र पश्चिम बंगाल की सीमा पर है। इसीलिए यहाँ की मुण्डारी पर बंगला, पंचपरगनिया, कुरमाली भाषाओं का प्रभाव है। इन्हीं भाषाओं के सम्पर्क से मूल मुण्डारी भाषा में जो बदलाव आए, उसी से इसे लतर् मुण्डारी कहा गया।

4. केरः मुण्डारी

मुण्डारी भाषा के इस क्षेत्रीय रूप का जन्म 'कुड़ुख' एवं 'नागपुरी' भाषा के संसर्ग से हुआ है। केरः मुण्डारी मुख्यतः रांची के आसपास के इलाकों में बोली जाती है। केरः मुण्डारी का व्यवहार सर्वाधिक उरांव लोगों के द्वारा किया जाता है, जो कि नृवंशीय आधार पर आस्ट्रोलॉयड (मुण्डा नस्ल) ही हैं, लेकिन

भाषा परिवार के आधार पर द्रविड़ भाषा कुल के सदस्य हैं और इनकी मूल मातृभाषा 'कुड़ुख' है। ऐसा कहा जाता है कि जब उरांव लोग झारखंड आए तो मुण्डाओं ने उन्हें अपने इलाके में बसने दिया। इसीलिए कालांतर में मुण्डाओं के साथ–साथ रहने से उरांव लोग मुण्डारी बोलने लगे, अपनी मातृभाषा कुड़ुख भूल गये। जो उरांव लोग मुण्डाओं से इतर दूसरे इलाकों में बसे वे अपनी भाषा नहीं भूले। रांची (सुतिआम्बे एवं चुटिया) में नागवंश की राजधानी होने से केर: मुण्डारी पर नागपुरी का भी प्रभाव पड़ा।

केर: मुण्डारी की शब्द संपदा मुण्डारी की ही है लेकिन इसका उच्चारण 'कुड़ुख' की तरह होता है। केर: मुण्डारी में चूँकि 'र:' ध्वनि का उच्चारण ज्यादा किया जाता है इसलिए भी इसे केर: मुण्डारी कहते हैं।

मुण्डारी भाषा की किंचित दूरस्थ शाखाएँ

इसके अन्तर्गत वे समुदाय हैं जो भौगोलिक क्षेत्र विस्तार के आधार पर विभाजित हैं और मुण्डारी वर्ग की भाषाएँ बोलते हैं। ये सभी ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के अंतर्गत आते हैं और इनकी भाषाएँ मुण्डारी वर्ग में मानी जाती है। इनमें से खड़िया, हो, संताली एवं करमाली (कुरमाली) झारखंड में मुण्डा भाषा की ही तरह स्वतंत्र भाषाओं के रूप में राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। संताली को तो आठवीं अनुसूची में भी शामिल कर लिया गया है। इन्हें मुण्डारी भाषा की दूरस्थ भाषा वर्ग में रखा जा सकता है। ऐसे मुख्य समुदाय एवं उनकी भाषा इस प्रकार है–

1. बिरहोड़/बिरहोर

बिरहोड़ एक घुमक्कड़ जनजाति है जो राँची, हजारीबाग और सिंहभूम जिलों में निवास करते हैं। ये झारखंड के जंगलों एवं पहाड़ों पर घूमंतु जीवन जीते हैं और कहीं–कहीं स्थिर रूप से भी बस गये हैं। उनका परम्परागत धन्धा वृक्षों के रेशे से रस्सी बनाना एवं इस तरह के अन्य काम करके जीवनयापन करना है। बिरहोर जनजाति की बोली बिरहोरी कहलाती है जो मुण्डारी से मिलती हुई भाषा है और यह ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है। भ्रमणकारी प्रवृति होने के कारण कहीं ये मिश्रित बिरहोरी का भी प्रयोग करते हैं। मुण्डारी और बिरहोरी शब्दों की समानता और विषमता का उदाहरण निम्न है–

हिन्दी	मुण्डारी	बिरहोरी
उनके पास	इनकुतअ/अकोतअ	आकूठिन
अंधा/काना	जला	आँधाड़ा
लाना	आगु	आगु
हमलोगों का	अबुआ	आबूनआ
बाल	उब	उप
कौन	ओकोए	ओकय
जमीन	ओते	ओते
खेलना	इनुङ	ओचअ
पैर	कटा	काटा
कौआ	काउ	काहूँअ
केकड़ा	कड़कोम	काड़ेकम
लड़की	कुड़ि होन	कुड़ो हपन
बात	जगर	गापाम
मच्छली	हाई	हाकू
चट्टान	सेरेंग	सेरेंग
सूरज	सिंगि	सिंगबोंगा
आकाश	रिम्बिल	रोबोल
गुस्सा होना	कचरा	राग
रोना	राअ:	याम
अकेला	एसकर	यासकार
रखना	दो	दोहो
दरवाजा	दुवर	दुवारटाटो[1]

2. कोरवा–कोरवा मुण्डारी की उपबोली है जो कोरवा समुदाय के बोलचाल की भाषा तक सीमित है। यह जाति जंगली कंद–मूलों पर निर्भर रहते हुए झूम खेती करती है जिसे 'बेयोरा' खेती कहते हैं। जीविकोपार्जन के लिए

ये लकड़ी का सामान जैसे–हल, जुआठ, कठोला, पीढ़ा, रस्सी आदि बनाकर नजदीक के बाजारों में बेचते हैं। इनका निवास क्षेत्र झारखंड के पलामू, हजारीबाग, मध्यप्रदेश के जशपुर, सुरगुजा तथा उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले का दक्षिणी भाग है। आग्नेय कुल की कोरवा भाषा की उत्पति भी मुण्डारी भाषा से हुई है। मुण्डारी भाषा से उत्पन्न कोरवा भाषा की किंचित समानता एवं विषमताओं से संबंधित कुछ शब्दों के उदाहरण निम्न हैं–

हिन्दी	**मुण्डारी**	**कोरवा**
आदमी	होड़ो	होड़
धान	बबा	हुडू
धूप	जेटे	सेतोंग
मीठा	हेड़ेम	सुड़ी
चटाई	पटि/जटि	दोनो सेरमा
मुर्गी	सिम	सिमु
लकड़ी	सान	साहान
हिरण	सिलिब	सारामु
दूर	संगिन	सागियु
तीर	सार	सदा
बादल	लारि	लिबीरू
खोदना	उर	लाइयु
पेड़	दारू	रूखु
आना	हिजु	मेजुः
सिर	बो	मोअ
पाना	नम	नामु
पानी	दाअ/दाः	दाआ
खाना	जोम	जोमु
जमीन	ओते	ओतेतू [21]

3. भूमिज–भूमिज मुण्डारी की एक उपबोली है। रिजले ने भी कहा है–भूमिज मुण्डा की ही शाखा है जो दक्षिण की ओर फैल गई। इनका फैलाव पश्चिम बंगाल एवं उड़ीसा में है। सिंहभूम में इनकी संख्या अधिक है। बंगला प्रभावित क्षेत्रों में रहने के कारण इन समुदाय के लोग भी बांग्ला बोलते हैं। फिर भी अपनी मातृभाषा को सुरक्षित रखे हुए हैं। भूमिज भाषा मुण्डारी के सादृश्य है जो ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है। मुण्डारी और भूमिज शब्दों के कुछ उदाहरण निम्न है–

हिन्दी	**मुण्डारी**	**भूमिज**
नाम	नुतुम/लुतुम	नुमु
क्या	चना/कना	चियाः
कितना	चिमनुङ/चिमिनुङ	चिमाः
काम	कमि	पाइटिज्
आराम	रूडु	जिरा
एक	मिअद/मायोन	मुजाद
तालाब	बादः	पुकुरि
दुध	तोवा	तोआज्
भूत	बोंगा	बंगा
आनंद	रसिका	रास्का
रोटी	लद	रूटि
मैं	अइञ	ईञः
मेरा	अइञा	ईञाः
महिना	चडु	चाँडुब [22]

4. खड़िया–मुण्डा कुल की समुदाय या भाषाओं में खड़िया समुदाय और भाषा महत्वपूर्ण है। खड़िया की तीन शाखाएँ हैं–(क) पहाड़ी, (ख) दूध और (ग) ढेलकी खड़िया। इन लोगों का विस्तार उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, अंडमान के अलावे झारखंड के सिमडेगा, गुमला, राँची आदि में मौजूद है। खड़िया बोली ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है। मुण्डारी और खड़िया शब्दों के कुछ उदाहरण निम्न है–

हिन्दी	मुण्डारी	खड़िया
बुद्धि	सेंड़ा	अकिल
पिता	अबा	आपा/आबा
तुम/आप	आम	आम
तुमलोग/आपलोग	अपे	आमपे
तुम दोनों	अबेन	अमबर
चलना	सेन	चोल
रोटी	लद	कोलोङ
भूलना	रिड़िञ	इरिबना
मैं	अइञ	ईञ
गीत	दुरङ	आलोंग
दामाद	अरा	आराम
यह	नेआ	उकड़
जमीन	ओते	उसलोऽ
यहाँ	नेना:	उते
नहाना	डेबेल	उवाऽना
घर/मकान	ओड़ा:	ओऽ
हमलोग	अले	एले
सुनना	अयुम	ओंडोरना [23]

5. कोडा/कोड़ा–ये जातियाँ एक स्थान पर स्थिर न रहने के कारण जिन क्षेत्रों में बसी, उसी क्षेत्र की बोली को अपनाकर अपना अस्त्वि खोते जा रहे हैं। मध्यप्रदेश में बसे कोड़ा जाति कुडुख भाषा का भी प्रयोग करती है। सिंहभूम, दालभूम, मानभूम, बिरभूम, बंकुड़ा, दामोदर और बराकर नदियों के बीच इनका निवास स्थान है। कुछ लोग बंगाल और मध्यप्रदेश में भी हैं। सम्पर्क भाषाओं से प्रभावित होने के बावजूद मुण्डारी भाषा का ही व्यवहार करते हैं। इनकी भाषा कोड़ा और मुण्डारी में अन्तर नहीं है। [24]

हिन्दी	मुण्डारी	कोड़ा
पाना	नम	नम
कितना	चिमिन/चिमिनुञ	चिमिन
चार	उपुनिअ	उपुनिअ
उठना	बिरिद	बिरिद
हमलोग	अबु	अबु
देखना	लेल	लेल
बैठना	दुब	दुब
वे दोनों	इनकिन	इनकिन
छोटावाला	हुडिञ नि	हुडिञ नि
पीटना	दल	दल

6. कुड़कु/कोरकु–मुण्डा उपशाखा में कुडकु/कोरकु भी एक है। इनका निवास स्थान सतपुरा और महादेव घाटी–पर्वतों के समीपवर्ती क्षेत्रों में है। साथ ही होशंगाबाद के राजा बोरारी और कलिभित के वन पर्वत्तों एवं बेतुल जिला के कुछ भागों में फैले हुए हैं। इनकी भाषा मुण्डारी है किन्तु मूल मुण्डारी से थोड़ी अलग मिलती है। उदाहरण–

हिन्दी	मुण्डारी	कुड़कु
मैं	अइञ	इयाँ
नाम	नुतुम/लुतुम	जोजो
और	ओड़ो	डी
जन्म	जोनोम	पेड़ाअकन
वह	इनि	दि
गायब	अद जना	अदजनदन
रोटी	लद	आटा
दो	बर	बरि
उतना	इमिनङ	तरहा [25]

7. करमालि–मुण्डा और संतालों की या होड़ो और होड़ मूल से निकली हुई जाति करमालि है। ये संताल परगना, हजारीबाग और मानभूम जिलों में अधिक निवास करते हैं। ये लोहा से बनने वाले वस्तुओं का निर्माण करते हैं तथा अपने को होड़ मानते हैं। इनकी भाषा मूल मुण्डारी भाषा से थोड़ी अलग है। करमलि में शब्द के अन्त में 'र' वर्ण की अधिकता मिलती है। उदाहरण प्रस्तुत है–

हिन्दी	**मुण्डारी**	**करमाली**
आदमी	होड़ो	होर
वापस	रूअड़	लुअर [26]

8. तुरि–मुण्डा कुल की उपशाखा तुरि जाति जशपुर, संबलपुर जगहों में निवास करती है। झारखंड में भी इनका अधिवास है। यह जाति मुख्य रूप से बाँस से निर्मित वस्तुओं को बनाने का कार्य करती है। इनकी बोली मुण्डा, हो, असुर और संताली की मिश्रित भाषा जैसी है। [27] मुण्डा क्षेत्र में रहने वाले तुरि जाति मुण्डारी भाषा ही दैनिक जीवन में व्यवहार करते हैं।

9. असुर–असुर इतिहास प्रसिद्ध जाति है। प्राचीन काल में बाजू ताकत के बल पर लोहा गलाने का कुशल कार्य व अनुभव इनके पास था। सम्पूर्ण छोटानागपुर में इनका दबदबा था। बल, बुद्धि के द्वारा अपने को श्रेष्ठ मानते थे। इनके द्वारा निर्मित मठ और तालाब के अवशेष वर्त्तमान में भी मिलते हैं। ये लोहा गलाने में काफी निपुण थे। लकड़ी से कोयला बनाना और फिर लौहशोधन करना इनका प्रमुख कार्य था। वर्त्तमान में इनकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है। ये मुण्डारी भाषा बोलते हैं। मुण्डारी और असुरी भाषा में शब्दों की समानता अधिक मिलती है। असुरी ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है, जो संताली एवं मुण्डारी के निकट है।

हिन्दी	**मुण्डारी**	**असुरी**
लेना	इदि	इइदि
सुनना	आयुम	आआयुम
मैं	अइञ	ईञ
कितना	चिमिन/चिमिङ	उकीन

भूमि	ओते	ओत्
पैर	कटा	जंगा
फेंकना	गिड़ि	गिगिड़ी
कपड़ा	लिजा/किचिरि	गेंदराअ
मांस	जिलु	कोकोओ [28]

10. जुआङ– मुण्डारी भाषा वर्ग की यह भाषा खड़िया से अधिक निकट है। इनका फैलाव उड़ीसा के क्योंझर, मयूरभंज, ढेंकानल आदि क्षेत्रों में है। इन क्षेत्रों में स्थानीय भाषा हावी होने के कारण जुआङ जाति भी उड़िया भाषा का प्रयोग करती है। बहुत सारे उड़िया शब्द जुआङ में समा गये हैं। फिर भी अपनी मातृभाषा को नहीं भूले हैं। भाषा वैज्ञानिकों एवं समुदाय के लोगों की प्रचलित भाषा को व्यवहार में लाने वाले लोगों का मानना है कि खड़िया और जुआङ भाषा की समानता अधिक है। [29]

हिन्दी	**मुण्डारी**	**जुआङ**
कौन	ओकोए	अड़ि
क्या	चना/चिना	बिरि

11. सबरा–सबरा जाति मूल मुण्डारी भाषा बोलने वाले स्थान से दूर दक्षिण दिशा में निवास करती है। रामायण काल में सबरी नामक स्त्री ने रामचन्द्र की सेवा अवभगत की थी। तुलसीदास ने रामायण में इसका वर्णन प्रस्तुत किया है। इस समुदाय का विस्तार मद्रास, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल के कई जिलों में है। इनकी भाषा मुण्डारी है पर जुआङ और खड़िया से अधिक निकट है। आर्य भाषाओं के सम्पर्क में आकर अपनी मातृभाषा को भूलते जा रहे हैं। फिर भी अपनी भाषा संस्कृति के अस्तित्व को बचाए हुए हैं। इनकी बोली के कुछ शब्द इस तरह हैं [30]–

हिन्दी	**मुण्डारी**	**सबरा**
मैं	अइञ	ङेन
मेरा	अइञा	ङेना
हमलोग	अले	एलेन

हमलोगों का	अलेअ	एलेना
तुम	अम	अमन
तुम्हारा	अमअः	अमना
वह	इनि	अनिन
उसका	इनिअ	अनिना
वे लोग	इनुक	अनिनजि

12. गदाबा–मुण्डारी भाषा की एक शाखा है। इनका निवास स्थान मद्रास के विजांगपटनम और गंजाम स्थानों में है। कुछ लोग मध्यप्रदेश के बस्तर और उड़ीसा के कालाहांडी स्थानों में भी रहते हैं। इनके बोली के कुछ उदाहरण निम्न हैं [31]–

हिन्दी	**मुण्डारी**	**गदाबा**
पिता	अपु	अपोङ
पिताजी	अपु को	लोंगा अपोङ
मैं	अइञ	निङ/नी
तुम	अम	नोम
मेरा	अइआः	निङनो
तुम्हारा	अमअः	नोमनो
तुम लोग	अपे	पेन/पेनचा
तुम लोगो का	अपेअ	पेनु/पइनु
वह	इनि	मए
उसका	इनिअ	मएनो
वे लोग	इनकु	मएनेन/मएनेङ
उन लोगों का	इनकुअ	मए एननग

13. हो–मुख्यतः सिंहभूम जिला में निवास करते हैं। इसके अतिरिक्त ये उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ में भी मौजूद हैं। हो, मुण्डा जाति का ही उपशाखा है। इनकी भाषा 'हो' है जो मुंडारी (ऑस्ट्रिक) परिवार का है। हो

भाषा में लघुता होती है। उच्चारण की दृष्टि से इसे मुख सुख की श्रेणी में रख सकते हैं। हो और मुण्डारी भाषा में अत्याधिक समानता है। उदाहरण देखें [32]–

हिन्दी	**मुण्डारी**	**हो**
देखना	लेल	लेल
गाय	उरि	उरि
घर	ओड़ा	ओअः
सोना	दुडुम	दुम
पैर	कटा	कटा
आदमी	होड़ो	हो
आँख	मेद्	मेड्
रोटी	लद्	लड
ठगना	होसोड़	लबु
आसान	रबल	लबर
भूलना	रिड़िञ	रिंग
ताकत	पेड़े	पेह
खाना	जोम	जोम
पुआल	बुसु	कुटा
और	ओड़ो	अंडो
खोना	अद्	अड
नहाना	डेबेल	ओड़ा
खेल	इनुञ	उनुग
पक्षी	चेड़े	ओय
बाल	उब	उब

14. संताल–ऑस्ट्रिक भाषा की सबसे बड़ी समुदाय एवं मुण्डारी भाषा की सहोदर संताली बृहत क्षेत्र में बोली जाती है। संख्या की दृष्टि से एवं क्षेत्र विस्तार दोनों से ही इनका विस्तार झारखंड के अलावे बिहार, पं. बंगाल,

उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और असम राज्यों में है। प्रजातीय दृष्टि से संताल को प्रोटो ऑस्ट्रोलॉयड श्रेणी में रखा गया है। भाषिक दृष्टि से इसका ऑस्ट्रोएशियाटिक शाखा के मुण्डा कुल से संबंध है। संताली भाषा को विकास के चरम स्थिति तक पहुँचाने के समुदाय के सभी लोगों का हाथ रहा है। नतीजा है कि भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में संताली भाषा का नाम दर्ज हो पाया है। मुण्डारी और संताली भाषा में काफी समानता है।

हिन्दी	**मुण्डारी**	**संताली**
आदमी	होड़ो	होड़
पिता	अपु	बाबा
मैं	अइञ	इञ
तुम	अम	आम
गाय	उरि	गाई/गा़य
घर	ओड़ा:	ओड़ाक
रोटी	लद्	पिठा
आँख	मेद्	मेद्/मेत्
ठगना	होसोड़	एड़े
भूलना	रिड़िङ	हिड़िङ
और	ओड़ो	आर
खेल	इनुञ	खेलोड
बाल	उब	उप्
नहाना	डेबेल	उमु [33]

निष्कर्ष

भाषा वैज्ञानिक के अनुसार भारत के पास 600 से अधिक भाषाएं और पांच हजार से अधिक बोलियों की समृद्धशाली विरासत है। इनमें कुछ का व्याकरण है और वे दैनिक उपयोग में काम ली जाती हैं। कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जिनका व्याकरण तो है, पर वे आज सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान की भाषा बन कर रह गई हैं। परंतु अधिकांश भाषाओं का न तो अध्ययन हो पाया है और ना ही

उनका व्याकरण बनाया जा सका है। इन भाषाओं का मानकीकरण भी नहीं हुआ है।

झारखंड की अधिकांश भाषाओं के पास अपना व्याकरण है, वे दैनिक उपयोग में भी ली जाती हैं लेकिन संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद उन्हें उनके हक से वंचित रखा गया है। राज्य गठन के आठ वर्षों बाद भी आदिवासी एवं जनजातीय भाषाओं के संरक्षण तथा विकास के लिए कोई स्पष्ट भाषा नीति नहीं बनी है। मुण्डारी भाषा उनमें से एक है। संताली को छोड़कर मुण्डारी समेत सभी आदिवासी भाषाओं को झारखंड में राजभाषा का दर्जा दिया जाना चाहिए। उन्हें राजकाज की भाषा बनाये जाने की आवश्यकता है।

भाषा चूँकि संस्कृति का अंग है, इसलिए समाज परिवर्तन के साथ–साथ उसमें भी बदलाव होता है। भाषाओं में उतार–चढ़ाव होता रहा है। इस परिवर्तनशीलता के कई कारक हैं। भाषाविदों ने भाषा परिवर्तन को दो वर्गों में विभाजित किया है। आंतरिक एवं बाह्य कारक। इसके अनुसार परिवर्तन के कुछ कारण तो स्वयं भाषा के भीतर रहते हैं जबकि कुछ बाहरी कारक भी भाषा को परिवर्तित करने में भूमिका निभाते हैं।

मुण्डारी भाषा में भी इसी परिवर्तनशीलता के कारण क्षेत्रीय रूपों का विकास हुआ है। क्षेत्र विस्तार तथा भिन्न समुदायों एवं भाषाओं के सम्पर्क से मुण्डारी के क्षेत्रीय रूप अस्तित्व में आये हैं। स.अ.वि. दिलवर हंस ने मुण्डारी भाषा को दो भागों में बाँट कर प्रस्तुत किया है–

(1) मुण्डारी भाषा की निकटतम उपशाखाएँ

(2) मुण्डारी भाषा की किंचित दूरस्थ शाखाएँ

1. मुण्डारी भाषा की निकटतम उपशाखाओं में चार क्षेत्रीय रूप मिलते हैं–

1. तल मुण्डारी (हसद: मुण्डारी)
2. चेतन् मुण्डारी (नगुरी मुण्डारी)
3. लतर् मुण्डारी (तमड़िया मुण्डारी)
4. केर: मुण्डारी

2. दूरस्थ शाखाओं के अन्तर्गत वे भाषाएँ आती हैं जो भौगोलिक क्षेत्र विस्तार के आधार पर विभाजित हैं। मुख्य रूप से इनमें 1. बिरहोड़, 2. कोरवा, 3. भूमिज, 4. खड़िया, 5. कोडा/कोड़ा, 6. कुड़कु/कोरकु, 7. करमलि, 8. तुरि, 9. असुर, 10. जुअङ, 11. सबरा, 12. गदाबा, 13. हो और 14. संताल समुदायों की भाषाएँ शामिल हैं। ये सभी ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के अंतर्गत आते हैं और इनकी भाषाएँ मुण्डारी वर्ग में मानी जाती है।

मातृभाषा को सशक्त बनाने के लिए राज्य में त्रिभाषी सूत्र लागू होना चाहिए था लेकिन अभी तक ऐसा नहीं किया जा सका है। 1982 में रांची विश्वविद्यालय में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खुला जहाँ एम. ए. स्तर की पढ़ाई होती है। महाविद्यालयों में भी अब इंटर स्तर पर इन भाषाओं में शिक्षण दिया जा रहा है। परंतु प्राथमिक स्तर पर मुण्डा आदि अन्य भाषाओं में शिक्षण प्रारंभ नहीं किया जा सका है। पुलिस, शिक्षक आदि नौकरियों में तथा राज्य की प्रशासनिक सेवा परीक्षा (जे. पी. एस. सी.) में अब झारखंडी भाषाओं को शामिल करना एक उत्साहजनक कदम है। इससे आदिवासी भाषाएँ साहित्यिक उपयोगिता से बाहर निकलकर प्रयोजनमूलक होने की दिशा में अग्रसर होने लगी हैं।

न्यायपालिका, प्रशासन, शिक्षा एवं जनसंचार में समुचित स्थान मिलने तथा उनके अधिकाधिक उपयोग से भाषा की प्रयोजनमूलकता में तीव्रता से विस्तार होगा। लेकिन अभी तक सरकार की ओर से ऐसे प्रयास नहीं किये गये हैं। प्रयोजनमूलक उपयोग की दिशा में सरकार से पहल की अपेक्षा है। न्यायालय, प्रशासन एवं शिक्षा क्षेत्रों में आदिवासी भाषाओं के व्यावहारिक प्रयोग से मुण्डारी भाषा की स्थिति सुदृढ़ होगी। मुण्डारी नये युग की वैश्विक जरूरतों के मुताबिक ढल सकेगी और भारत की भाषायी एकता कायम करने की दिशा में मजबूत कड़ी साबित होगी। जातीय संघर्ष एवं तनावों को दूर किया जा सकेगा।

संदर्भ

1. रामविलास शर्मा–भारत की भाषा समस्या, पृष्ठ 3/8
2. डॉ. कर्ण सिंह–भाषा विज्ञान, पृष्ठ 49
3. डॉ. रामदयाल मुण्डा–मुण्डारी व्याकरण, पृष्ठ
4. जगदीश त्रिगुणायत–बाँसरी बज रही, पृष्ठ 13
5. वंदना टेटे–इक दिन मिट जाएंगे प्यारे तेरे बोल, दैनिक जागरण, रांची
6. वंदना टेटे–इक दिन मिट जाएंगे प्यारे तेरे बोल, दैनिक जागरण, रांची, अंक–15 फरवरी 2008
7. डॉ. विसेशवर प्रसाद केशरी–झारखंडी भाषाओं की समस्याएँ और संभावनाएँ, पृष्ठ 1
8. अभिषेक कृष्ण–लोकतंत्र चाहिए तो मातृभाषाओं को बचाइए, दैनिक जागरण, रांची, अंक–15 फरवरी 2008
9. अभिषेक कृष्ण–लोकतंत्र चाहिए तो मातृभाषाओं को बचाइए, दैनिक जागरण, रांची, अंक–15 फरवरी 2008
10. देवेन्द्र शर्मा, दीप्ति शर्मा–भाषा विज्ञान की भूमिका, पृष्ठ 77
11. डॉ. कर्ण सिंह–भाषा विज्ञान, पृष्ठ 45
12. डॉ. रामदयाल मुण्डा–मुण्डारी व्याकरण, भूमिका पाठ, पृष्ठ ख
13. मुण्डारी गीतकार बुदु बाबू और उनकी रचनाएँ, प्रीतपाला और रामायण पाला (अनुवादक–संपादक: डॉ. रामदयाल मुण्डा)
14. देवेन्द्र शर्मा, दीप्ति शर्मा–भाषा विज्ञान की भूमिका, पृष्ठ 58
15. डॉ. बी. पी. केशरी, छोटानागपुर का इतिहास, कुछ सूत्र कुछ सन्दर्भ, पृष्ठ–85
16. स्मारिका, झारखण्डी भाषा साहित्य परिषद, पृष्ठ 12, वर्ष–1997
17. एन. के. सिन्हा–मुण्डारी ग्रामर, पृष्ठ 3
18. बिशप दिलवर हंस–होड़ो जगर रेअ एतेहइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब, पृष्ठ 10
19. बिशप दिलवर हंस–होड़ो जगर रेअ एतेहइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब, पृष्ठ 16
20. डॉ. रामदयाल मुण्डा–मुण्डारी व्याकरण, भूमिका पाठ, पृष्ठ ख
21. स्वर्णलता प्रसाद, बिरहोर वार्तालाप निर्देशिका
22. स्वर्णलता प्रसाद, कोरबा वार्तालाप निर्देशिका
23. स्वर्णलता प्रसाद, भूमिज वार्तालाप निर्देशिका
24. स्वर्णलता प्रसाद, खड़िया वार्तालाप निर्देशिका
25. स. अ. बि. दि. हंस, 'होड़ो जगर रेअ एते: हइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब' पृष्ठ संख्या 18
26. स. अ. बि. दि. हंस, 'होड़ो जगर रेअ एते:हइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब' पृष्ठ संख्या 19

27. स. अ. बि. दि. हंस, 'होड़ो जगर रेअ एते:हइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब' पृष्ठ संख्या 19
28. स्वर्णलता प्रसाद, असुरी वार्तालाप निर्देशिका
29. स. अ. बि. दि. हंस, 'होड़ो जगर रेअ एते: हइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब' पृष्ठ संख्या 21
30. वही–पृष्ठ 22
31. स. अ. बि. दि. हंस, 'होड़ो जगर रेअ एते: हइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब' पृष्ठ संख्या 23
32. साक्षात्कार–डॉ. भुवनेश्वर सवैया (हो भाषी)
33. साक्षात्कार–डॉ. धनेश्वर मांझी (संताली भाषी)

द्वितीय अध्याय

भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की भाषिक संरचना

भाषा विज्ञान की दृष्टि से झारखंड के आदिवासी भाषाओं का समग्र अध्ययन अभी तक नहीं हो पाया है। हालाँकि औपनिवेशिक शासन काल से लेकर अब तक इनके अध्ययन का क्रम जारी है फिर भी मुण्डारी सहित सभी भाषाओं के विविध पक्षों एवं आयामों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया जाना शेष है। अभी तक प्रत्येक आदिवासी भाषा के मूल रूपों पर ही विचार हो सका है उनके क्षेत्रीय रूपों अथवा उपशाखाओं पर विद्वानों का बहुत अधिक ध्यान नहीं जा पाया है। इसीलिए मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों पर भी विस्तृत एवं स्वतंत्र भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का अभाव है।

मुण्डारी भाषा के चार क्षेत्रीय रूप या उपशाखाएँ हैं, हसद:, नगुरी, केर: एवं तमड़िया। चारों रूपों के भौगोलिक क्षेत्र हैं। राँची शहर के आसपास केर: मुण्डारी बोली जाती है, जो उराँव व मुण्डा समुदायों के बीच प्रचलित है। हसद: मुण्डारी वर्त्तमान खूँटी जिला के अन्तर्गत मुरहू प्रखण्ड, अड़की प्रखण्ड के पश्चिमी दक्षिणी भाग एवं सिंहभूम जिला के बंदगाँव प्रखण्ड के मध्य क्षेत्रों में बोली जाती है। अड़की प्रखण्ड का पूर्वी भाग तमाड़, बुन्डू, राहे, सोनाहातु प्रखण्ड के क्षेत्रों में तमड़िया मुण्डारी या लतर मुण्डारी का व्यवहार होता है। इन क्षेत्रों में पंचपरगनिया व बांग्ला मिश्रित बोली का प्रचलन है। नगुरी खूँटी जिला से पश्चिम की ओर बोली जाती है।

मुण्डारी के क्षेत्रेय रूपों की भाषिक संरचना

किसी भाषा की भाषिक संरचना का अध्ययन करने के लिए भाषा विज्ञान के सभी पहलुओं अथवा शाखाओं का अध्ययन आवश्यक है। इसके अन्तर्गत निम्न शाखाएँ हैं–

(1) वर्णनात्मक भाषा विज्ञान

(2) ऐतिहासिक भाषा विज्ञान

(3) तुलनात्मक भाषा विज्ञान

(4) सामाजिक–सांस्कृतिक भाषा विज्ञान

किसी भी भाषा की भाषिक संरचना को समझने के लिए भाषा विज्ञान के अंग जिनमें ध्वनि, रूप, पद, वाक्य, अर्थ, कोश आदि होते हैं, के आधार पर उसे देखने की आवश्यकता है। इस अध्याय में हम मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों–हसद:, नगुरी, केर: और तमड़िया की भाषिक संरचनाओं को भाषा विज्ञान की उपरोक्त सभी शाखाओं–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, सामाजिक सांस्कृतिक भाषा विज्ञान के आधार पर अध्ययन करेंगे।

1. वर्णनात्मक भाषा विज्ञान

भाषा के काल विशेष के स्वरूप का अध्ययन और विश्लेषण जब किया जाता है और उसके आधार पर भाषा संबंधी कुछ नियमों का निर्धारण होता है, उसे वर्णनात्मक भाषा विज्ञान कहा जाता है। दूसरे अर्थ में वर्णनात्मक भाषा विज्ञान ही 'व्याकरण' है। वर्णनात्मक भाषा विज्ञान मूलत: काल विशेष से ही संबंध रखता है और इसका उद्देश्य भाषा के विकास का वर्णन करना नहीं होता है। इसमें भाषा के वर्णन पक्ष पर अधिक ध्यान दिया जाता है। देवेन्द्रनाथ शर्मा एवं दीप्ति शर्मा के अनुसार–

''वर्णनात्मक भाषा विज्ञान को ही दूसरे शब्द में व्याकरण कहते हैं।'' [1]
मुण्डारी भाषा वर्णनात्मक भाषा विज्ञान का प्रमुख उदाहरण है।

मुण्डारी के क्षेत्रेय रूपों की ध्वनि संरचना

मुण्डारी भाषा में निम्न ध्वनियों का प्रयोग होता है–

स्वर–

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ
ओ	औ	अं अः	ा	ि	ी	ु	ू
े	ै	ो	ौ	ं	ः		

व्यंजन–

क	ख	ग	घ	ड़
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

अर्ध व्यंजन–

य र ल व स ह : ड़

इन ध्वनियों में निम्न बातें ध्यान में रखनी चाहिए–

(क) मुण्डारी भाषा में ह्रस्व स्वर का प्रयोग अधिक होता है। साथ ही अल्पप्राण व्यंजनों का प्रयोग भी अधिक होता है।

जैसे– अम–तुम, उलि–आम
सिम–मुर्गी, गड़ा–नदी
चटु–घड़ा, कुला–बाघ आदि

किन्तु जोर देकर कहने पर, गुस्से से व गाली देने के क्रम में महाप्राण रूपों का भी प्रयोग मुण्डारी भाषा में होता है। जैसे–खींस / खींसि–गुस्सा, क्रोध होना।

खारा–लकड़ी के तख्ते से समतल करने का काम।

खलबोरा–गाली का शब्द (पेट फटने तक खानेवाला)

खोमसव–थक्कहार

(ख) मुण्डारी वाक्य को हिन्दी और अंग्रेजी के नियम के आधार पर लिखकर या उससे हटकर प्रस्तुत / लिखने पर भी अर्थ में कोई परिवर्त्तन नही होता है।

जैसै– हिन्दी– मैं खाना खाता हूँ।
कर्त्ता कर्म

क्रिया

मुण्डारी– (क) अइञ मंडि जोम तना

(ख) मंडि जोम तनाइञ

(ग) जोम तनाइञ मंडि

(घ) मंडिञ जोम तना

इस तरह मुण्डारी के एक ही वाक्य को चार दृष्टियों से कहा जाता है, किन्तु इसके अर्थ में कोई परिवर्त्तन नहीं होता है। व्यवहार में सभी रूप मुण्डारी भाषा में मिलते हैं।

(ग) मुण्डारी भाषा की विशेषता है कि मूल शब्द में बिना परिवर्त्तन किये संज्ञा, प्रत्यय, उपसर्ग, समाज, क्रिया विशेषण आदि पाए जाते हैं।

जैसे–

जोम – खाना (मूल शब्द)

सरजोम – सखुआ (संज्ञा)

सरजोमडीह – गाँव का नाम (संज्ञा)

अजोम – खिलाना (उपसर्ग)

जोमेअ – खाने की वस्तु (प्रत्यय)

जोमनावा – नवान्न ग्रहण (समास) (परम्परा संस्कृति पर आधारित)

सिबिल सिबिल जोम–स्वादिष्ट खाना (क्रिया विशेषण)

(घ) हसद: मुण्डारी में ह्रस्व की प्रधानता होती है। दीर्घत्व का प्रयोग आंशिक रूप में ही होता है।

जैसे–

सेन–चलना लेल–देखना

कुपुल–मेहमान गिड़ि–फेंकना

जिलु–मांस ति –हाथ

(ड़) केर: मुण्डारी में दीर्घता से शब्दारम्भ होता है। इसमें आर्य भाषाओं से आगत शब्दों का प्रयोग अधिक मिलता है। जैसे–

घुमाओ–घुमाना खिआओ–खिलाना

ओथाई–कहाँ भुसुडि –मच्छड़

दुघुई –डूबना

(च) तमड़िया मुण्डारी में बांग्ला, हिन्दी, पंचपरगनिया बोलियों का प्रभाव मिलता है, इसलिए उच्चारण में 'ओ' की प्रधानता रहती है।

जैसे–हिन्दी वर्णमाला तमड़िया मुण्डारी उच्चारण के अनुसार–

कोखो	गो	घो	ड़ो
चो छो	जो	झो	ञ

हिन्दी		**तमड़िया मुण्डारी**
कमल	–	कोमोल
कलम	–	कोलोम
कागज	–	कोगोज
चश्मा	–	चोश्मा
दर्पण	–	दोरपोन

(छ) नगुरी–सादरी / नागपुरी से प्रभावित क्षेत्र की मुण्डारी भाषा के उच्चारण एवं शब्दों में केर: मुण्डारी की तरह दीर्घत्व पायी जाती है।

जैसे–

हसद:	**नगुरी**	**हिन्दी**
कलोम	खलोम	अगले वर्ष
चबा	छबा	समाप्त
गव	घव	घाव
तबड़ि	थबड़ि	थप्पड़
तोल	थोल	बांधना
तल	थला	मध्य
दो	दोहो	रखना

दंगड़ा / दंगडि	धंगडा़, धंगड़ि	युवक, युवती
बारोम	भारोम	भार
परका	फरका	हटना
परचि	फरचि	स्वच्छ / साफ
पदा	फदा	लात मारना
टउका	ठउका	ठीक

मुण्डारी के क्षेत्रीय रूपों की ध्वनियों का वर्गीकरण

स्वर–

(1) जीभ के भाग के आधार पर

(क) अग्र–इ ई ए ऐ

हिन्दी	**हसद:**	**तमड़िया**	**केर:**	**नगुरी**
चर्बी	इतिल	इतिल	चिलु सुनूम	सुनुम
छदय	ईम	ईम	जीव	जिमोन
वह	एना	हना	अनि	हनि
पतला	एतङ	एतङ	ननीई	नहल

(ख) मध्य–'अ'

हिन्दी	**हसद:**	**तमड़िया**	**केर:**	**नगुरी**
अंगना	ओअरी	सान (लकड़ी)	रंचा	रचा

(ग) मध्य– उ ऊ ओ औ आ

हिन्दी	**हसद:**	**तमड़िया**	**केर:**	**नगुरी**
टहलना	जारू	जारू	दड़ा	सेन बड़ा
हल चलाना	सिउ/सियु	सियु	सियोंओ	सिमु
छोटी झोपड़ी	जुरू	गुइउ	हुड़िंग कुम्बा	हुडिंग ओडअ:

भौंरा	उरू	उरू	भौंए	लेले/भंवर
कमीज	सोनो	सोनो	ङग	झुला
समेटना	सोतो	संगोम	हुड़ी	सहिराव

(2) जीभ के उठने या नीचे रहने के आधार पर

(क) संवृत–ई इ उ ऊ

हसदः	**तमड़िया**	**केरः**	**नगुरी**
इलि–हड़िया	इलि	बोडेज	बोडङ
ईम–हदय	ईम	जीव	जिमोन
उब–उधेलना	उब	रड़ा	उबतम
ऊब–बाल	ऊब	ऊब	ऊब

(ख) अर्धसंवृत–ए ओ

हसदः	**तमड़िया**	**केरः**	**नगुरी**
गोए–मरना	गोय	गोज	गोज
ओम–देना	ओमा	ऐम्म	ऐम
ओचोः खोलना	ओचोः	राड़ा	राड़ा
ओड़ो–और	ओडो	ओड़ों	हडो
एटा–दूसरा	बिनगा	आनआ/बरीआएटअः	एटे–आरम्भ
एटे	पोषा	ऐटेः	एनङ–तुरन्त
पहले	नेयाः	जलदी सिदा	सेकड़ा/जल्दीगि

(ग) विवृत–आ

हसदः	**तमड़िया**	**केरः**	**नगुरी**
आब–मूंहकान धोना	आब	मोचा मुंहड अबुग	मेद मुहड़ चपि/अबुंग
सान–लकड़ी	सान	सहान	सहन
आयर–अगुवाई	आयर	सिदा	अगुवा

आसुल–पालन पोषण	आसुल	आसुल हरा	असुल हरा
आता–भूनना	आता	आता	आता:
आटेद–विछाना	बिल	अटेज	अटेद / बिल

(घ) अर्धविवृत–ऐ अ औ

हसद:	**तमड़िया**	**केर:**	**नगुरी**
एपेलङ–तापना	तेरसंञ	जिरोओ	सेकब
एना–वह	हेना	हेना	एना:
मौर–बुरी तरह पीटना	मौर	खोब दाल	पुरागि टोकव

(3) मात्रा (काल) के आधार पर

(क) ह्रस्व–अ, इ, उ

हसद:	**तमड़िया**	**केर:**	**नगुरी**
तुम अम	अम	अम	अम

(ख) दीर्घ–आ, ई ऊ, ऐ, ओ

हसादा	**तमड़िया**	**केर:**	**नगुरी**
आब	आब	मोचा मुंहड अबुग,	मेंद मुहड़ चपि
(मुँह कान चेहरा धोना)			अबुंग
ईल–पंख	ईल	पंखी	अपड़ोब
आयुब–रात	निदा/ नुबा	निदा	अयुब
आसुल	आसुल	असुल हरा	असुल
– पालन पोषण			
आसि–माँगना	असे	असि	असि
ईम –हदय	ईम	जीव	जिमोन
ईर	ईर	रेता	हद
– काटना (हंसुवे)			

ऊर –खोदना	उर	ऊर	ऊर
ओते–जमीन	ओते	ओते	ओते
ओबोर–पेट के बल लेटना	तबेर	लहीर बल गितीज	हबकुरिया केते गिति

(4) ओष्ठों की स्थिति के अनुसार

(क) वृतमुखी–ऊ उ ओ औ

हसदः	तमड़िया	केरः	नगुरी
ऊद–मशरूम	ऊद	ऊद	ऊद
उद–निगलना	उद	लाकोब	लाकोब
ओम–देना	ओमा	ऐम	ऐम
मौर–पीटना	मौर	दाल	टोकव

(ख) अवृतमुखी–इ ई ए ऐ अ आ

हसदः	तमड़िया	केरः	नगुरी
इकिर–गहरा	इकिर	गडहा	गडडा
इलि–हंडिया	इलि	बोडोज	बोडेज
इसिन–पकाना	इसिन	इसिन	इसिन
एरा–स्त्री, पत्नी	कुड़ि	ऐरा	कुड़ि / कुड़िते
एरङ–गाली देना	एरङ	एगेर	ऐगेर
एला–आओ	हिजुम	हिजोओम	हिजु / एलाः

व्यंजन

(1) स्थान के आधार पर

(क) कण्ठय / कोमल तालव्य–क ख ग घ

हसदः	तमड़िया	केरः	नगुरी
कमि–काम	कमि	कामि	उदम / कमि
कउ–कौआ	कउ	काऊवा	काऊवाः

खींसि–क्रोध	खींसि	खिसवा	खिसाव
गपा–कल (आनेवाला)	गपा	गापा	गपा / गप्पा
गड़ि–बन्दर	गड़ि	बन्दरा	बनदरा
घड़ि–घड़ी	घड़ि	घड़ी	घड़ि

(ख) तालव्य–च छ ज झ ञ

हसदः	**तमड़िया**	**केरः**	**नगुरी**
चतोम–छाता	चतोम	चतोम	चतोम
चवलि–चावल	चवलि	चवली	चाऊलि
छकव–धोखा देना	होसोड़ो	बेदा	बेदा
छन्दि–रस्सी से पैरों को छान्दना	छन्दि	बैरोते कंटातोल बयर ते कटा तोल	
जगर–बातचीत	जागार	जगर गोनीय	जगर बंकड़
जटि–चटाई	जटि	पट्टी	जटि / पटि
झकामरि – बाध्य होकर	जकामरि	ऐड़ग, हिसिग मोटई ते	
झय मरन – मुर्छित होकर	झएँ	तिमिरन	तिरमिरव

(ग) मूर्धन्य–ट ठ ड ढ

हसदः	**तमड़िया**	**केरः**	**नगुरी**
टका–पैसा	टका / लोट	काचा	पायसा
टिका–दाग, चिन्ह	टिका	दागी	चिन्हा
ठरकि–लकड़ी की घण्टी	ठुरकि	साहब र घण्टी सहन रे जँजि	
ठांव–जगह	ठांव	ढोवा	टाँव
डटा–दाँत	डटा	डटा	डट्टा

डन्डे–जुर्माना	डन्डे	जरीबाना	जरिबाना
ढइ–भारी चीज	ढइ	हबला जेतना	हमबल जिनिस
के गिरने की आवाज	ऊजु र अयुम	उमु रअः सड़ि	

(घ) दन्त्य–त थ द ध न

हसदः	तमड़िया	केरः	नगुरी
तपम–एक दूसरे को मारना	दपल की दाल	किया बिरीया निके टोकव	मिअद एटअः तबेन–चिउड़ा
तावेन	तबेना	तबेन	
तबड़ि–थप्पड़	तबड़ि	थप्पड़ी	थपड़न
थुपियव–तमाचे मारना	थुवियव	थप्पड़ी दाल	थपड़न किंया
थेगा–खूँदना	थेगा	तिका	तिका / तिगा
दवि–दावा करना	दबि	दावा ईयमा	दबि
दरू–वृक्ष	दारू	दरू	दरू
धंगडा–जवान	धंगड़ा	दगाड़	दंगड़ा
नपम–मिलना	नपम	भेड़ना	नपम

(ड़) ओष्ठय–प फ ब भ म

हसदः	तमड़िया	केरः	नगुरी
परका–हटाना	परका	अतोम/फराक	फरका
पलटन–सैनिक	पलटन	पलटान	पलटन
फगुन चण्डु–फागुन महिना	फागु चण्डु	फागुन र महिन	फगुवा चण्डु
बगड़व–बिगाड़ना	ओंडा	खिसवा	बगड़व
बड़य–लोहार	बड़य	लोहारा	लोहरा / बड़ए
भकुवा–बेवकूफ	भकुआ	बोदा	डोंडो
भगिना–बहन का लड़का	भगिना	मीसिंग र कोड़ा	मिसि रेन होन
मदुकम–महुआ	मदुकम	मधुकम	मधुकम

(च) वर्त्स्य –न र ल स ज

हसदः	तमड़िया	केरः	नगुरी
नपम–मिलना	नपम	भेड़न	मिदेन
रबल–हल्का	रबल	खाल	रमबल
लेल–देखना	लेल	लेल	लेल / नेल
सदव–तकलीफ	सदव	दुःख	सिगिद
जनुम–काँटा	जानुम	जनूमा	जनुम

(छ) **स्वर यंत्र मुखी–'ह'**

हसदः	तमड़िया	केरः	नगुरी
हतोम–मामी	मामी	हतमों	हतोम / मामी
हनर–सास	हनर	हनहारीग	हनर
हनि–वह (दूर)	हनि	दूर	संगिन

इस तरह मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों के तुलनात्मक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बहुत सारे शब्द एक समान है, पर कुछ में विषमता है। इसका कारण अन्य सम्पर्क भाषाओं का प्रभाव है। फिर भी मुण्डारी भाषा की समानता चारों रूपों में है।

2. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को जानने के लिए ऐतिहासिक भाषा विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है। इतिहास और भाषा विज्ञान एक दूसरे के लिए उपादेय और सहायक है। प्राचीन अभिलेख, शिलालेख सिक्के आदि अध्ययन करने के उपरांत ही इतिहास के निर्माण का आधार मिलता है। साथ ही अधूरी कड़ियों को जोड़ने का काम करता है। इतिहास ही भाषा विज्ञान के पद विकास, ध्वनि विकास, अर्थ विकास, वाक्य विकास आदि को समझने का मार्ग प्रशस्त करता है। इतिहास से ही सिन्धु नदी घाटी सभ्यता की खुदाई से प्राप्त अवशेषों, लिपियों का पता चलता है कि किन समुदाय के लोगों की सभ्यता थी। उस समय किस तरह की भाषा का प्रयोग होता था? बहुत सारे शब्द मुण्डारी भाषा से अन्य भाषा में गये और कई शब्द मुण्डारी में आये। अन्य

भाषाओं का सम्पर्क कब–कब कैसे हुआ। किन परिस्थितियों में भाषा का स्वरूप बदलता गया। बाहरी आक्रमणों के द्वारा भाषा पर क्या प्रभाव पड़ा? इस तरह के कई सवालों का जवाव इतिहास से ही प्राप्त होता है। समाज में ध ार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, परिवर्त्तनों से भाषा में कई परिवर्त्तन हुए। इसका स्पष्ट पता इतिहास से ही प्राप्त होता है।

हड़प्पा, मोहनजोदड़ो सभ्यता से प्राप्त अभिलेख के सम्बन्ध में देवेन्द्र नाथ शर्मा व दीप्ति शर्मा लिखते है–''हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से प्राप्त अभिलेख अब तक नहीं पढ़े जा सके, इसलिए उनसे सिन्धु सभ्यता पर जो प्रकाश पड़ सकता था, वह नहीं पड़ सका है।'' [2] पर ऑस्ट्रिक भाषा समुदाय के विद्वानों में संताली भाषा के विद्वान श्री शिवलाल किस्कू ''मुरूतबाहा'' दावा के साथ कहते हैं कि वे हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से प्राप्त अभिलेखों, लिपि को आसानी से पढ़ समझ सकते हैं। वे कहते है कि दोनों सभ्यता ऑस्ट्रिक भाषा समुदाय के लोगों द्वारा निर्मित है। [3] प्राचीनकाल में पाषाणकालीन सभ्यता का निर्माण मुण्डा लोगों ने ही किया। जिसका प्रमाण वर्त्तमान तक मुण्डा समुदाय में किया जानेवाला सामाजिक संस्कार ''दिरि रकब'' (पत्थरगड़ी) है। इससे मालूम होता है कि दोनों सभ्यता के निर्माण में ऑस्ट्रिक समुदाय के लागों का हाथ रहा है। झारखण्ड के सन्दर्भ में मुण्डाओं ने सुतिआम्बे को राजध ानी बनाया। मदरा मुण्डा राजा बना। लगभग 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व मुण्डारी भाषा समृद्ध अवस्था में थी। राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए परगना में क्षेत्र विभाजित था। पूरे राज्य में मुण्डारी भाषा का ही प्रयोग, व्यवहार किया जाता था। नतीजा यह हुआ कि अन्य जातियाँ जो मुण्डा नहीं थे, वे भी मुण्डारी भाषा का व्यवहार करते थे। अन्य जातियों में उरांव, बड़ाइक, स्वांसी, तेली, डोम, मुस्लमान आदि। वर्त्तमान में भी ये मुण्डारी भाषा का व्यवहार करते हैं।

3. तुलनात्मक भाषा विज्ञान

भाषा की सूक्ष्मता, एक दूसरे के बीच शब्द रचना, वाक्य, अर्थ, ध्वनि रचना आदि भाषा विज्ञान के रूपों को विस्तृत रूप से अध्ययन करने का मार्ग तुलनात्मक भाषा विज्ञान के द्वारा ही संभव होता है। इसमें भाषा के विकसित रूप तथा अविकसित दोनों रूपों का अध्ययन होता है। भाषा का संरचना किसी भाषा का दूसरे भाषा के साथ किस तरह समानता और विषमता उत्पन्न करता है। इन सारे बिन्दुओं को आधार में रखकर अध्ययन करना तुलनात्मक भाषा

विज्ञान का लक्ष्य है। मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों हसद:, नगुरी, केर: तमड़िया के उदाहरणों में स्पष्ट होता है।

वाक्य द्वारा उदाहरण–

हिन्दी – गाँव के मुण्डा और पहान आए थे।

केर: – हातु रेन मुण्डा अर पहान हेक लेना किन

नगुरी – हातु रेन मुण्डा हडो पहान किन हिजु लेना

तमड़िया – हातु रेन मुण्डा ओडो पान किन हिजु लेना

हसद: – हातु रेन मुण्डा ओड़ो / अर पाड़ किन हिजु लेना

इस तरह से चारों में समानता मिलती है। अन्तर केवल हेक, हिजु, अर, हाडो, ओड़ो में है। चारों के उच्चारण में थोड़ी भिन्नता है जिसे बोलने वालों के मुख से सुनने पर या कम्पयुटर के माध्यम से समझ सकते हैं।

दूसरा उदाहरण–

हिन्दी – सूर्य डूब गया / अस्त हो गया।

केर: – सिंगि डुंगुक् एनक

नगुरी – सिंगि डुबुइ यनए

तमड़िया – सिंगि हसुर जनए

हसद: – सिंगि डुंबुइ / हसुर जनए

केर: को छोड़कर बाकी तीनों रूपों में डुबुइ उवं हसुर का प्रयोग है, परन्तु केर: में ' डुगुक ' का प्रयोग है। इसमें 'ब' के स्थान पर 'ग' और 'इ' के स्थान पर 'क्' आता है। एनए और यनए केर: व नगुरी में समानता है। तमड़िया एवं हसद: में जनए का व्यवहार होता है।

तीसरा उदाहरण–

हिन्दी – रोटी खा गया / रोटी खाया

केर: – पिठा जोम केरय

नगुरी – होलेञ जोम केदय

तमड़िया – लद जोम केदय

हसद: – लद जोम केदए

केर: में रोटी को पिठा एवं नगुरी में होलोञ कहा जाता है। केर: में 'र' ध्वनि की प्रधानता होती है। इसलिए क्रिया के पूर्ण होने में 'र' सहयोगी बनता है। तमड़िया व हसद: में रोटी को 'लद' कहा जाता है। नगुरी के होलोञ और तमड़िया, हसद: के होलोञ में अन्तर होता है। हसद:, तमड़िया में रोटी बनने से पूर्व गुड़ि चूर्ण को ''होलोञ'' कहा जाता है।

शब्द के द्वारा तुलना–

केर:, तमड़िया, नगुरी, हसद:, चारों क्षेत्रीय रूपों के शब्दों में समानता और विषमता दोनों पायी जाती है। भौगोलिक क्षेत्र एवं आर्य, द्रविड़ भाषाओं द्वारा प्रभावित होकर क्षेत्रीय रूपों की बोली में एक ही वस्तु को अलग–अलग नामों से कहा जाता है।

उदाहरण–

हिन्दी	**केर:**	**नगुरी**	**तमड़िया**	**हसद:**
धूप	सितुम	सितुङ	जेटे	जेटे
रोटी	पिटा	होलोङ	लाद	लद
आकाश	बदरि	सिरमा	रिम्बिल	रिम्बिल / लारि
लकड़ी	सहन	सहान	सान	सन
नहाना	उम	उमेन	रेआड़ा	डेबेल
तालाब	पोखइर	पोखरा	बंदा	बंदा
सिर	बोहो	बोहो	बो	बो
खेलना	एने	इनुञ	इनुञ	इनुञ
धान	हुडु	बबा	बबा	बबा
बाजार	पिट	पिट	हाट	पिट
पानी	द:	द:	द:	द:
दरवाजा	दुरा	दुवर	दुवार	दुवर

इसके आलावे और भी ऐसे शब्द है, जो इस चार क्षेत्रीय रूपों को समान या विषम दोनों रूपों में मिलता हैं।

कोश द्वारा तुलना

मुण्डारी भाषा का शब्दकोश जो पाश्चात्य विद्वान फॉदर जॉन हॉफमैन द्वारा बनायी गई है, अधूरे कार्य को पीटर पोनेट ने पूरा किया हैं। शब्दकोश का नाम है–''इन्साइकलोपीडिया मुण्डारिका'' है, जो 16 खण्डों में है। अन्य भाषाओं के शब्दकोशों की तुलना में यह सबसे बड़ा व वृहत्तर है। इसमें प्रत्येक अक्षर का विस्तार वर्णन है। इसके शब्द सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, इतिहास आदि के सबंध को दर्शाते हैं।

इन्होंने हसद: क्षेत्र में रहकर शब्दकोश का निर्माण किया। केर:, नगुरी, शब्दों का भी यथास्थान वर्णन मिलता है पर अधिकांश शब्द हसद: के ही हैं। हसद: को मुण्डारी भाषा का मूल केन्द्र स्थान के रूप में माना जाता है। बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान राँची द्वारा 1973 में ''मुण्डारी हिन्दी शब्दकोश'' प्रकाशित किया गया। यह कार्य श्रीमती स्वर्णलता प्रसाद एवं सहायक निदेशक भाषा तत्व प्रशाखा के निर्देशन में प्रकाशित हुआ। इसें बाद डॉ. मनमसीह मुन्डू ने ''मुण्डारी टुण्डकोढारि'' छापी जो मुण्डारी अंग्रेजी और हिन्दी में दर्शित है। यह शब्दकोश 1995 में छपी। विद्वान भादुड़ी ने ''मुण्डारी इंग्लिश शब्दकोश'' बनाया। इस तरह मुण्डारी भाषा के शब्दों को सुरक्षित रखने का महान कार्य किया गया। इन तीनों शब्दकोशों में मुण्डारी की चारों क्षेत्रीय रूपों के शब्दों को रखा गया है। कुछ शब्दों के उदाहरण निम्न हैं–

हिन्दी	**केर:**	**नगुरी**	**तमड़िया**	**हसद:**
नहीं	कनोओ	कागि	कागे	कागे
भैंस	कडरू	कडरू	केडा	केड़ा
कुदाली	कुड़ी	कुदाली	कुद्लम	कुदलम
कोल्हु	कुलहु	कुलु	घांडि	गांडि
घड़ा	कुही	चटु	चटु	चटु
केला	केड़ा	केरा	कदला	कदल
बैर	कोयर	दोदड़ी	खोइर	बकअ
गिद्ध	गिद्धि	गिदी	दीदी	गिदि / दीदी
घास	घसड़	तसद	तसद	तसद

टेढ़ा	टेढ़ा	बंका/गोंजे	गोंजे	बंका
पंख	डेना	इहिल	अपरोब	इल
दरवाजा	दूरा	दुवर	दुवार	दुवर
पागल	पगला	बम्बर	कोंका	बलु
पत्तल	पतल	खलगी	कालुउ	कलुउ
कबूत्तर	पेरवा	पेरोआ	पराय	टुटुमल / पराय
छोटा भाई	बोकोए	उण्डिञ	हुड़िञ हगा	बोको
स्नान करना	उमोओ	उमेन	रेड़ान	डेबेल

मुण्डारी भाषा के क्षेत्रिय रूपों की शब्द संरचना

उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है और सार्थकता की दृष्टि से शब्द। ध्वनि सार्थक हो ही, यह आवश्यक नहीं है, जैसे–अक क च ट प त आदि ध्वनियां तो हैं, किन्तु सार्थक नहीं। किन्तु, अब, कब, चल, टल, तल, पल आदि शब्द हैं, क्योंकि इनमें सार्थकता है, अर्थात् अर्थ देने की क्षमता है। [4]

दुनिया में अनगिनत ध्वनियां हैं। उपरोक्त अर्थ के अनुसार सभी ध्वनियों को दो वर्गों–सार्थक अथवा निरर्थक में रखा जा सकता है। साथ ही संसार की अन्य भाषाओं की तरह मुण्डारी भाषा में भी शब्द रचना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास, पुनरूक्ति आदि मौजूद है। शब्द रचना के निर्माण में उपसर्ग की महत्ता होती है। मुण्डारी भाषा में भी विभिन्न प्रकार के शब्दों को जोड़कर शब्द रचना की जाती है। ध्वनियों के जुड़ाव से बने सार्थक वर्ण या वर्णों से निर्मित समुदाय कों शब्द कहते हैं।

जैसे– अम–तुम, उलि–आम, दा:–पानी
मा:–काटना, चउलि–चावल, ओड़ा–घर

(क) सार्थक शब्द–विशेष अर्थ की जानकारी जिस वर्ण समुदाय से हो एवं स्पष्टता झलकती हो, उसे इस श्रेणी में रखते हैं।

जैसे– ओड़ा–घर, होड़ो–आदमी
मेरोम–बकरी, निर–दौड़ना
जोम–खाना, ओल–लिखना

(ख) निरर्थक शब्द–किसी विशेष अर्थ की जानकारी न मिलती हो।

जैसे–ह हा हि ट ठ आदि।

विशेष रूप से इन शब्दों या वर्ण / ध्वनियों का प्रयोग किसी जानवर को भगाने के इरादे से ऐसे ही अन्य प्रकार के कार्यों में व्यवहार किया जाता है।

मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में शब्द के तीन रूप मिलते हैं–

(1) मूल शब्द

(2) अन्य भाषाओं (आर्य) से आगत शब्द

(3) नया शब्द / नवनिर्मित शब्द

1. मूल शब्द

मुण्डारी भाषा में आदिकाल से प्रचलित शब्द हूबहू प्रयोग में लाये जा रहे हैं और इनमें वर्त्तमान समय में भी कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ है।

जैसे–

नयल–हल,	कुड़ि–स्त्री,	कोड़ा–लड़का
सेता–कुत्ता,	सिंगि–सूर्य,	चंडु–चाँद
इपिल–तारे,	सान–लकड़ी,	चटु–घड़ा

2. अन्य भाषाओं (आर्यत्र से आगत शब्द

मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों में अन्य भाषाओं से कई शब्द आये हैं। आगत अब ये शब्द मुण्डारी के ही हैं, किन्तु संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी में भी समान रूप से इस्तेमाल में लिये जा रहे हैं। जैसे–

मुण्डारी–आर्य भाषा	**मुण्डारी**	**आर्य भाषा**
दद– बड़ा भाई	दई	बड़ी बहन
कक–चाचा	ककि	चाची

संस्कृत

मुण्डारी	**संस्कृत**	**मुण्डारी**	–	**संस्कृत**
कोनेया –	कन्या	दोरसोन	–	दर्शन
दोरपोन –	दर्पण	पंति	–	पंक्ति

अरबी	**मुण्डारी**	**अरबी**	**मुण्डारी**	**अरबी**
देहाइत	– देहात	गोरोजो	–	गरज
फारसी	**मुण्डारी**	**फारसी**	**मुण्डारी**	**फारसी**
फुरसइति –	फुरसत	मालिकि	–	मालिक
बदलि –	बदला	सूद	–	सूद
अंग्रेजी	**मुण्डारी**	**अंग्रेजी**	**मुण्डारी**	**अंग्रेजी**
बकसा –	बक्स	बोतोलो	–	बोतल
मास्टर –	मास्टर	रसीद	–	रसीद
मोटोर –	मोटर	होरोन	–	हॉर्न

3. नया शब्द / नवनिर्मित मुण्डारी शब्द

आदिकाल से वर्त्तमान काल के मध्य मुण्डारी भाषा एवं समुदाय का इतिहास उतार–चढ़ावों वाला रहा है। वर्त्तमान परिवेश के हिसाब से मुण्डारी भाषा में कई शब्द जरूरत के अनुसार निर्मित किये गये हैं एवं व्यवहार में लाये जाते हैं। इसकी प्रक्रिया भाषायी विकास एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है तथा शब्दों के निर्माण और उसके अंगीकार की प्रक्रिया निरंतर जारी है। मुण्डारी भाषा के नये शब्द निम्न हैं–

इतुसइ	–	पाठशाला, स्कूल
ससंकिर	–	संस्कृति
उदम	–	क्रिया
गमनङ	–	विशेषण
मेता	–	संज्ञा

उपसर्ग

शब्द निर्माण में उपसर्ग की आवश्यकता होती है। शब्द के पूर्व वर्ण पद जोड़कर शब्द रचना की जाती है। मुण्डारी भाषा की शब्द रचना उपसर्ग जोड़ने से बनता है–

हसदः मुण्डारी

ब–बइ (बनाना) बबइ–बनाने की क्रिया करना

अ–अतोम – किनारा, ग–गदर–अधपका

कु–कुदा – जामुन, च–चतोम–छाता

क–कदल – केला, ओ–ओल–लिखना

नगुरी मुण्डारी

ब + अ + बइ–बाबई = बनाने की क्रिया करना

अ + जोम–अजोम = खिलाना अ + नु–अनु = पिलाना

स + सब–ससब = पकड़ना अ + जल–अजल = चटान

तमड़िया मुण्डारी

बाई / बनाव = बनाना खिआव / अजोम = खिलाना

पिआव / आनु = पिलाना चटाव / चाटेः इरि = चटान

तारा साइः / आतोम = किनारा साब = पकड़ना

केरः मुण्डारी

बाई = बनाना, खियाओ = खिलाना,

चटाव = चटाना, त्योमः = किनारा, साहः पकड़ना,

नु नु = पिलाना

प्रत्यय

किसी शब्द के अन्त में जो वर्ण पद जोड़कर शब्द रचना की जाती है, उसे प्रत्यय निर्मित शब्द कहते हैं। मुण्डारी भाषा में प्रत्यय के जुड़ने से निम्न शब्द रचना बनती है–

हसदः मुण्डारी

अनः बोरो (डर) – अन– बोरोअन (डरावना)

मइन (आदर) – अन – मइनअन (आदरणीय)

	रानु (औषधी)	– अन –	रानुअन (औषधीय)
	लुतुम (नाम)	– अन –	सुतुमान (नामी)
	सुनुम (तेल)	– अन –	सुनुमन (तैलीय)
अ :	कमि (काम)	– अ –	कमिअ (कर्मठ)
	बोरो (डर)	– अ –	बोरोअ (डरावना)
एन :	अङ (सुबह)	– एन –	अङएन (सुबह तक)
	असुल (पालना)	– एन –	असुलेन (पालना)
	तोल (बांधना)	– एन –	तोलेन (बंधना)
	बइ (बनाना)	– एन –	बइएन (बनना)
	अतोम (किनारे)	– एन –	अतोमेन (किनारे हटाना)
न :	दसि (घांगर)	– न –	दसिन (धांगर बनना)
	बलु (मुर्ख)	– न –	बलुन (मूर्ख बनना)
	बुइदि (वैद्य)	– न –	बुइदिन (वैद्य बनना)
को :	ओको (कौन)	– को –	ओकोको (किनको)
	सिम (मुर्गी)	– को –	सिमको (मुर्गियाँ)
	होड़ो (आदमी)	– को –	होड़ोको (आदमियाँ / सभी आदमी)

नगुरी मुण्डारी

बोरो (डर) + वन–बोरोवन = डरावना

मइन (आदर) + न–मइनन = आदरणीय

नुतुम (नाम) + न–नुतुमन = नामी

सुनुम (तेल) + न–सुनुमन = तैलीय

सेतअः सनते = सुबह तक

असुल हरा = पालना

थोल = बँधना, बइएन = बनना,

गेना ते फरका = किनारे हटना,

दसि बाइएन = धांगर बनना,

डोण्डो बाइएन = मूर्ख बनना,

वैदि बाईएन = वैध बनना

ओकोए = किनको,

सिमको = मुर्गियाँ,

सोबेन होड़ो = सभी आदमी

तमड़िया मुण्डारी

बोरोआनगे = इरावना,

माइहनन = आदरणीय,

रानुआन = औषधीय,

उमियाकन = नामी,

सुनुमान = तैलीय,

सेताः हाबि = सुबह तक,

आसुल = पालना,

थोल / तोल = बांधना,

फरकान = किनारे हटना,

दासिन = धांगर बनना,

डोंडोन = मूर्ख बनना, बइदेन = वैध बनना

ओकोए तको = किनको,

सिमको = मुर्गियाँ,

होड़ोको = आदमियाँ

केरः मुण्डारी

बोरो = डरावना,

जड़ी बुटी = औषधीय,

मुद ओड़ो = नाभी,

सुनुमान = तैलीय

सेता खनः = सुबह तक,

असुल = पालना,

तोला = बंधना,

अतमों ताई = किनारे हटना

धागरी बाई = धांगर बनना,

तोड़ग बाई = मूर्ख बनना,

वैध बाई = वैध बनना

ओकऐ = किनको,

सिमा = मुर्गियाँ,

सोबन ओड़ो = सभी आदमी

समास

समास का शब्दिक अर्थ ''संक्षेप'' है। समास में दो पदों (शब्दों) को जोड़कर संक्षेप करके एक पद बनता है। मुण्डारी भाषा में इसे 'टुंड मेनेसा' कहा जाता है। इस शब्द का प्रयोग डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद ने अपनी पुस्तक ''नवा होड़ो जगर मुंडि'' (नवीन मुण्डारी व्याकरण) में किया है।

हसदः मुण्डारी

अअ : सार

अअः–धनुष, सार–तीर

नगुरी मुण्डारी

अअः सार = तीर धनुष

तमड़िया मुण्डारी

आः सार = तीर धनुष

केर: मुण्डारी

तीर धनु = तीर धनुष

अर्थात '' तीर धनुष'' दोनों शब्दों के मध्य '' और '' जुड़ा हुआ है। मतलब हुआ अअ : ओड़ो सार– तीर और धनुष।

मुण्डारी में इस तरह के कई उदाहरण हैं जिनका हम क्रमबद्ध रूप से उल्लेख करेंगे। मुण्डारी में निम्न प्रकार के समास मौजूद हैं–

(1) **तत्पुरुष समास**–इसमें दोनों पद संज्ञा होते हैं और दूसरा पद प्रधान होता है। साथ ही कारक चिन्हों का लोप होता है। कारक प्रत्ययों के बिना ही शब्दों में पूर्ण वाक्य निर्माण / रचना के तत्व मौजूद होते हैं। तत्पुरुष समास की निम्न शाखाएँ हैं जो मुण्डारी भाषा में मौजूद हैं–

हसद: मुण्डारी

(क) कर्म तत्पुरूष – 'को' मुण्डारी–'को'

सारा दूति – साला को दी जाने वाली धोती

कोनेअ गोनोङ–कन्या पक्ष को दिया जाने वाला मूल्य, कन्या मूल्य

कोनेअ किचिर–कन्या को दिया जाने वाला वस्त्र, कन्या वस्त्र

पड़ा ओते –पहान को दिया जानेवाला जमीन, पहनाई

नगुरी मुण्डारी

साला धोती = साला को दिया जाने वाला धोती

डाली टका = कन्या पक्ष को दिया जाने वाला मूल्य

कोनया लिजअ: = कन्या को दिया जाने वाला वस्त्र

डाली कतारी = पहान को दिया जाने वाला जमीन

तमड़िया मुण्डारी

सारा धुति = साला को दिया जाने वाला धोती

पोन गोनोङ = कन्या पक्ष को दिया जाने वाला मूल्य

कोनेअ किचरि = कन्या को दिया जाने वाला वस्त्र

डालि कातारि = पहान को दिया जाने वाला जमीन

केरः मुण्डारी

सार धोती = साला को दिया जाने वाला धोती

डाली टका = कन्या पक्ष को दिया जाने वाला मूल्य, कन्या मूल्य

कन्या किचिर = कन्या को दिया जाने वाला वस्त्र, कन्या वस्त्र

डाली कतारी = पहान को दिया जाने वाला जमीन, पहनाई

(ख) करण तत्पुरूष–'से' मुण्डारी –'ते'

हसदः मुण्डारी

दरू ओडा –लकड़ी घर, लकड़ी से बना घर

लमअ गुंगु –लमआ पत्ता से बना बरसाती छाता

बुसु बयर – (पुआल रस्सी) पुआल से बनायी गई रस्सी

बुसु ओड़ा –पुआल से बना घर

गोम मंडि –गेहूँ से बनाया गया भात

नगुरी मुण्डारी

सहन ओड़अः = लकड़ी से बना घर

बुसु ओड़अ = पुआल से बना घर

गोहोम मंडि = गेहूँ से बनाया गया भात

तमड़िया मुण्डारी

डंडा ओड़ा = लकड़ी घर

बुसु बायार = पुआल रस्सी

गोम मंडि = गेहूँ से बना भात

बुसु ओडाः = पुआल से बना घर

केरः मुण्डारी

सहन ओड़ा = लकड़ी घर

पुसुबः डोर = पुआल रस्सी

पुसु ओड़ा = पुआल से बना घर

(ग) सम्प्रदाय –के लिए मुण्डारी –नङ, नगेन, मेन्ते

हसदः मुण्डारी

अदोवाचउलि–अरवा चावल (पूजा रोटी बनाने के लिए कूटा गया चावल)

होरा खरचा –राह खर्च (रास्ते के लिए खर्चा)

अडन्दि इलि–विवाह हंड़िया (विवाह के लिए उठाया हुआ हंड़िया)

बोंगा सिम –पूजा मुर्गी (पूजा के लिए रखी मुर्गी)

नगुरी मुण्डारी

होरा खर्चा = राह खर्च

दंड़े सिम = पूजा मुर्गी

बला इलि = शादी हड़िया

तमड़िया मुण्डारी

होरा खरचा = राह खर्च

बोंगा सिम = पूजा मुर्गी

अड़ादि इलि = विवाह हड़िया

केरः मुण्डारी

होर खर्च = राह खर्च

पूजा सिम = पूजा मुर्गी

(घ) अपादान–'से' मुण्डारी–आते

हसदः मुण्डारी

डडि दः–कुंआ पानी (कुंआ से लाया गया पानी)

बुरू गड़ा–पहाड़ी नदी (पहाड़ से आने वाली नदी)

खूँटी गाड़ी–(खूँटी से आने वाली गाड़ी)

नगुरी मुण्डारी

कुअः दअः = कुआं से लाया गया पानी

बुरू नई = पहाड़ से आने वाली नदी

खुँटि गड़ि = खूँटी से आने वाली गाड़ी

तमड़िया मुण्डारी

डाडि दा: = कुआं पानी

बुरू गाड़ा = पहाड़ी नदी

बुन्डू गाडि = बुन्डू से आने वाली गाड़ी

केर: मुण्डारी

कुँअ: द: कुआं से लाया गया पानी

बुरू गढ़ = पहाड़ी नदी

(ङ) सम्बन्ध–का, के, की मुण्डारी–अ, रेन, रअ

हसद: मुण्डारी

मुण्डा: होन–मुण्डा का लड़का

राजा: दसि–राजा का नौकर

कुड़िअ पेन्टे–(लड़की का पैन्ट)

बोरा चाउलि–बोरा का चावल

ओड़ा रेन होड़ो–घर का आदमी / सदस्य

केर: मुण्डारी

मुण्डार: कोड़ा = मुण्डा का लड़का

राजा र: कमि ओड़ो = राजा का नौकर

कोड़ा र: पेन्ट = लड़का का पैन्ट

बोरा र: चावली = बोरा का चावल

ओड़ा र: ओड़ो = घर का आदमी

तमड़िया मुण्डारी

मुण्डा: होन = मुण्डा का लड़का

राजा: दासि = राजा का नौकर

कोड़ा पेन्ट = लड़का का पेन्ट

बोरा रेआ: चाउली = बोरा का चावल

ओड़ा: रेन होड़ो = घर का आदमी

नगुरी मुण्डारी

मुण्डाअः कोड़ा होन = मुण्डा का लड़का

राजाअः दसि = राजा का नौकर

कोड़ाअ पेनटे = लड़का का पेन्ट

बोरा रअः चाउलि = बोरा का चावल

ओड़ाः रेन होड़ो = घर का आदमी

(च) अधिकरण – में, पर मुण्डारी 'रे'

हसदः मुण्डारी

असम होड़ो – आसामी आदमी (असम में रहने वाला आदमी)

संगिन हातु – दूर गाँव (दूर में बसा गाँव)

बिर केड़ा – जंगली भैंस (जंगल में रहने वाला भैंस)

नगुरी मुण्डारी

असमिया होड़ो = आसामी आदमी

संगिन हतु = दूर गांव

बीर भैंईस = जंगली भैंस

तमड़िया मुण्डारी

आसाम दिसुम होड़ो = असम देश में रहने वाला आदमी

सांगिन हातु = दूर गाँव

बीर केडा = जंगली भैंस

केरः मुण्डारी

आसमी, ओड़ो = आसामी आदमी

फरक हातु = दूर गाँव

जंगली ऊरी = जंगली भैंस

(2) कर्मधारय समास–इसमें प्रथम शब्द विशेषण होता है और दूसरा शब्द संज्ञा (विशेष्य)। इसमें उपमा उपमेय का सम्बन्ध रहता है तथा दूसरा शब्द / पद प्रधान होता है।

हसदः मुण्डारी

तेता दः – स्वच्छ जल (पानी जो स्वच्छ है)

चीनी कदल–चीनी केला (चीनी जैसा मीठा केला)

जोनो इपिल–झाड़ू तारा (झाड़ू की तरह दिखने वाला तारा)

नगुरी मुण्डारी

तेतअ दअः = स्वच्छ जल

चीनी कदल = चीनी केला

जोनोङ इपिल = झाड़ू तारा

तमड़िया मुण्डारी

तेता दाः = स्वच्छ जल

हेड़ेम कादेल = चीनी केला

जोनो इपिल = झाड़ू तारा

केरः मुण्डारी

फरीयः दः = स्वच्छ जल

चीनी केड़ = चीनी केला

जोनो डन्टी = झाड़ू तारा

(3) द्वन्द समास–इसमें दोनों शब्द या पद संज्ञा होते हैं, और दोनों ही प्रधान होते हैं। इसमें ''और'' शब्द का लोप होता है।

हसदः मुण्डारी

ओड़ा दुवर–ओड़ा ओडो दुवर (घर और दरवाजा)

ओते सिरमा–ओते ओड़ो सिरमा (धरती और आकाश)

एंगा अपु –एंगा ओड़ो अपु (माता और पिता)

निदा सिंगि–निदा ओड़ो सिंगि (रात और दिन)

राजा रानी–राजा ओड़ो रानी (राजा और रानी)

कोड़ा कुडि–कोड़ा ओड़ो कुड़ि (लड़का और लड़की)

नगुरी मुण्डारी

ओड़अ हर दुबर = घर और दरवाजा

ओते हर सिरमा = धरती और आकाश

एंगा हर अपु = माता और पिता

अयुब हर सिंगि = रात और दिन

राजा हर रानि = राजा और रानी

कोड़ा हर कुड़ि = लड़का और लड़की

तमड़िया मुण्डारी

ओड़ा–दुअर = घर और दरवाजा

ओते सिरमा = धरती और आकाश

एंगा आपु = माता और पिता

निंदा सिंगि = रात और दिन

राजा–रानी = राजा और रानी

कोड़ा–कुड़ि = लड़का और लड़की

केरः मुण्डारी

ओड़ा दूरा = घर और दरवाजा

ओते आडो सिरमा = धरती और आकाश

ऐग आड़ो अपुग = माता और पिता

निद् आड़ो सिगि = रात और दिन

राजा आड़ो रानी = राजा और रानी

कोड़ा आड़ो कुडि = लड़का और लड़की

(4) **द्विगु समास**–इसमें प्रथम पद या शब्द संख्यावाचक होता है और दूसरा पद प्रधान होता है।

हसदः मुण्डारी

बारोमास –गेल बर चण्डु रअ गोट (बारह महिना / एक वर्ष)

एअ कानि–सात कहानी

तला निदा–आधी रात

आमास –अमावश्य

नगुरी मुण्डारी

मिद सिरमा = एक वर्ष

एअ कानि = सात कहानी

आधा निदा = आधी रात

अमाष = अमावश्य

तमड़िया मुण्डारी

मोद बोछर = एक वर्ष

एअ कहानि = सात कहानी

ताला निदा = आधी रात

आमास = अमावाश्य

केरः मुण्डारी

मियः साल = एक वर्ष

सात कथनी = सात कहानी

आधा निदा = आधी रात

आधरियां = अमावश्य

(5) बहुव्रीहि समास – इसमें दोनों पद या शब्द प्रधान न होकर बल्कि दोनों जोड़कर तीसरा अर्थ प्रधान होता है।

हसदः मुण्डारी

मरङ होड़ो–मरङ लेकन होड़ो अर्थात बड़ा आदमी

विशिष्ट अर्थ	–	'हाथी' है।
मरङ गड़ा	–	सबसे बड़ी नदी
विशिष्ट अर्थ	–	तजना / करकरी
बयर	–	रस्सी
विशिष्ट अर्थ	–	साँप

नगुरी मुण्डारी

मरंग होड़ो = बड़ा आदमी

हति = हाथी

विशिष्ट अर्थ = मरंग होड़ो का तात्पर्य हाथी

सोबेनते मरंग नई = सबसे बड़ी नदी

विशिष्ट अर्थ = तजना नदी

बयर = रस्सी

विशिष्ट अर्थ = साँप

तमड़िया मुण्डारी

मारङ होड़ो = बड़ा आदमी

मारङ होड़ो = हाथी

सोबेनाते मारङ गाड़ा = सबसे बड़ी नदी

बायार = रस्सी

विशिष्ट अर्थ = साँप

केरः मुण्डारी

मरंग ओड़ों = बड़ा आदमी

हाथी = हाथी

विशिष्ट अर्थ = हाथी

डोरा = रस्सी

विशिष्ट अर्थ =साँप

मुण्डारी भाषा के चारों रूपों में इस तरह का व्यवहार मिलता है। नगुरी, केरः और तमड़िया में आर्य भाषा से आगत शब्दों का व्यवहार अधिक किया जाता है। बावजूद भी समास के सारे रूपों का उदाहरण मिलता है।

मुण्डा भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों की शब्द संरचना लगभग एक–सी है। हसदः, केरः, तमड़िया और नगुरी में व्याकरणगत भेद नहीं हैं।

संज्ञा खण्ड

वस्तुओं और विचारों की पहचान को संज्ञा कहते हैं। हिंदी और अन्य आर्यभाओं की ही तरह मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में भी चार प्रकार के संज्ञा शब्द गिनाए जा सकते हैं।

1. जातिवाचक : सदोम् 'घोड़ा', ओड़: 'घर', कितब् 'किताब' इत्यादि।
2. व्यक्तिवाचक : गंगु, रांची, हिमालय, इत्यादि।
3. समूहवाचक : द: 'पानी' गितिल् 'बालू' रतं 'बर्फ' इत्यादि।
4. भाववाचक : बनइ 'बनावट' ओनोल् 'लिखावट' गोनोए: 'मरण' इत्यादि।

हिंदी के पृथक मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में व्याकरणगत लिंग भेद नहीं होता। उदाहरण के लिए, हिंदी में जिस तरह हम आकारान्त पुलिंग शब्दों के बाद ई, (लड़का लड़की) इत्यादि जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाते हैं तथा जिस तरह लिंग के साथ ही क्रिया रूप में बदलते हैं लड़का जाता है लड़की जाती है उस तरह के व्याकरणगत रूप रचनात्मक परिवर्तन मुण्डारी में नहीं होते। मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में स्त्रीलिंग और पुलिंग दोनों के लिए एक ही क्रिया रूप लागू होता है।

उदाहरण – एगञे: हिजु:तन 'मेरी माँ आ रही है'।
हगञे : हिजु:तन 'मेरा भाई आ रहा है'।

चारों क्षेत्रीय रूपों में केवल पारिवारिक संदर्भ में प्रयुक्त होनेवाले कुछ शब्द हैं जिनमें नैसर्गिक लिंग भेद देखने को मिलता है।

पुलिंग शब्द	**स्त्रीलिंग शब्द**
अपु 'पिता'	एंग: 'माता'
हेरेल् 'पति'	एर 'पत्नी'
अर 'दमाद'	मिसि 'बहन'
बउ 'बड़ा भाई'	हिलि 'भाभी'

उभयलिंग शब्द :

चारों क्षेत्रीय रूपों में उभयलिंग शब्दों में लिंग निर्णय कोड् 'पुरुष' 'स्त्री'

के प्रत्ययात्मक प्रयोग द्वारा होता है।

उदाहरण – बोकोञ् कोड़ 'मेरा छोटा भाई'
कोकोञ् कुड़ि 'मेरी छोटी बहन'
होन्ते कोड़ा 'उसका बच्चा / बेटा'
होन्ते कुड़ि 'उसकी बच्ची / बेटी' इत्यादि।

शाब्दिक स्तर पर कुछ और जीववाचक शब्द हैं जिनमें मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में नैसर्गिक लिंग भेद दिखाई देता है।

उदाहरण–	हड़ =	बैल	गुण्डि, गइ =	गाय
	केड़ =	भैंस	नउकि =	भैंस
	बकर =	बकरा	पटिअ =	बकरी
	अण्डिअ =	साढ़	कलुटि =	मुर्गी

वचन

वचन से संज्ञा शब्दों का संख्या बोध होता है। संस्कृत की तरह मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों हसद:, केर:, नगरी और तमड़िया में तीन वचन होते हैं।

एकवचन : एक संख्याबोधक

द्विवचन : दो संख्याबोधक

बहुबचन : दो से अधिक संख्याबोधक

एक वचनत्व शब्द में प्रत्ययहीनता द्वारा, द्विवचनत्व शब्द में किङ / किंन् प्रत्यय द्वारा और बहुवचनत्व शब्द में को प्रत्यय द्वारा प्रकट किया जाता हैं।

उदाहरण –	चेणे	एक	चिड़ियां
	चेणेकिङ्	दो	चिड़ियां
	चेणेको	दो से अधिक	चिड़ियां

1. सम्मानार्थ में एकवचन के लिए भी द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे किसी सम्मान्य व्यक्ति को बैठने के लिए आसन देते समय दुब्बेन आप दोनों बैंठे (आप तशरीफ रखें) का प्रयोग। किन्तु दो व्यक्तियों के सम्मानार्थ में भी द्विवचन का प्रयोग होता है।

2. बहुवचन संकेतक को का प्रयोग सीमित अर्थ में इत्यादि के लिए होता है।

उदाहरण–बोओ: को हसुज:ञ = मुझे सिर इत्यादि में दर्द महसूस हो रहा है।

कटको लगञ = मुझे पैर इत्यादि में थकावट लगती है।

3. मानवीय व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों तथा संबंधसूचक जातिवाचक संज्ञा शब्दों के साथ तको का प्रयोग और दूसरे आदमी का आशय प्रकट करने के लिए किया जाता है।

उदाहरण–

नगु तकिं हिजु:तन 'नगु और एक दूसरा आदमी आ रहा है।

ककञ तको कमितन 'मेरे चाचा और दूसरे लोग काम कर रहे हैं।

सर्वनाम खण्ड

संज्ञा शब्दों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं, मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में सर्वनामों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

पुरुषवाचक : अञ् 'मैं' अम 'तुम' अए: वह इत्यादि।

संकेतवाचक : एन् कजि = वह बात, ने होड़ो ='यह आदमी' इत्यादि।

निश्चयवाचक : निमिन् होड़ोको 'इतने लोग' अमिन संगिन 'उतनी दूर' इत्यादि।

अनश्चियवाचक : जान् जगर् 'कोई बात' जाँए कोई आदमी इत्यादि।

प्रश्नवाचक : ओको हुलं 'किस रोज' ओकोए कौन आदमी इत्यादि।

कर्मरूप में अन्यपुरुष एकवचन में जीववाचक संज्ञा के लिए इ और निजीवाचक संज्ञा के लिए ए का प्रयोग होता है।

जैसे –

लेलिअञ् (लेल् ए अ ञ्) मैं उसे (जीवधारी को) देखूँगा।

लेलअञ् (लेल् ए अ ञ्) मैं (उसे निर्जीव को) देखूँगा।

पुरुषवाचक सर्वनामों के कर्त्ता में जोर देने के लिए उनके दुगुनीकृत रूप प्रयोग में लाए जाते हैं।

जैसे –

अको हिजु:तन 'वे आ रहे हैं'।

अकोको हिजु:तन 'निश्चित रूप से वे आ रहे हैं'।

संकेतवाचक सर्वनाम

मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में तीन प्रकार के संकेतवाचक सर्वनाम होते हैं।

क) अपेक्षाकृत निकटवर्ती संज्ञाओं के लिए न, नि, ने 'यह'।

ख) अपेक्षाकृत मध्यवर्ती संज्ञाओं के लिए अन्, इन् एन् 'वह'।

ग) अपेक्षाकृत दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए हन् हिन् हेन् 'वो'।

उदाहरण	–	न होड़ो	'यह आदमी'
		अन् होड़ो	'वह आदमी'
		हन् होड़ो	'वो आदमी'

ऊपर 'यह' 'वह' और 'वो' प्रत्येक के लिए तीन रूप दिए गए हैं। इनका भेद भौगोलिक ही है। जैसे निर्जीव संज्ञाओं के लिए सामान्यत: ने (नेअ कितब् 'यह किताब') का प्रयोग मध्य मुण्डारी (हसद:) में और नि (निअ कितब् 'यह किताब') का प्रयोग पूरबी (तमड़िया) मुण्डारी में होता है। (भाषाविद् डॉ. रामदयाल मुण्डा ने हर मुण्डारी इलाके ने प्रत्येक स्थिति के लिए तीन में से एक विकल्प चुन लिया है।)

वस्तुत: संज्ञाओं की अपेक्षाकृत दूरी बताने के लिए मुण्डारी में 9 विभिन्न क्रमगत स्तर दिखाए जा सकते है। निकटवर्ती संज्ञाओं के लिए तीन स्तर, मध्यवर्त्ती संज्ञाओं के लिए तीन और दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए तीन। नीचे के मानचित्र में हमने यही दिखाने की कोशिश की है।

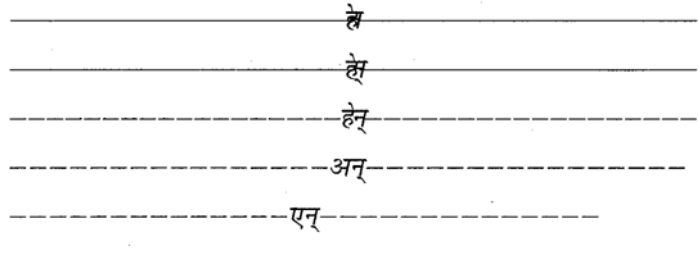

----------इन्----------

----------न----------

----------ने----------

-------नि-------

व्यक्ति

यह द्रष्टव्य है कि निकटवर्ती संकेतवाचक सर्वनामों के ठीक उल्टे प्रयोग से मध्यवर्ती सर्वनामों (नि–इन् इत्यादि) और मध्यवर्ती संकेतवाचक सर्वनामों में ह के उपसर्गात्मक प्रयोग में दूरवर्ती संकेतवाचक सर्वनामों का निमार्ण हुआ है।

संकेतवाचक सर्वनामों का यह भेद मुण्डारी और इससे संबधित भाषाओं को समस्त भारतीय भाषाओं में एक अत्यंत ही विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।[5]

प्रश्नवाचक सर्वनाम

निम्नलिखित रूप प्रयेक्त हैं।

आको	[अ 'कौन–सा (निर्जीव)
	[नि: 'कौन–सा (सजीव)
चन् कन् चिकन्	अ: 'क्या (निर्जीव)
	नि: 'क्या (सजीव)
चिल्कन	अ: 'किस तरह का निर्जीव
	नि: 'किस तरह का सजीव
चिमिन् / चिमिनङ्	'कितना'

उदाहरण–

ओकोअ दरू = 'कौन–सा पेड़'

ओकोनि: बुदुतनि: = बुदु कौन–सा व्यक्ति है?

ओकोको इदिकोअ? = किन (दो से अधिक जीवधारियों) को ले जाओगे?

नि: चिकनि: तनि:? = 'यह क्या (सजीव) है'?

नेअ चिकन: तन:? = 'यह क्या (निर्जीव)है'?

एन चिकन दरू तन:?= 'वह कौन–सा पेड़ है'?

चन: / कन: चिकन:म् नम तन? = 'तुम कौन सी चीज खोज रहे हो'?

अन्यपुरुष द्विवचन और बहुवचन में प्रश्नवाचक सर्वनामों की रचना अब एकवचन के आधार पर ही होता है। इस रचना में ओकोए के बाद त का आगम होता है।

ओकोए तकिं हिजु:तन = 'कौन (दो व्यक्ति) आ रहे है'?

ओकोए तकोअ: ओड़:तन = 'किन (दो से अधिक व्यक्ति) का घर है'?

निश्चयवाचक सर्वनाम

संकेतवाचक सर्वनाम के साथ–मिन के प्रत्ययरूप में प्रयोग करने से निश्चयवाचक सर्वनामों का निमार्ण होता है। जैसे –

ने मिनं = नेमिनं

नि + इतना

नि मिनं = निमिनं

एन्मिनं = एनमिनं

इन +

अन् मिनं = अमिनं उतना

हेन्मिनं = हिमिनं

हिन +

हन्मिन = हमिनं

उदाहरण–

नमिनं / निमिन रेअ: चिमिन गोनों? = 'इतने का कितना दाम'?

इमिनं / अमिनं दो कले दड़िअ:? = 'उतना तो हमम नहीं सकेंगे।

हिमिनं / हमिनं पे कजितन! = 'उतना कह हो'।

1. मिन् के पहले संकेतवाचक सर्वनामों के अन्त्य न् का लोप होता है।

2. स्वर साम्य सिद्धान्त के अनुसार ने मिनं = निमिनं,

एन् + मिनं = इमिनं, और हे + मिन = हिमिनं हुआ है।

3. माप की इकाई के रूप में (विशेषण के अर्थ में) अंतिम अं का लोप होता है।

जैसे–

नमिन् / नि मिन् मरं होड़ो ='इतना बड़ा आदमी'?

अमिन इमिन् टकते कए: नम् जन = 'उतने रुपयों से नहीं मिला'।

हामिन् / हामिन् संगिन्रे दुब्केन = 'उतनी दूर बैठा था'।

अनिश्चवाचक सर्वनाम

जा (न्)–जेत (न्)–कई / कुछ

इन दोनों रूपों में सामान्यतया जेत (नि) का प्रयोग निषेधात्मक / नकारात्मक अर्थ में होता है।

उदाहरण – जान: ओमञ मे = 'मुझे कोई चीज दो'।

जेतन: बनो = कुछ (भी) नहीं है'।

विशेषण खण्ड

संज्ञा शब्दों के गुण बतानेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। बुगिन् होड़ो 'अच्छा आदमी' में बुगिन् 'अच्छा' शब्द से होड़ो 'आदमी' की विशेषता बताई गई है। मुण्डारी में सामान्यत: निम्न प्रकार के विशेषण गिनाए जा सकते हैं।

गुणवाचक

जिलिं	लम्बा'	एदकन्	'बुरा'
चकर्	'चौड़ा'	हुड़िं	'छोटा'

संख्यावाचक विशेषण

क) गणनाबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्द–

मिअद् मोयोद्–'एक'		बरिअ	'दो'
अपिअ	'तीन'	उपुनिआ	'चार'
मोणेअ	'पांच'	गेल् मिअद्	'ग्यारह' (= 10 + 1)
गेल इरलिइअ	'अठारह' (=10 + 8)		

मिदहिसि 'बीस' (1 गुना 20)

मिद्हिसि मिअद् 'एक्कीस' (1 गुना 20 + 1)

ख) वितरणबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्द–

गणनाबोधक विशेषण शब्दों की प्रथम मात्रा के द्विगुणाकरण से बनते हैं।

जैसें,

बरिअ–बबरिअ 'दो दो'

अपिअ–अपपिअ 'तीन–तीन'

मोणेअ–मोमोणेअ 'पांच–पांच'

ग) आवृतिबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्द–

गणनाबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्दों के संक्षिप्त (अंतिम अ रहित) रूप में स प्रत्यय लगने से बनते हैं।

जैसे,

मोणे स 'पांच बार'

गेल् बर् स 'बारह बार'

हिसि तुरिस 'छब्बीस बार'

घ) समुदायबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्द–

गणनाबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्दों के बाद गलेद् प्रत्यय जोड़ने से बनते हैं।

जैसे,

अपिअ गलेद् 'तीनों'

हिसि एएअ गलेद् 'सताइसों'

गेल मोणेअ गलेद् 'पन्द्रहों'

विशेषण की अवस्था

मुण्डारी विशेषणों की तीन अवस्थाएं होती हैं।

1. हीनावस्था : विशेषण + नो:

2. मूलावस्था : विशेषण

3. उत्तमावस्था :

तरह

हेन्दे नो: 'किंचित् काला'

हेन्दे 'काला'

हेन्दे उत्तर 'सबसे काला'

हिंदी का विशेषणों की उत्तमावस्था के समानान्तर मुण्डारी में शब्द रचना करने के लिए सर्वनाम/संज्ञा + अतेपुर: + विशेषण अभिव्यक्ति का प्रयोग होता है। इस तरह

कुइलाते पुर: हेन्दे = 'कोयले से भी ज्यादा काला'

अञते पुर: सेणन् होड़ो = 'मुझसे अधिक ज्ञानी आदमी'

क्रिया विशेषण खण्ड

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं। मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में निम्न प्रकार के क्रिया विशेषण शब्द गिनाए जा सकते हैं।

1. स्थानवाचक विशेषण शब्द

क) स्वतंत्र स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द–

चेतन्	'ऊपर'	अयर्	'आगे'
लतर्	'नीचे'	तयोम्	'पीछे'

ख) संकेतवाचक सर्वनामों के बाद रे, ते अते, त:रे, त:ते, त:अते (तगते) स:रे, स:अते (सगते), जोड़ने से बनते हैं।

जैसे, एन्रे 'वहां पर' एन तगते 'उस जगह से'

एन्ते 'वहां (को)' ए स:रे 'उस तरफ (मे)

2. कालवाचक क्रिया विशेषण शब्द

क) स्वतंत्र कालवाचक क्रिया विशेषण शब्द–

तिसि	'आज'	खने–खने	'बार–बार'
गप=	'(आगामी) कल' ,	मिस–मिस	='एकेक बार'

होल = '(गत) कल', रोक = 'उसी दिन'

ख) संकेतवाचक सर्वनामों और विशेषण शब्दों से–

इम्तं = 'उस समय, तब'

निम्तं = 'इस समय, अब'

चिम्तं = 'कब'

3. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण शब्द

क) स्वतंत्र शब्दों द्वारा–

हुड़िं लेक = 'थोड़ा–सा', एड़:गे!एद्क = 'अत्यंत ही'

बरबरि: = 'बराबर', मेर् मेर् = 'अत्यंत ही'

ख) संकेतवाचक सर्वनाम और विशेषण शब्दों द्वारा–

निमिनं = 'इतना', चिमिनं = 'कितना'

इमिनं = 'उतना' , बेटेकन् = 'अत्यंत ही

4. रीतिवाचक क्रिया विशेषण शब्द–

क) स्वतंत्र शब्दों द्वारा–

अचक (गे) = 'अचानक ही', सेकेड़ = 'जल्दी ही'

जरूड्ड = 'अवश्य' , सम (गे) उपए: (गे) 'व्यर्थ (ही)'

ख) संकेतवाचक सर्वनामों और विशेषण द्वारा

ने (ले) क = 'इस तरह', चिल्का = 'किस तरह'

एन् (ले) क = 'उस तरह', जां लेक = 'किसी तरह'

ग) क्रिया प्रत्ययों के बाद ते, अते, लो, ते, प्रत्यय जोड़कर–

लेल्जद्ते = 'देखते हुए', सबकदते = 'पकड़े हुए'

बटिअकनते = 'लेटे / गिरे हुए', कमितन्लो:ते = 'काम करते हुए'

घ) क्रिया प्रत्ययों के द्विगुणीकरण द्वारा–

हिजु:ते हिजु: = 'निश्चित रूप से आना'

निर्तन् निर्तन् = 'भागते–भागते'

क्रिया खण्ड

जिस शब्द से किसी कार्य के होने का बोध होता है उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे,

ओल्	'लिखना'	दल्	'मारना' / पीटना'
लेल्	'देखना'	दुब्	'बैठना'
सब्	'पकड़ना'	दुडुम्	'सोना'

मुण्डारी क्रिया, हिंदी की तरह, दो प्रकार की होती है: सकर्मक और अकर्मक। सकर्मक क्रिया के प्रयोग में किसी कर्म का होना अपेक्षित है।

जैसे,

अए: होरए: लेल्तन = 'वह रास्ता देख रहा है।'

अए: ओल्तन = 'वह (कुछ) लिख रहा है।'

यहाँ पहले उदाहरण में लेल् 'देखना' क्रिया के साथ प्रत्यक्ष रूप से होर 'रास्ता' कर्म का प्रयोग हुआ है। दूसरे उदाहरण में परोक्ष रूप से कर्म का प्रयोग हुआ है, अर्थात् अए: ओल्तन 'वह लिख रहा है।' में वह 'कुछ' लिख रहा है, यह अनुमानित है। अकर्मक क्रियाओं के साथ ऐसी कोई बात नहीं है।

मनए दुबकनए: 'मनए बैठा (हुआ) है।'

होन् दुडुम् तनए: 'बच्चा सो रहा है।'

यहाँ पर सकर्मक–अकर्मक का भेद मुण्डारी में हिंदी की तुलना में कम कठोर है। जैसे, सेन् 'चलना' का प्रयोग मुण्डारी में सकर्मक और अकर्मक दोनों रूपों में होता है जबकि हिंदी में यह क्रिया सिर्फ सकर्मक ही मानी जाती हैं। सकर्मक अर्थ में चलने का अर्थ 'रास्ते को चलना' होता है। उसी तरह दुब् 'बैठना हिंदी में अकर्मक है लेकिन मुण्डारी में यह सकर्मक रूप में भी प्रयुज्य है।

जैसे,

होन् दुब् तनए: = 'बच्चा बैठ रहा है।'

होन् दुब् तइपे = 'बच्चे को बैठा दो।'

1. हिंदी प्रभृत आर्यभाषाओं से आगत क्रिया शब्दों में–आओ प्रत्यय लगाकर मुण्डारी क्रियाओं का निर्माण होता है।

उदाहरण,

लगओ	(लगना / लगाना)	रोकओ	(रूकना / रोकना)
डुबओ	(डुबना / डुबाना)	मेटओ	(मिटना / मिटाना)

2. कुछ सीमित शब्दों में–तिं प्रत्यय लगाकर मुण्डारी क्रिया रूप बनते हैं। जैसे,

मनतिं	(मानना / मनाना)
बुजतिं	(समझना / समझाना)
सातिं	(सहना)
बुलतिं	(बूलना = चक्कर मारना)

क्रिया रूप के व्याकरणगत तत्व–

मुण्डारी क्रिया रूप में मूलक्रिया के अतिरिक्त निम्नलिखित व्याकरणगत रूप पाए जाते हैं।

क. काल

ख. विधि / निषेध

ग. वाच्य

घ. क्रिया पूरक अ

ङ. कर्त्ता / कर्म मेलक सार्वनामिक तत्व

काल

मुण्डारी में काल निर्णय आस्पद सूचक प्रत्ययों त, न, अक, ले ,के, और कर्त्ता /कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों द्, न्, द्वारा होता है। आस्पद क्रिया के होने की अवस्था बताते हैं कि उस क्रिया में कर्त्ता अथवा कर्म पर जोर दिया गया है। मुण्डारी के आस्पद् प्रत्यय सामान्यतया कर्त्ता /कर्म सूचक प्रत्ययों के साथ ही व्यवहत होते हैं, किन्तु विधि वाक्यों या पूर्वकालीन क्रिया रूपों में इनका प्रयोग कर्त्ता /कर्म सूचक प्रत्ययों के बिना भी होता है। इस तरह,

जोम् तम् (= जोम + त + म्) 'खाए रहो।' = सामान्य पूर्णता बोधक

जोम्कम (= जोम् + अक + म्) 'खाए रहो।' विलंबित पूर्णता बोधक

जोम्जम् (= जोम् + ज + म्) 'खाते जाओ।' अपूर्णता बोधक

जोम्लेम् (= जोम् + ले + म्) खा लो, इसके बाद–सविकल्प पूर्णता बोधक

जोम्केम् (= जोम् + के + म्) खा लो, नहीं तो निर्विकल्प पुर्णता,

सीमित अर्थ में, केवल भविष्यत काल में और विधि क्रिया में एक अन्य सविकल्प पूर्णताबोधक आस्पद सूचक प्रत्यय को: का प्रयोग होता है। इसका प्रयोग कर्त्ता/कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों के बिना ही होता है। जैसे,

जोम्को: पे = 'तुम पहले खाने के काम में लग लो' (= तुम पहले खा लो।)

दुब्को : पे = 'तुम पहले लैठने के काम में लग लो' (= तुम पहले बैठ लो)

कर्त्ता/कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों न् /द् के उदाहरण,

मण्डिको जोम्तन 'वे खाना खा रहे हैं।'

दरू ले म: केन 'हम पेड़ काटने के काम में लगे थे।'

दरू ले म: केद 'हमने पेड़ काटा।'

आस्पद सूचक प्रत्ययों और कर्त्ता / कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों के संयोग से मुण्डारी में निम्नलिखित कालभेद किए जाते हैं।

1. वर्तमान काल

क) क्रिया + तन्, कर्त्ताकेन्द्रित, कर्मतटस्थ (= अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओ के साथ प्रयुज्य)।

दुब्तनए: (= दुब् + तन् + अ + ए:) 'वह बैठ रहा है/ बैठता है।'

कमितनबेन् (कमि + तन् + अ + बेन्) 'तुम दोनों काम कर रहे हो।'

रेंगे: तनको (रेंगे. + तन् + अ + को) उन्हें भूख लग रही है।'

ख) क्रिया + जद् कर्मकेन्द्रित सकर्मक–

उदाहरण,

ओल्जदए: (ओल् + जद् + अ + ए =) 'वह कुछ लिख रहा है।'

अड़िको सीजद (= अड़ि + सी + जद् + अ) 'वे खेत जोत रहे हैं।'

वाक्य में कर्म के रहने पर कर्त्ता मेलक सार्वनामिक तत्व कर्म के साथ आता है।

जैसे,

नगु तोअए: अगुजद। = 'नगु दूध ला रहा है।'

(अले) मण्डिले जोम्तन। = 'हम खाना खा रहे हैं।'

(अपे) चिटिपे ओल्केद चि? = 'क्या तुमने चिट्ठी लिखी?'

उपरोक्त उदाहरणों में ए: ले और पे कर्त्ता मेलक सार्वनामिक तत्व है।

चेतन् मुण्डारी (नगुरी) में जद् की जगह यद् और कहीं–कहीं लद् का भी प्रयोग होता है।

2. भूतकाल

क) क्रिया + लेद्, पूर्णभूत, कर्मकेन्द्रित (=सकर्मक)।

उदाहरण,

जोम् लेदए:। 'उसने (कुछ) खाया था।'

लेल् लेदए:। 'उसने (कुछ) देखा था।'

विकल्प से लेद् + अ = ल: और लेद् + इ = लि:।

उदाहरण,

मण्डञ् जोमल:। 'मैंने खाना खाया था।'

अए:ञ् लेल्लि:अ। 'मैंने उसे देखा था।'

ख) क्रिया + लेन् पूर्णभूत, कर्त्ताकेन्द्रित, कर्म तटस्थ।

जैसे,

हिजु: लेनए:। = 'वह आया था।'

उयु: लेनञ्। = 'मैं गिरा था।'

सकर्मक क्रिया के बाद लेन् आने से वाच्य परिवर्तन (कर्मवाच्य में) होता है। किन्तु काल वही (पूर्णभूत ही) रहता है।

जैसे,

जोम् लेनए:। = 'वह खाया गया था।'

पिड़ि सी लेन। = 'मैदान जोता गया था।'

चिटि ओल्लेन। = 'चिट्ठी लिखी गई थी।'

च) क्रिया + अकद, आसन्नभूत, कर्म केन्द्रित (सकर्मक)

उदाहरण,

तोअञ् नूअकद। (नू + अकद् + अ)। = 'मैंने दूध पीया हैं।'

रांचीम् लेलकद? = 'तुमने रांची देखा है?'

टकले सबकद। = 'हमने रुपया पकड़ा है।'

उपरोक्त अकद् के ही समानार्थ तद्, प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। हमें लगता है कि इन दो प्रयोगों का अन्तर भौगोलिक है। **तमड़िया मुण्डारी** में तद् का प्रयोग अधिक होता है।

हसद: मुण्डारी में अकद्/तद् के बाद सजीव अन्यपुरुष एकवचन का कर्म रूप इ आने पर इसका रूप अक: त: होता है।

जैसे,

लेलकदिअञ्–लेलक: इअञ्

लेलतदिअञ्–लेलत: इअञ्

तमड़िया मुण्डारी में तद् के बाद उपरोक्त इ के आने पर इ के पहले ज का आगम होता है।

जैसे,

लेल् तद्जिअम् चि क? = 'उसे तुमने देखा है कि नही?'

11. क्रिया + तन् तइकेन्, तात्कालिन भूतकाल, कर्त्ताकेन्द्रित, कर्मतटस्थ।

उदाहरण,

कमितन् तइकेनको। = 'वे काम (किया) करते थे।'

दुब्तन् तइकेन ले। = 'हम बैठते/बैठा करते थे।'

ओल्तन् तइकेनपे। = 'तुम लिखते/लिखा करते थे।'

विकल्प से कर्त्ता का सार्वनामिक रूप तन् और तइकेन् के बीच भी आ सकता है। इस तरह, कमितन्कोतइकेन = कमितन्तइकेनको। 'वे काम (किया) करते थे।

नगुरी मुण्डारी (राँची के आस–पास) तइ का लोप होता है। इस तरह उपरोक्त उदाहरण का निम्नलिखित रूप– कमितन्केनको। ' वे काम (किया) करते थे।'

3. भविष्यत् काल

मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में भविष्यत् काल प्रत्यय हीनता (शून्य प्रत्यय) द्वारा किया जाता है।

जैसे,

कमिअए (= कमि + 0 + अ + ए:)। 'वह करेगा'।

दुबञ् (= दुब् + 0 + अ + ञ्) 'मैं बैठूँगा।

सेनले (= सेन् + 0 अ + ले) 'हम जाएगे।

क्रिया की प्रथम मात्रा के दीर्घीकृत या द्विगुणित रूप के भविष्यत् काल में प्रयोग से विकल्प से वर्तमान का भी बोध होता था। इस अर्थ में क्रिया कर्त्ता की आदत बताती है, इस तरह,

जोओमए:/जोजोमए:। 'वह खाता है = उसे खाने की आदत है।'

ख. विशेषण शब्दों के इस काल में प्रयोग से वर्तमान काल का बोध होता है।

जैसे,

हेन्देअए:। = 'वह काला है।'

सलंगिअम्। = 'तुम ऊँचे हो।'

सामान्यतया ऐसे प्रयोगों में क्रियापूरक अ के पहले बल बोधक को 'ही' का प्रयोग होता है। इस तरह,

द: एतङ गेअ। = 'पानी पतला ही है।'

ग. सार्वभौमिक सत्य व्यक्त करने के लिए इसी काल का प्रयोग होता है। इस तरह,

होयो क लेलो:अ = 'हवा दिखाई नहीं देती।'

सेंगेल् लोलोअ = 'आग गर्म होती है।'

विधि/निषेध

मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में दो प्रकार के विधि रूप होते हैं।

क. आकांक्षा बोधक

ख. आज्ञा बोधक

आकांक्षा बोधक

यह विधि क्रिया या आस्पद सूचक प्रत्ययों के बाद (और विकल्प रूप से सार्वनामिक कर्त्ता के पहले) क जोड़ने से प्रकट होती है। जैसे,

कमिकञ् (या अञ् कमिक)। 'मैं काम करूँ।

दड़िकबु (या अबु दड़िक)। 'हम सकें (= समर्थ हों)।

आज्ञा बोधक

यह विधि सिर्फ मध्यम पुरुष के लिए क्रिया या आस्पद सूचक प्रत्ययों के बाद सार्वनामिक कर्त्ता रूप जोड़ने से प्रकट होती है।

जैसे,

(अम्) हिजु: मे। = 'तुम आओ।'

(अबेन्) कमिबेन। तुम दोनों काम करो।'

नम्र निवेदन के अर्थ में वाक्य के अन्त में करे 'नहीं तो' जोड़ा जाता है।

जैसे,

हिजु: को:मे करे। = 'बुरा न मानो तो (जरा) आओ।'

यह भी द्रष्टव्य है कि यही विनम्रता क्रिया के बाद नो: जोड़ कर भी व्यक्त की जा सकती है।

उदाहरण,

हिजु: नो: को: पे। = 'तुम (लोग) जरा आओ।'

निषेध

मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में निषेध के दो रूप होते हैं।

क) नकारात्मक

ख) अनाज्ञार्थक

नकारात्मक

नकारात्मक क्रिया के होने की सूचना देता है। इस प्रकार के क्रिया रूप सार्वनामिक कर्त्ता के पहले और क्रिया के पहले क लगने से बनता है।

जैसे,

(अए:) कए कमितन। = 'वह काम नही करता/कर रहा है।'

(उरि:) किं ककिं अतिंतन। = 'दो बैल चर नहीं रहे हैं।'

अनाज्ञार्थक

अनाज्ञा किसी क्रिया को होने से रोकती है। इस प्रकार की क्रिया रूप अनाज्ञार्थक विधि क्रिया के पहले 'अलो' लगाने से बनता है। किन्तु प्रयोग में अधिकतर इन तत्वों के कम किंचित् बदल कर क्रिया अन्तिम तत्व होती है।

जैसे,

अलो कमिकए: (=अलोकए: कमि)। 'वह काम मत/न करे।'

अलो दुब् कए (= अलोकए: दुब्)। 'वह मत/न बैठे।'

इस प्रकार हम पाते हैं कि मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों हसद:, नगुरी, केर: और तमड़िया की शब्द संरचना में विशेष अंतर नहीं है। केवल भौगोलिक अथवा स्थान परिवर्तन से उनमें थोड़ा अंतर आ गया है।

मुण्डारी के क्षेत्रेय रूपों की वाक्य संरचना

प्रत्येक भाषा के कुछ आधारभूत वाक्य होते हैं। उन्हीं से वाक्यों का निर्माण होता है। मुण्डारी भाषा में आधारभूत वाक्य रचना के लिए छ: प्रकार के शर्तों का पालन करना पड़ता है, जो निम्न हैं–

(1) योजी क्रिया–युक्त

(2) अकर्मक क्रिया–युक्त

(3) सकर्मक क्रिया–युक्त

(4) अप्रत्यक्ष क्रिया–युक्त

(5) बाध्यता बोधक क्रिया–युक्त

(6) औचित्य बोधक क्रिया–युक्त

(1) योजी क्रिया–युक्त–इसमें वाक्य सरल होता है और स्वाभाविक प्रवृति मौजूद रहती है। इसके अन्तर्गत तीन उपभेद मौजूद हैं–

(क) कर्त्ता–स्थैतिक क्रिया

उदाहरण–

सिंङबोगा मेनइ = भगवान है।

हसद: – होला रबङ तइकेना = कल ठंढ़ा था।

तमड़िया – तिसिङ जेटे मेना = आज गर्मी है।

नगुरी – सिङबोंगा मेनइ
होला रबङ तईन केना
ईसिंग लोलो तना

केर:– भगवान हिनिया
होला रबंज दहिन केना
तिसींग गरम हेनआ

(ख) कर्त्ता–पूरक–योजक क्रिया–इसकी तीन उपशाखाएँ हैं–

(अ) कर्त्ता–पूरक संज्ञा–योजक क्रिया

उदाहरण–

हसादा–मदरा मुण्डा राजा तइकेना = मदरा मुण्डा राजा था / थे।

अइञ मास्टर तनि = मैं शिक्षक हूँ।

इनि होड़ो तनि = वह आदमी है।

नेया राँची तना = यह राँची है।

तमड़िया –मदरा मुण्डा राजा तइकेना = मदरा मुण्डा राजा था / थे।

अइञ मास्टोर हेके = मैं शिक्षक हूँ।

इनि होड़ो हेके = वह आदमी है।

नेया राँची हेके = यह राँची है।

नगुरी – मदरा मुण्डा राजाए तईन केना

अईग मास्टर तनईग

अनि होड़ो: तनि:

नेअ: राँचि तन:

केर:– मदरा मुण्डा राजा दहिन केनाय

आँइ मास्टर तनीग

इनि होड़ो तनिह

नीया राँची तनह

(आ) कर्त्ता–पूरक विशेषण–योजक क्रिया

उदाहरण– सलंगि

मंगरा जिलिङ / गेआ = मंगरा लम्बा / उँचा है।

सोम्बारी सुगड़ लोकए = सोम्बारी सुन्दर है।

अम मोटो गेअम = तुम मोटे हो।

गड़ा पोंडे गेआ / गेया = नदी गंदा है।

मण्डि लविद् गेआ = भोजन गीला है।

नगुरी – मंगरा: जिलिंग मेनइअ:

सोमारी सुगड़ मेनइअ

अम मोटो गियाम

नई बोडा / गरदा गिया

मंडि लेए गिअ:

केर:– मंगरा जीलिग ओड़ो तनिह

सोमारी बेस हीनिया

आम मोटा हेनमा

गाड़ा गरदा हेनआ

मंडी गीला हेनआ

(इ) कर्त्ता–पूरक क्रिया विशेषण–योजक क्रिया

उदाहरण–

हसद:–अपुइञ ओड़ा रे मेनइ = मेरे पिताजी घर पर / में है।

अइञ सड़िमा रे मेनाइञ = मैं छत के ऊपर में हूँ।

नंदिअ बो: रे सि को मेना कोआ = नंदी के सिर में जुएँ हैं।

तमड़िया–अइञा आबा ओड़ा रे मेनइ = मेरे पिताजी घर पर हैं।

आइञ सड़िमा रे मेनाइञा = मैं छत के उपर में हूँ।

नंदिअ बो रे सि को मेना कोआ = नंदी के सिर में जुएँ हैं।

नगुरी– अईङअ अपुईङ ओड़अ: रिअ

अईङ सड़मी चेतन रिंअ:

नंदि रअ बो: रे सिकु मेन: कोव:

केर:– आंइय आपुँई ओड़आ रे हेनईआ

आइ छत चेतन रे हेनिया आ

नंदी रआ बोहओ रे सीकू हेनआ कुआ

(ग) अधिकारी कर्त्ता–अधिकारित पूरक–अधिकार घोतक क्रिया–इसके तीन उपभेद हैं–

(अ) कर्त्ता–के = अ

उदाहरण–बुधवा (अ) बरिअ कुड़ि तद्किना = बुधवा के दो पत्नी हैं।

हसद:– मनुअ अपिआ कोनेया को तइकेना = मनु के तीन पत्नियाँ थी।

तमाड़िया–कमल अ सोंगे बंगइ = कमल का दोस्त नही हैं।

नगुरी – बुधवा रअ: बरिअ: कुड़ि मेना: किना:

मनु रअ: अपिअ कुड़ि को तईन केना:

कमल: गति को बंङ कोव:

केर: – बुधवा रआ बरीम ऐरा हेनआ कुआ

मनु रआ तीरीयों ऐरा दाहिना केन कू

कमल रआ गती कआ नुका

(आ) कर्त्ता–के पास = तअ

उदाहरण–

हसद:	–	इनि तअ टका बनो = उसके पास रुपये नहीं हैं।
तमड़िया	–	राम तअ: लिजा बनो = राम के पास कपड़ा नहीं हैं।
		अइञ तअ ओते बनो = मेरे पास जमीन नहीं हैं।
नगुरी	–	इनि: तअ: टका बनोअ:
		राम तअ: रे लिजअ: बनो:अ
		अईङ तअ: रे ओते बनोअ:
केर:–		इनि जगह टका कआंग ले
		राम र कीचीर कआ ले
		आँईया ओते कआँग ले

(इ) कर्त्ता–को–इसके अन्तर्गत ऐसी वाक्य है जो स्वभाव का अंग न हो। जैसे–

	राम रूआ तना = राम को बुखार है।
	मंगरा कु: नम तइआ = मंगरा को खाँसी है।
तमड़िया–	राम हासु तना = राम को बुखार है।
	मंगरा कु: नम तिआ = मंगरा को खाँसी है।
नगुरी–	राम उरूई तनाए
	मंगरा खूऊ तनाए
केर:–	राम के द्अ हेनआ
	मंगरा के खुऊ हेनआ

(2) अकर्मक क्रिया युक्त–इसका प्रारूप है–

कर्त्ता– अकर्मक क्रिया

उदाहरण–

हसद:	–	होन बिरिद जना = बच्चा जाग गया।
		सदोम निरेआ = घोड़ा दौडेगा।
		अइञ कु: तना = मुझे खाँसी है।

नगुरी– होनए अदा जनाए

सदोम निरे आय

अईके खूऊ लदिंअ: / अईग के खू नम: कदिईअ:

केर:– होन अदा नाऐ

सदोम लीरेयाय

आँइ के खुअ् हेनआ।

(3) सकर्मक क्रिया युक्त–इसके दो उपभेद है–

(क) कर्त्ता–कर्म–एक कर्मिक क्रिया

उदाहरण–

बुधवा मंडि जोम तनए / तना = बुधवा भोजन खा रहा है।

सुगि करामे दुरञ तना = सुगि करमा गीत गा रही है।

एंगाम पिट सेनो जना / जनए = तुम्हारी माँ बाजार चली गयी।

एतवा ओड़ा ए बइ तना = एतवा घर बना रहा है।

नगुरी – बुधवा मंडि जोम तनाए

सुगि करमा दुरंङअय दुरंङ तना

एंगम पिटि: ते सेनो जना

एतवा ओड़ए बई तना।

केर: – बुधवा मंड़ी जोमे रआय

सुगि करम दुराग दुरों गे रै

अमआ एंग पीतीया सेए नाय

एतवा ओड़आ बाई रआय

(ख) कर्त्ता–गौण कर्म–मुख्य कर्म–द्विकर्मक क्रिया

उदाहरण–

नंदि नोंदो के चिट्ठी ओलि तना = नंदी, नोंदो को चिट्ठी लिख रही है।

मंगरा, सोमरा के दल किआ = मंगरा: सोमरा को पीटा।

नगुरी – नंदि नोदो के चिट्ठी ओलई तना
मंगरा, सोमरा के हुमांअ किजअ

केर: – नंदि नोदो के चिट्ठी ओला रआई
मंगरा सोमरा के दाल कीयाई।

(4) अप्रत्यक्ष क्रिया युक्त,– इसका प्रारूप
कर्त्ता –को–कर्म–अप्रत्यय क्रिया

उदाहरण–

कुड़ि को रेंगे जद कोआ = लड़कियों को भूख लग रही है।

हसद: – हाइ को उतु कोपे = मच्छलियों को पकाओ।

तमड़िया – बरातिया को मण्डि ओमा कोपे = बारातियों को खाना खिलाओ।

नागुरी – कुड़ि कोके रेंगेए लद कोवा
हाकु कोके इसिन कोमे
बाला कोके मंडि एमा कोपे

केर: – कुड़ी होन कु के रेगेज अरकर कूरआ
हकू कूके इसिन पे
बाराती कू के मंडी खियाओ कुपे।

(5) बाध्यताबोधक क्रिया–युक्त, इसका प्रारूप
कर्त्ता–क्रियार्थक संज्ञा–बाध्यता बोधक क्रिया

उदाहरण– बुधवा (के) सेनोए टोगोअ = बुधवा को जाना पड़ेगा।
आइञ गपा सेनोइञ टोगोअ = मुझको कल जाना पड़ेगा।

नगुरी – बुधवा के सेन होबा: ओअ
आँईग के गपा सेन होवा: ओअ:।

केर:– बुधवा के सेनओं पड़ौवा
आँई के गापा सेनोओं पड़ौवा।

आधारभूत वाक्य रचना के उपर्युक्त प्रकारों के अलावे विद्वानों ने वाक्य संरचना के संबंध में कहा है कि सार्थक शब्द एवं शब्दों के क्रमगत समूह को ही वाक्य कहते हैं। हिन्दी की तरह मुण्डारी वाक्य में भी व्याकरणगत नियमों का क्रम चलता है। [6] इसके साथ ही मुण्डारी भाषा की स्वाभाविक प्रकृति में हिन्दी, अंग्रेजी के नियम रखकर या न रखकर, या दोनों दृष्टिकोण से रखने पर भी अर्थ में बदलाव नहीं होता है।

जैसे–

हिन्दी– मैं बाजार जा रहा हूँ।

मुण्डारी – (क) अइञ पिट सेनो तना / तनाइञ।

(ख) पिट तेइञ सेनो तना

(ग) सेनो तनाइञ पिट

(घ) पिटिञ सेनो तना

हिन्दी–मैं खाना खाता हूँ। खा रहा हूँ।

मुण्डारी– (क) अइञ मंडि जोम तना / तनाइञ

(ख) मंडि आइञ जोम तना

(ग) जोम तनाइञ मंडि

(घ) मंडिञ जोम तना

इस तरह मुण्डारी भाषा के स्वतंत्र रूपों का प्रयोग होने पर भी अर्थ में समानता है। बनावट के आधार पर मुण्डारी भाषा के निम्न भेद हैं–

(1) सरल वाक्य, (2) संयुक्त वाक्य

(1) सरल वाक्य–(क) वैसे वाक्यों को इसके अन्तर्गत रखते हैं जिसमें कर्त्ता और क्रिया का सम्बोधन हो।

जैसे– राम जोम तना / तनए = राम खा रहा है।

उरि अतिङ तना = गाय चर रही है।

इसमें 'राम' और 'उरि' कर्त्ता का सम्बोधन है और 'जोम' एवं 'अतिङ' क्रिया का। इसे सरल वाक्य कहते हैं।

(ख) सर्वनाम और संज्ञा के मेल से भी सरल वाक्य बनता है। जैसे–

हसद:	–	इनि होड़ो तनि = वह आदमी है।
		नेया ओड़ा तना = यह घर है।
		नि राम तनि = यह / ये राम है।
तमड़िया	–	इनि होड़ो हेके = वह आदमी है।
		नेया ओड़ा हेके = यह घर है।
		नि राम हेके = यह / ये राम है।
नगुरी	–	हनि: होड़ो तनि:ई
		नेअ: ओड़अ: तना:अ
		नि: राम तनि:
केर:	–	ईनी होड़ो तनई
		निया ओड़अ तनआ
		निई राम तनई

(2) संयुक्त वाक्य–दो या दो से अधिक सरल वाक्यों को संयोजक शब्दों के माध्यम से आपस में जुड़कर संयुक्त वाक्य बनता है। जैसे–

हसद:–(क) पिट तेइञ सेन केना ओड़ो सुनुम बुलुङ कोइञ किरिङ अउ ल: = मैं बाजार गया था और तेल नमक आदि को खरीद कर लाया।

(ख) आइञ तअ रे पेन्टे ओड़ो सोनो मेना = मेरे पास पैन्ट और कमीज है।

(ग) मोद टका ओड़ो मोद पुइला चावलि ओमाइ पे = उसे एक रूपया और एक पैला चावल दे दीजिए / दो।

तमड़िया	–	अमा: अबा ओड़ा रे मेनइ चि?
		सेन केनम चि क?
		अमा: लुतुम कना: हेके?
		बेंगड़ा रेअ गोनोङ चिमिनुञ?
नगुरी	–	अमअ: अपुम ओड़अ रे मेनअ: चि?
		एनतम सेन केना चि क:

अमः नुतुम चिनअः तना?

टोको / बेंगड़ा रअः चिमनङ गोनोङअ।

केरः – चीकन आमआ अपूम ओड़आ रे हेनिया

आम ऐमन सेन् कनाम की कनों

आमाआ नूतुम चीकन तनआ

बेंधड़ रआ चीतीइ कचा

(3) नकार वाचक वाक्य–जिस वाक्य से क्रिया के न होने का बोध होता है। मुण्डारी वाक्य में नकारात्मक रूप बनाने के लिए क्रिया के पहले कअ / क लगाना पड़ता है।

जैसे– इनि कए सेना = वह नही जाएगा।

हसदः – कइञ आयुम जदा = नहीं सून रहा हूँ।

मंडि क इसिना कना = भात नहीं पका है।

कुड़ि कए सिन्दुरिया कना = लड़की सिन्दूर नही लगायी है।

नगुरी – इनिः काए सेना

कईग अयुम लदा / नदा

मंडि का इसिन कना

कुड़ि सिनदुर काए लगाव कना

केरः – ईनी कै सेन आ

कै आयू में रआ

मंडी का इसीन कना

कुड़ी सिन्दरी कै लगाव कना

(4) सन्देह वाचक वाक्य –इस वाक्य में क्रिया के होने का सन्देह होता है। हिन्दी में 'शायद' इसका सूचक है। मुण्डारी में ''जाअ'' लगाने से उस वाक्य में सन्देह होता है।

जैसे–

हसदः – सिउ तनए जाअ = शायद हल चला रहा होगा।

तमड़िया– मोटोर सेना जना जाअ = गाड़ी चला गया शायद।
इनिअ लुतुम सोमरा जाअ = उसका नाम सोमरा शायद।

नगुरी – चहे सियु: तनए हुई
गड्डी सेनो: जना हुई
शैद इनि:अ नुतुम सोबरा तना

केर: – अटकर ओरा सी लगाव कनै
गाड़ी सेएना अटकर ओरा
अटकर इनी रआ नूतूम सोमरा तनआ

(5) आज्ञा / आदेश वाचक वाक्य–इस वाक्य से क्रिया के करने का आदेश / आज्ञा होता है।

जैसे–हसद: –नेता: ते परकन में = यहाँ से हटो।
हुड़िङ बुलुङ अउ लेम = थोड़ा नमक लाओ।
पड़व सेनो में = पढ़ने जाओ।

तमड़िया– ने सुमा ते परकन में = यहाँ से हटो।
चोकोए बुलुङ अउ लेम = थोड़ा नमक लाओ।
पोड़व सेनो में – पढ़ने जाओ।

नगुरी – नेता: ते फरकन में
कटि: बुलुंग अऊ में
पढ़ाव ते जु:

केर: – नेथाई से फरकान में
चोकओ बुलाँग आईम
पढौ सेनओं में

(6) अन्यमनस्कता वाचक वाक्य–इस वाक्य में क्रिया के उदासीन होने का भाव मिलता है। हिन्दी में इसका संकेत ''लेकिन'' से होता है। मुण्डारी में 'होनंङ' जुड़ने से वाक्य में उदासीनता का भाव प्रकट होता है।

जैसे–

हसद: – सेनो दोइञ उडुल: होनङ = जाने का मन तो था लेकिन....

तमड़िया–दुतिइञ तुसिञआ/तुसिञेआ होनङ = धोती तो पहनुंगा, लेकिन...

मंडिञ जोमेआ होनङ = खाना तो खाऊँगा लेकिन...

बेंगड़ा दोको उतु ल: होनङ = बैंगन का सब्जी तो बनाया था, लेकिन...

कुड़ि दो सुगड़ा गे तइकेना होनङ = लड़की तो सुन्दर ही थी लेकिन...

नगुरी –सेनो: रेय: मोने दो तईन केना लेकिन....

धुति दो तुसिंङ नईगं लेकिन....

मंडि दो जोमेईंग लेकिन....

टोको रेअ: उतु दो बइ ला: लेकिन....

कुड़ि दो सुगड़ गि तईन केनाए लेकिन....

केर: –सेनो रआ मन तो दाहिने केना मगर...

धोती तो तूसूँगे मगर....

मंडी तो जोमेगे मगर....

बेंघड़ रआ ऊतू बाईकान मगर...

कुड़ी तो बेस दाहिन केनै मगर....

(7) निश्चय वाचक वाक्य–इस वाक्य में निश्चित रूप से क्रिया के होने का सम्बोधन होता है। मुण्डारी में इस तरह के वाक्यों को ''बतकम / बतिकम'' से संकेत किया जाता है। जैसै–

हसद: – सेनो जनए बतकम = वह निश्चित रूप से चला गया।

तमड़िया – थैला उयु जना बतकम = थैला निश्चित रूप से गिर गया।

मेरोम अद् जना बतकम = बकरी निश्चित रूप से खो गयी।

नगुरी – इनि: जरूड सेनो जनाए

थैइला जरूड ऊयु जना

मेरोम जरूड़ अदेएना

केर: – ईनी सेएगी सेए नाऐ
थाली सही रे ऊजूसा नै
मेरोंग सही रे आदे नैय

वाक्य रचना के उपर्युक्त प्रकारों के अलावे संयोजक शब्दों को जोड़कर भी वाक्य का निमार्ण किया जाता है।

उदाहरण–

(1) ओड़ो / ओडो / हडो / अद / अर / हर = और

हसद:–गडु रे दुब में ओड़ो इलि नुइ में = पीढ़ा में बैठो और हड़ियाँ पीयो।

सोमरा ओड़ो मंगरा पिट किन सेनो जना = सोमरा और मंगरा दोनों बाजार गये।

कोड़ा अद् कुड़ि किन ओपोर तना = लड़का और लड़की दोनों एक दूसरे को खींचा खींची (शादी की नीयत से) कर रहे हैं।

तमड़िया – गडु रे दुब में ओडो इलि नुइ में = पीढ़ा में बैठो और हंड़िया पीयो।

सोमरा ओडो मंगरा हाट किन सेनो जना = सोमरा और मंगरा दोनों बजार गये।

अमा लुतुम अर हातु उदुबेम = तुम्हारा नाम और गाँव बताओ।

मंडि अर उतु बरनाइञ जोमेआ = खाना और सब्जी दोनों खाऊँगा।

केर: – सोमरा ओड़ो मंगरा पीठीया सेएनाकु
अमआ नूतम आड़ो हातू र नूतूम उदाय में
मंडी ओड़ो उत् बरनो जोमेय।

नगुरी – सोमरा हर मंगरा पिइट सेनो: जना किन।
अमअ: नुतुम हर हतु उदुबेम्
मंडि हर ऊतु बरनईग जोमे: आ

(2) कारे / च = या

हसद: – तिसिंङ कारे गपा बु सेनोगा = आज या कल हमलोग जाएंगे।

तमड़िया–हाइ कारे चोके गड़ा रे नमो गेआको / गेयाको = मच्छली या मेढ़क नदी में मिलेगा ही।

सोम्बारी कारे मंगरी, जाअनि दोबु अगुइ गेआ = सोम्बारी या मंगरी, किसी को तो हमलोग लायेंगे ही।

नगुरी – इसिंग चहे गपा सेना ले
हाकु चहे चोके नई रे नमो: गि को
सोमारी चहे मँगरी जाँहे के दो अऊ गि मेना:

केर: – इसिंग कारे गपा सेनो रा:बु
हकू ओडो चौके गाडा रे नमकू
सोमरी ओड़ो मंगरी जेतए के आगुरा गी हेना

(3) चि = कि (प्रश्नात्मक)

बोकोम राँची रे मेनइ चि खूँटी रे = तुम्हारा भाई राँची में है कि खूँटी में।

मनय सेनो जना चि मेनइ गेआ / गेया = मनय चला गया है कि नहीं।

गड़ा रे द: लिंगि तना चि रोड़ो जना = नदी में पानी बह रहा है कि सूख गया।

दारू रे जो मेना चि बनो? = पेड़ में फल है या नहीं।

नगुरी – अमअ: हगाम राँचि रिया चि खूँटि रे ?
मनय सेनो: जनाँय चि मेना: इया
नई रे दअ: रोहोड़ जना चि लिंगि तन गिया ?
दरू रे जो मेना: चि का: गि ?

केर: – आमआ हगाम राँची रे हेना ची खूँटी रे
मनए सेए नाय ची हेनिया
गाडा रा दाआ रोहोड हेना चि बहाव रआ
दारू रे जो हेना कि कानओं ।

(4) चि = कर

ओड़ा रे एपेरङ जन चि उडुङ जना = घर में गाली गलौज कर निकल गया।

होड़ो को दे: जन चि मोटोर सेनो जना = आदमी लोग गाड़ी में चढ़कर चले गये।

नेता: रे दुब केन चि दुडुम जना = यहाँ बैठकर सो गया।

सेता बु: केद चि निर जना = कुत्ता भौंक कर भाग गया।

बुन्डू सेन केन चि रूड़ा जना = बुन्डू जाकर वापस लौट गया।

नगुरी– ओड़अ: रे ऐयगेर केते ओडोंग जनाए
होड़ो देज केते गडी ओडोङ जना
नेत: रे दुब केते गितिज जनाए
सेता भूँ: केते निर जनाए
बुन्डू सेन केते रूबड़ जनाए

केर:– ओड़आ रे ऐगेर कातोर उड़ूँगे नै
होड़ो कू गाड़ी देज कतोर सेने नाकू
नेथाईम दुऊ कतोर गीतीजे नै
सेता भूकओ कतोर नीरे नै
बुन्डू सेन कतोर रूआड नै

(5) करे दो = नहीं तो

दुब में करे दो कम बोसा ओआ = बैठो नही तो नहीं मिलेगा।

मनातिङ में करे दो कइञ जोगव मेया = मानो नहीं तो मै नहीं रखूँगा तुम्हें / तुमको।

जोम केद चि सेनो में करे दो ले दल मेया = खाकर चले जाओ नहीं तो पीटेंगे तुमको।

चना पे कजि जदा करे दो जगर बु होंका तअ = आपलोग क्या कहते हैं नहीं तो बात बन्द कर देते हैं।

नगुरी – दुब में करे कम नमेअ:
मनाकमे करे काईग दो: म अमके
जोम केते सेनो में करे टोकव मईग अमके
अपे चिनअ कजि लदापे करे बंकड़ होंका तपे।

केर: – दुऊ मे तो का नमआ
मनव मै नै तो आईग काँई दो होमा

जोम कतोर सेनओ मै नै तो दाल में आम के
आपे चीकन कजी रआ पे नै तो जगर बन्द पे

(6) नगे नगे = न, न

नगेइङ जोम दड़ि तना नगे उद दड़ि तना = न खा सक रहा हूँ न ही निगल सक रहा हूँ।

नगे दुडुम हिजु तना नगे कुमु = न ही नींद आ रही है न ही सपना।

नगे ओड़ा मेना नगे गुयु = नही घर है न ही झोपड़ी।

न गे सियु इतुवना न गे हाइ सब = न ही हल चलना / जोतना जानता है न ही मछली पकड़ना।

न गे चेड़े पंसे इतुवना न गे कुड़ि जसु = न चिड़ियाँ फँसाने जानता है न ही लड़की पटाना।

नगुरी– न जोम दड़ि तनईग न उद दड़ि तनईग
न दो दुडुम हिजु तना न दो कुमु
न दो ओड़अः मेनः न कुंबा
न सियु सरिन न हकु सब
न ओड़े पसे सरिः नः कुड़ि पसे

केरः – कऐ जोम दाड़ी रे न उडूँग दाड़ी रें
न दूडूँम ही जो रआ न ही कूमू
न तो ओड़आ हेना न तो कुवाँ
न सीओ सारीबै न हाकू सआ
न ओड़ो फसौ सरीयै न कुड़ी फसौ

(7) रेदो = अगर, तो

(क) पिटिम सेनो तन रेदो सांगा अउजम = अगर बाजार जा रहे हो कंदा लेते आना।

(ख) खूँटी रे मेना में रेदो मिठइ किरिञ जम = अगर खूँटी में हो तो मिठाइ खरीदते आना।

(ग) हिजू तन रेदो जोजो अउजम = अगर तुम आ रहे हो इमली लेते आना।

(घ) अमजा: आम्बुडु रेदो चोपेए बड़ामें आइञ = तुम अगर आंमड़ा होती तो चूसते फिरता।

नगुरी– जदि पिइटम सेनो: रेदो सांगा अऊ तारेम
जदि खूँटि रे मेनम रेदो मिठाई अऊ तोरसम
जदि अम हिजू तनम दो जोजो अऊ तोरसम
जदि अम अम्बुड़ तईन तेम रेदो चोपो कतेमेतएं

केर: –

(क) अगर पीठीया सेनो रअम तो कन्दा अगुयम

(ख) अगर खूँटी रे हेनमा तो मिठाई किरीम कटोर हेजाम

(ग) अगर आम हेजोरआम तो जोजो अगुधोरा राम

(घ) अगर आम आमबडू दाहिन कोन तो चूसाब लोन सेनयाँग

(8) मेन्दो = लेकिन, किन्तु

(क) अपे ओड़ा तेइञ सेन केना मेन्दो अपे कपे तइकेना = मैं तुम्हारे घर गया था, लेकिन तुम नहीं थे।

(ख) सेन दोइञ मोने ल: मेन्दो कइञा जना = जाने का मन तो था लेकिन नहीं गया।

(ग) आड़न्दि दोले मोन ल: मेन्दो कले बपइ जना = शादी करना चाहते थे लेकिन बात नहीं बनी।

(घ) कमि दोले चबा ल: मेन्दो नला कले नम केदा = काम तो हमलोग खत्म किये लेकिन मजदूरी नहीं मिली।

नगुरी – अमअ: ओड़अ: ईग सेन केना मेनदो कम तईन केना
सेनो: रअ मन दो तईन केना मेनदो कईग सेनो: जना
अड़नदि सनङ केन ईग मेनदो कजि का: बई जना
कमि दोले छबा केदा मेनदो मजदूरि का नम जना

केर–

(क) आई आमआ ओड़ा सेन केनै मगर आम कम दाहिन केना

(ख) सेनाओ रआ विचार तो दाहिन केना मगर काय सेए ना

(ग) आँइदी ले चाहौ लेनै मगर जगर क बनैए

(घ) कामी अले चबा केराअ ले अडो मजुरी का नमेना

(9) इमिन रेओ / एन रेओ = तब भी, फिर भी

(क) कबु कुपुल तना इमिन रेओ जोहार जागार दो मेना गेया = हमलोग मेहमान नहीं है, फिर भी सलाम नमस्कार तो करना ही है।

(ख) ओमद मेअ को इमिन रेओम् असितन गेआ / गेया = लोगों ने तुमको दिया फिर भी मांग ही रहे हो।

(ग) मण्डि अउरि इसिनोअ एन रेओम असि तना = भात नहीं तैयार हुआ है फिर भी मांग रहे हो।

(घ) उदुबम तनाको एन रेओ कम बुजवो तना = लोग तुमको बता रहे हैं फिर भी नहीं समझ रहे हो।

नगुरी – अले पेड़ा न: हले एनडोओ जोहर दो चाहि
अमके होड़ो को एमदमा एनडो: असि तनम्
मंडि क: इसिन कना एनडो: असि तनम
होड़ो को अमके उदुबम तना एनरेओ कम बुझाव तना

केर: –

(क) अले पाही न लेया सेकरो रे जोहर ईया रआ हेनआ

(ख) होड़ो कू आमके एम केमअ कू से करे आसी राअम

(ग) मंड़ी का इसीन कना सेकरो रे आसी रआम

(घ) होड़ो कू आमके उदआ मेराआ कू सेकरो रे कम बुझों रआ

(10) ओको.... एन / इनि = जो / जिस.... सो /वह / उस

(क) ओको कुड़ि लो बला होबा लेना, इनि निर जना = जिस लड़की के साथ रिश्ता तय था, वह भाग गई।

(ख) ओको बिर रे दारू मेना एन रे गे दअ मेना = जिस जंगल में वृक्ष है उसी में पानी भी है।

(ग) ओको होड़ोम कजि केना इनि कए तइकेना = जिस व्यक्ति को कहा था वह नही था।

नगुरी – ओको कुड़ि लो रिश्ता लेना ऐनि: निर जनाए
ओको टोनङ रे दरू मेन: एनडेरेगि दअ: ओ मेन:
ओके होड़ो के कजि लिजईग एनि: नहालय / लहालय

केर: – जे कुड़ीया रा रिश्ता होबा र दोहोन केना इनी लिरे नैसे
जे बिर रे दारू हेनआ एनरेगी दाअ हेनआ
जे होड़ो के काजी लीना इनी कै दोहोन केना

(11) चिल्का–एन्क = जैसा / जिस तरह–वैसा / उस तरह

(क) ओड़ा: चिल्कए बोलो जना, एन्का गे गमा एटे जना = जैसे ही घर घुसा वैसे ही पानी बरसना शुरू हो गया।

(ख) चिल्कना मेन जदा एनकना दो कइङ लेला कदा = जिस तरह का कह रहे हैं वैसा तो हमने नहीं देखा।

(ग) चिल्कम हिजु लेना एनका गे रूड़ा में = जैसे तुम आये थे वैसे ही लौट जाओ।

नगुरी – चिलका ओड़अ: ईग बोला: एनकागि दअ: एटे जना।
चिलका को कजि तना एनका दो कईग लेल / नेल ल:
चिलकम हिजू लेना एनका गि सेनो: में।

केर: – (क) जैसेन ही ओड़आ घुसैने एमतंगी दाआ हिजो लगनऐं।
(ख) जैसेन जगर रेराय एनका ओई काँ लेल तरें।
(ग) जैसन आम हेज लेनम एनका गी दोया रूआड़ मे।

मुण्डारी के क्षेत्रिय रूपों की अर्थ संरचना

शब्द तथा अर्थ का समन्वित रूप भाषा है। बिना अर्थ के शब्द निरर्थक रहता है। बिना शब्द के अर्थ की अभिव्यक्ति असंभव है। भाषाविज्ञान में जिस

प्रकार भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों तथा रूपों आदि पर विचार किया जाता है उसी प्रकार अर्थ पर भी विचार किया जाता है। शब्द और अर्थ के सम्बन्ध में भर्तृहरि कहते हैं–"शब्द के उच्चारण से जब, जो अर्थ प्रतीत होता है, तब वही उस शब्द का अर्थ कहा जाता है। इसके अतिरिक्त अर्थ का कोई अन्य लक्षण नहीं है।" [1] इस तरह अर्थ के महत्व और उसकी संरचना की महत्ता पर कई विद्वानों ने गंभीरता से विचार किया है।

मुण्डारी भाषा पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि इसके चारों क्षेत्रीय रूपों की अर्थ संरचना लगभग समान है। हिन्दी की तरह मुण्डारी भाषा में भी आठ प्रकार के अर्थों का प्रयोग होता है–

(1) मुख्यार्थ (2) लक्ष्यार्थ

(3) व्यंजनार्थ (4) सामाजिक अर्थ

(5) व्याकरणिक अर्थ (6) बलात्मक अर्थ

(7) शैलीय अर्थ (8) व्यंग्यार्थ

(1) मुख्यार्थ–

मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में भी अर्थ संरचना का मूल आधार मुख्यार्थ, वाच्यार्थ या अभिधार्थ है। किसी भी भाषा में सबसे अधिक प्रयोग इसी अर्थ का होता है। स्वाभाविक है कि मुण्डारी भाषा में भी मुख्यार्थ का प्रयोग अधिक दिखायी देता है।

उदाहरण–

(क) मुख्यार्थ संज्ञा के अनुसार–

हसदः मुण्डारी : होड़ो = आदमी, दः = पानी, उरि = गाय, कुड़ि = लड़की / स्त्री, अपु = पिता, इपिल = तारा, जो = फल, बा = फूल, सुनूम = तेल, तोवा = दूध, दिरि = पत्थर, गोतोम = घी, उनुरूम =पहचान, बनइ = बनावट, ओनोल = लिखावट, बुरू = मेला, दुनुब = बैठक आदि।

तमड़िया मुण्डारी : दाः = पानी, गइ = गाय, होड़ो = आदमी, कुड़ि होन = लड़की / स्त्री, अबा = पिता, इपिल = तारा, जो = फल, बा = फूल, सुनुम = तेल, तोवा = दूध दिरि = पत्थर, गोतोम = घी, बबई = बनावट, ओनोल = लिखावट, बुरू = मेला, दुनुब = बैठक

नगुरी मुण्डारी : दअः = पानी, उरिंग = गाय, अपु = पिता, कुड़ि = लड़की, इपिल = तारा, जो = फल, बहा = फूल, सुनुम = तेल, तोवा = दूध, दिरि = पत्थर, धियु = घी, नुतुमन = पहचान, बनौटी = बनावट, ओनोल = लिखावट, बुरू / जतरा = मेला, दुनुब = बैठक

केरः मुण्डारी : दअः = पानी, उरिज = गाय, अबुग = पिता, कुड़ी = लड़की, इपिल = तारा, जो = फल, बहा = फूल, सुनूम = तेल, तोवः = दुध , दिरि = पत्थर, चर्बी = घी, चिनहा = पहचान, बाई = बनावट, ओल = लिखावट, बुरू = मेला, दुऊ = बैठक

(ख) मुख्यार्थ सर्वनाम–

हसदः मुण्डारी : अइञ = मै , अम = तुम, अलिङ = हम दोनों, अबु = हमलोग, अबेन = तुम दोनों, अपे = तुमलोग, इनि = वह, अए = वह, इनकिन = वे दोनों, इनकु / अको = वे लोग

तमड़िया मुण्डारी : आइन्ग = मै, अम = तुम, अलान्ग = हम दोनों, आपे = तुमलोग, इनकिन = वे दोनों, हिनकुः = वे लोग, आबु = हमलोग, अये = वह

नगुरी मुण्डारी : अईंग = मै, अम = तुम, अलिंग = हमदोनों, अबेन = तुम दोनों, इनि = वह, इनकिन = वे दोनों, हिनकु = वे लोग

केरः मुण्डारी : आम् = तुम, अलग = हम दोनों, अपेए = तुम लोग, इनी = वह, इनकीन = वे दोनों, इनकु = वे लोग, आईग = मै

(ग) मुख्यार्थ विशेषण –

हसदः मुण्डारी : मरङ होड़ो = बड़ा आदमी, पुडि सिम = सफेद मुर्गी, नवा कोनेया = नयी दुल्हन, इकिर = गहरा, एसेल = गोरा, ओसर = चौड़ा, केटे = कठोर, सुगड़ा = सुन्दर, सरति = सच्चा, सलंगि = उँचा, बुगिन = अच्छा, हेड़ेम = मीठा ।

तमड़िया मुण्डारी : मारंग होड़ो = बड़ा आदमी, पुन्डि सिम = सफेद मुर्गी, नवा कोन्या = नई दुल्हन, इकिर = गहरा, एसेल = गोरा, चकार = चौड़ा, केटे = कठोर, सुगड़ा = सुन्दर, सरते = सच्चा, चेतान = उँचा, बुगिन = अच्छा, हेड़ेम = मीठा

नगुरी मुण्डारी : मारंग होड़ो = बड़ा आदमी, पुन्डि सिम = सफेद मुर्गी, नवा कुड़ि = नई दुल्हन, इकिर = गहरा, एसेल = गोरा, चकर = चौड़ा, सुगड़ = सुन्दर, सरीत = सच्चा, चुटि = उँचा, बुगिन = अच्छा, हेड़ेम = मीठा

केरः मुण्डारी : मरंग होड़ो = बड़ा आदमी, पुडी सिम = सफेद मुर्गी, नवा कन्या = नई दुल्हन, गहडा = गहरा, ऐसेल = गोरा, जीलीग = चौड़ा, बेस लेख् = सुन्दर, चेतन = उँचा, बेसा = अच्छा

(घ) मुख्यार्थ क्रिया –

हसदः मुण्डारी : जोम =खाना, नु = पीना, इनुङ = खेलना, माः = काटना, पड़व = पढ़ना, सेन = चलना, गिति = सोना, इसिन =पकाना, लेल = देखना, लेका = गिनना, दुब = बैठना, हेर = बोना, असि = माँगना, इतु = सिखाना, उरूम = पहचानना, बइ = बनाना, सला = चुनना, सदव = सताना, तोल = बाँधना।

तमड़िया मुण्डारी : जोम = खाना, नु = पीना, इनुञ = खेलना, मअः = काटना, पोढ़ाव = पढ़ना, सेन = चलना, गिति = सोना, इसिन = पकाना, लेल = देखना, लेका = गिनना, दुब = बैठना, हेर = बोना, आसे = माँगना, इतुन = सिखाना, चिना = पहचानना, बइ = बनाना, साला / हलाञ्ग = चुनना, सताव = सताना, थोल = बाँधना

नगुरी मुण्डारी : जोम = खाना, नू = पीना, इनुगू = खेलना, मअः = काटना, पढ़व = पढ़ना, सेसेन = चलना, गितिग् = सोना, इसिन = पकाना, नेलेल = देखना, लेका = गिनना, दुब = बैठना, हेर = बोना, आसि = माँगना, इतुन = सिखाना, उपरूम = पहचानना, बइयो = बनाना, सला = चुनना, सिगिद = सताना, थोल = बाँधना

केरः मुण्डारी : जोम् = खाना, नुऊ = पीना, इनुऊ = खेलना, इर = काटना, पढ़ओ = पढ़ना, सेसेन = चलना, गीतिई = सोना, इसीन = पकाना, लेल = देखना, गिनना = गिनव, दुऊ = बैठना, डेरक = बोना, अस्सी = माँगना, सिखाव = सिखाना, चिनहों = पहचानना, बाई = बनाना, हलाग = चुनना, सतावोः = सताना, तोल = बाँधना

(ङ) मुख्यार्थ क्रिया विशेषण–

हसदः मुण्डारी : अयर = आगे, तयोम = पीछे, चेतन = उपर, लतर = नीचे, परका = दूर, तिसिङ = आज, जनव = रोज, नाअः = अभी, निमिर = आज कल, मेयङ = परसों, नड़ें = निकट, हुडिङ लेका = थोड़ा सा, पुरअः = बहुत, बराबरि = बराबर, रबल = हल्का, नेका = इस तरह, मंडिते = धीरे से, नेसाः इधर, हेन्सा = उधर।

तमड़िया मुण्डारी : अयार = आगे, तयोम = पीछे, चेतान = उपर, लतार = नीचे, सांगीन = दूर, तिसिञ्ग = आज, जनाव = रोज, नआः = अभी, तिसिञ्ग गपा = आजकल, मेयाञ्ग = परसों, होपोर = निकट, हुडिन्गलेका = थोड़ा सा, साञ्गि = बहुत, बराबरि = बराबर, रबाल = हल्का, नेका = इस तरह, मंडिते = धीरे से, नेसाः इधर, उधर = हेनसाः

नगुरी मुण्डारी : अयुर = आगे, तयोम = पीछे, चेतन = उपर, लातर = नीचे, संगिन = दूर, इसिंग = आज, जनाव = रोज, नःअ = अभी, निमिर गया = आजकल, परसों = गपाकोते, नड़ें = निकट, कटिकन = थोड़ा सा, थिमबा = बहुत, मिदगि = बराबर, सहज = हल्का, ने लेका = इस तरह, मंड़िते = धीरे से, नेते = इधर, हेनते = उधर

केरः मुण्डारी : अयुर = आगे, दोया = पीछे, चेतन = उपर, लतर = नीचे, तिसिर = आज, नहा = अभी, तिसिग गपा = आजकल, मेयग् = परसों, हेदे = निकट, चोकों सा = थोड़ा सा, ठेरा = बहुत, बराबर = बराबर, रबाल = हल्का, नियु तटी = इस तरह, धीरे से = धीरे से, नेतेर = इधर, ऐतेर = उधर

(2) लक्ष्यार्थ–

मुख्यार्थ से ही विकसित होकर लक्ष्यार्थ बनता है। इसमें उपमा, आलंकारिक प्रयोग आदि से वाक्य बनता है। उदाहरण–गंडे = टेढ़ा, इसका वाक्य प्रयोग करने पर–

हसदः मुण्डारी :

नेआ गंडे दारू तना = यह पेड़ टेढ़ा है।

किन्तु मनुष्य के स्वभाव में भी प्रयोग होता है।

जैसे–ने होड़ो गंडे गेआ = यह आदमी टेढ़ा है। अर्थात स्वभाव से वह कुटिल है, या नेक सोचने वाला नहीं है। इस तरह के वाक्य मुण्डारी मुहावरों

में मौजूद है। जैसे– अपिआ कटाओ = तीन पैर होना अर्थात बुजुर्ग होने पर लाठी के सहारे चलना ।

ओड़ा होड़ो = शादी स्त्री / पत्नी

ओड़ा रे चुटु पइकिन = गरीबी

कमि उडुङ = काम निकालना / मतलबी होना

कटा सब = पैर पकड़ना / माफी माँगना

जला बइ = अंधा बनना / धोखा देना

तमड़िया मुण्डारी :

ने दारू बांका मेना: = यह पेड़ टेढ़ा है।

ने होड़ो गजो हेके = यह आदमी टेढ़ा है।

कामि उडुञ्ग = काम निकालना

कटा साब = पैर पकड़ना

हिड़ि = धोखा देना।

नगुरी मुण्डारी :

ने दरू भेंको गिया = यह पेड़ टेढ़ा है।

ने होड़ो एटअ: गिया = यह आदमी टेढ़ा है।

कमि ओड़ोंग = काम निकालना

क्षमा असि = माफी माँगना

लय सव केते = पैर पकड़कर

बेदा ऐम = धोखा देना।

केर: मुण्डारी :

निय् दरू टेढ़ा मेन् = यह पेड़ टेढ़ा है।

निई होड़ो टेढ़ीयल हेनीयाँ = यह आदमी टेढ़ा है।

कमि उड्ग = काम निकालना

काँटा सहअ = पैर पकड़ना

ढक: कुकेय = धोखा देना

इस तरह मुण्डारी भाषा के सभी क्षेत्रीय रूपों एवं उसकी उपभाषाओं के मुहावरों में लक्ष्यार्थ की भरमार है, जो अर्थ संरचना में काफी सहयोग करता है।

(3) व्यंजनार्थ–

व्यंजनार्थ प्रायः कम शब्दों और वाक्यों का होता है। इसका सम्बन्ध संस्कृति, परम्परा आदि से होता है। उदाहरण–

गोनोङ टका = कीमत रुपया । इसमें कई अर्थ मौजूद है। साधारण रूप से किसी वस्तु के दाम को 'गोनोङ' कहा जाता है। साथ ही यह प्रश्नात्मक और उतरात्मक वाक्य के रूप में व्यवहार होता है। विशिष्ट अर्थ में ''गोनोङ टका'' से तात्पर्य है ''कन्या मूल्य''।

इसी तरह दः होरा = पानी रास्ता, साधारण अर्थ के अनुसार जिस रास्ते से पानी बहता है। नल, नाली आदि। किन्तु विशेष अर्थ में–मानव शरीर के 'मूत्रमार्ग' को कहा जाता है।

उदाहरण–

हसदः मुण्डारी :

'इनिअ हः होरा टेकद जना' उसका मूत्रमार्ग बंद हो गया।

दः होराते हाइ को रकब जना = पानी के रास्ते से मछलियाँ उपर चली गई।

तमड़िया मुण्डारी :

दा: होरा हाइको राकाब जन = पानी रास्ते से मच्छलियाँ ऊपर चली गई।

अया: दा: होरा हाये जन = उसका मूत्र मार्ग बन्द हो गया।

नगुरी मुण्डारी :

दअ: होराते हकु को चेतन तेको सेनो: जना = पानी रास्ते से मच्छलियाँ ऊपर चली गई।

हिनिया डुकि होरा तेपेद जना = उसका मूत्र मार्ग बन्द हो गया।

केरः मुण्डारी :

दः होरा ते हकु चेतन सेनकु = पानी रास्ते से मच्छलियाँ ऊपर चली गई।

इनि रः अटू होरा बंद होबय् नः = उसका मूत्र मार्ग बंद हो गया।

(4) सामाजिक अर्थ–

भाषा का प्रयोग समाज में होता है। जिस समाज की भाषा जटिल एवं सरल होती है उसकी भाषा में सामाजिक अर्थ का विकास भी अधिक या कम होता है। अत: भाषिक अभिव्यक्तियों में सामाजिक अर्थ मौजूद होता है।

उदाहरण–

हसद: मुण्डारी :

एन होड़ो ए सेन होरा केदा = स्वर्गवासी / देहान्त होना ।

अबु सइ को दो चिल्का तोबे = तब हमलोगो की तरफ कैसे है?

मर तलङ नेआ / नेया सब नो: लेम = चलिए थोड़ा इसको पकड़ दीजिए।

तमड़िया मुण्डारी :

गोए: जन = स्वर्गवासी / देहान्त होना।

दो / ने हुडिन्ग साबेमे = चलिए थोड़ा पकड़ दीजिए।

तोबे आबुसा चिलका मेन कोवा? = तब हमलोगों की तरफ कैसे है?

नगुरी मुण्डारी :

गोए जना = स्वर्गवासी / देहान्त होना।

दोला नेया कटि सब देंगाइ मे = चलिए थोड़ा इसको पकड़ दीजिए।

तोबो अले पड़ चिलका मेना कोवा = तब हमलोगों की तरफ कैसे है?

केर: मुण्डारी :

गोज: / गोज होब = स्वर्गवासी / देहान्त

दोल चोकों निम् सहकतमियें = चलिए थोड़ा इसको पकड़ दीजिए।

तब अईय् दने चिलक हेन् कुअ: = तब हमलोगों की तरफ कैसे है।

इन दोनों ही वाक्य या उदाहरणों में सामाजिकता प्रतीक मौजूद है। इनमें स्रोता और वक्ता का सम्बन्ध पारस्परिक है। दूसरे को प्रश्न करने पर वक्ता भी स्रोता के साथ जुड़कर सामाजिकता का बोध कराता है।

(5) व्याकरणिक अर्थ

मुण्डारी भाषा व्याकरण की दृष्टि से परिपूर्ण है। इसमें व्याकरण के सारे तत्व मौजूद है। उदाहरण के लिए मुण्डारी के, ते, रे, अ, लो त आदि का कोई

सामान्य या व्यावहारिक अर्थ नहीं है, केवल व्याकरणिक अर्थ जिसकी जानकारी वाक्य प्रयोग के द्वारा स्पष्ट रूप से मिलता है।

जैसे–

हसदः मुण्डारी :

के = को

राम के कजिअइपे = राम को कहो / कहिए

ते = को / पर

बुरू तेको सेनो तना = वे लोग मेला (को) जा रहे हैं।

रे = में / पर

ओड़ा रे मेनइ = वह घर पर / में है।

ते = से

सदोम ते सियु तना = घोड़ा से जोत रहा है।

अ = का

नेअ अलेअ ओड़ा तना = यह हमलोगों का घर है।

लो = के साथ

नंदि लो सुसुन में = नंदी के साथ नाचो।

त = के पास

राम तः रे टका बनो = राम के पास पैसा नहीं है।

तमड़िया मुण्डारी :

राम के कजि़इम = राम को कहो / कहिए

आको बुरू लेल तेको सेनोः तन = वे लोग मेला (को) जा रहे है।

अय ओड़ा रे मेनइ = वह घर पर (मे) है।

सदोम ते सि तना = घोड़ा से जोत रहा है।

निय आबुअः ओड़ा हेके = यह हमलोगों का घर है।

नंदि लो सुसुन मे = नंदि के साथ नाचो।

राम ता टका बनोः = राम के पास पैसा नहीं है।

नगुरी मुण्डारी :

राम के कजि आइमे = राम को कहो / कहिए।

हिनकु बुरू (जतरा) तेको सेनोः तना = वे लोग मेला (को) जा रहे है।

हिनिः ओड़अः रिअः = वह घर पर (मे) है।

घोड़ा ते सिः तनाए = घोड़ा से जोत रहा है।

नेअः अलेअः ओडअः तना = यह हमलोगों का घर है।

नंदि लो सुसुन मे = नंदि के साथ नाचो।

राम तअः रे टका बनोगा = राम के पास पैसा नहीं है।

केरः मुण्डारी :

राम के कजिम = राम को कहो / कहिए।

इनकु बुरू लेल सेनो र कू = वे लोग मेला (को) जा रहे है।

ईनि ओड़ा रेहेनिय् = वह घर पर (मे) है।

सदोम ते सिब् तनेऐ = घोड़ा से जोत रहा है।

निय् ओड़ा आबुअ तना = यह हमलोगों का घर है।

नंदि लोग सुसुन मे = नंदि के साथ नाचो।

राम ठिन कच कलें = राम के पास पैसा नहीं है।

(6) बलात्मक अर्थ

मुण्डारी भाषा में बलात्मक शब्द का प्रयोग होता है। जैसे–

हसद मुण्डारी :

बारि = ही

अइञ / अञ बारि सेनोअ = सिर्फ मैं ही जाऊँगा।

गे = ही

नंदि गे हिजुअ = नंदी ही आएगी।

दो = तो

मण्डि दो तइकेना = भोजन तो था।

रटि / जकेद = तक

लिजा रटि बनो = कपड़ा तक नही है।

ओ = भी

अमो हिजू में = तुम भी आओ।

एंन = केवल / ही

राँची रे एनं रानु नमोअ = केवल राँची में ही दवा मिलेगा।

दरं / दं / देर = निश्चय रूप से

इनि दो उरि दरं तइकेना = वह तो निश्चित रूप से गाय थी।

बति / बतिकम / बदकम = के बदले निश्चित रूप से

मण्डि दो कइञा, लद् बतिकम ओमाञ पे = भोजन तो नहीं खाऊँगा। बदले में रोटी निश्चित रूप से खाऊँगा।

च = ही / न

एन्ता रेदो राम गे च तइकेना = वहाँ पर तो राम ही न था।

तमड़िया मुण्डारी :

आइञ एसकार गेञ सेन = सिर्फ मैं ही जाऊँगा।

नंदी गे: हिजुआ = नंदी ही आएगी।

मंडि दो ताइकेना = भोजन तो था।

किचिर गे: बनो: = कपड़ा तक नही है।

आमगे हिजुम = तुम भी आओ।

राँची रे सुमुञ रानु नमोआ = केवल राँची में ही दवा मिलेगा।

हिनि दो गइ गे ताइकेना = वह निश्चित रूप से गाय थी।

माडि दो काइञ जोमेया, लदगेइञ जोमेया = भोजन तो नहीं खाऊँगा, बदले में रोटी निश्चित रूप से खाऊँगा।

हेन्डे दो राम गे: ताइकेना = वहाँ पर तो ही न था।

नगुरी मुण्डारी :

अईङ गि सेनाई = सिर्फ मै ही जाऊँगा।

नंदि गि हिजु: काए = नदी ही आएगी।

मंडि दो तईन केना = भोजन तो था।

लिजअ: सन बनो: = कपड़ा तक नहीं था।

अम हो हिजुमे = तुम भी आओ।

राँचि रे बईर रानू नमो:गा = केवल राँची में ही दवा मिलेगा।

हिनि दो सरतिगि गुंडि तईन केनाए = वह निश्चित रूप से गाय थी।

मंडि दो कईंग जोजोमा हुजि रे होलोग ईंग जोमेअ: = भोजन तो नही खाऊँगा, बदले में रोटी निश्चित रूप से खाऊँगा।

हेनता: रे दो राम काए तईन केना = वहाँ पर तो राम ही न था।

केर: मुण्डारी :

अईग ही सेनो = सिर्फ मै ही जाऊँगा।

नंदी हीजुम = नंदी ही आएगी।

मंडी दोहन केन = भोजन तो था।

किचिर हो कम् ले = कपड़ा तक नहीं था।

आम् हो हिजुब् = तुम भी आओ।

खाली राँची रेगी दवा नमअ = केवल राँची में ही दवा मिलेगा।

इनी तो ऊरीज गी तनी = वह तो निश्चित रूप से गाय थी।

मंडी तो कइग बईया इन र बदले पीट बईगा = भोजन तो नही खाऊँगा, बदले में रोटी निश्चित रूप से खाऊँगा।

ऐमन तो राम गी दोहन केन = वहाँ पर तो राम ही न था।

(7) शैलीय–एक वाक्य को कई प्रकार से कहा जाता है किन्तु उसके अर्थ में भिन्नता नहीं होती है, इसे शैलीय अर्थ के अन्तर्गत रखते हैं।

उदाहरण–

हिन्दी –आपका घर कहाँ (पर)है?

हसदः मुण्डारी

(क) अमा ओड़ाः कोता रे मेना?

(ख) अबेना ओड़ाः ओकोरे मेना?

(ग) अलंजा ओड़ाः ओकोर मेना?

(घ) अबुआ ओड़ा कोताः रे मेना?

तमड़िया मुण्डारी

(क) आपेया ओड़ा ओकरे मेना

(ख) आबेन ओड़ा ओकरे मेनाः

(ग) आलंअः ओड़ा ओकर मेनाः

(घ) आबुअः ओड़ा ओकरे मेनाः

(ड़) आइञ्अः ओड़ा ओकरे मेनाः

नगुरी मुण्डारी

(क) अम ओड़अः कोतअः रे मेनः

(ख) अबेनः ओड़अः कोतअ रे मेनाः

(ग) अलंगअः ओड़अः कोतअ रे मेनः गा

(घ) अबुअः ओड़अः कोतअः रे मेनः गा

(ड़) अईगअः ओड़अः कोतअः रे मेनः गा

केरः मुण्डारी

(क) आम् ओड़ा ओकथई हेन्

(ख) अबेन् ओड़ा ओकथई हेन्

(ग) अलंगः ओड़ा ओकथई हेन्

(घ) अबुअः ओड़ा ओकथई हेन्

(ड़) अईय ओड़ा ओकथई हेन

इन उदाहरणों को वचन के अनुसार रखा जा सकता है, किन्तु आदर, सम्मानपूर्वक अपने से बड़े लोगों को सम्बोधन करने पर उदाहरण ख, ग, छ, का, प्रयोग करते हैं।

(8) व्यंग्यार्थ–मुण्डारी में व्यंग्यार्थ वाक्य मौजूद है।

उदाहरण–

हसद: मुण्डारी

रू दो कम इतुवना डुलकिम दोसि तना

= बजाना तो नही आता है, ढोलक को दोष देते हो।

सिम असुल दो कम दड़ितना, सदोम असुलेम मोने तदा

= मुर्गी नही पाल सकते हो , घोड़ा पालने की सोचते हो।

तमड़िया मुण्डारी

रू दो कम इतुवाना, ढुलकिम दोष तना

= बजाना तो नही आता ढोलक को दोष देते हो।

कालुटि कम असुल दाड़ि तन सदोम असुलरेअ: उडुतन

= मुर्गी नहीं पाल सकते हो, घोड़ा पालने की सोचते हो।

नगुरी मुण्डारी

सड़ि दो कम इलतु ढलकी के दोषी एमाई तनम्

= बजाना तो नही आता ढोलक को दोष देते हो।

सिम दो असुल कम दड़ितना, घोड़ा असुल रेअ: सोचव तनम

= मुर्गी नहीं पाल सकते हो, घोड़ा पालने की सोचते हो।

केर: मुण्डारी

बजाओं क हिज तो ढका के दोष ऐमीयम

= बजाना तो नही आता ढोलक को दोष देते हो।

सिम् क: असुसल दड़िये अड़ो सदोम असुल र सोचव र:

= मुर्गी नहीं पाल सकते हो, घोड़ा पालने की सोचते हो।

शब्द स्तर–

मुण्डारी भाषा की चारों क्षेत्रीय रूपों के शब्द स्तरों में निम्न प्रकार के शब्द मिलते है–

1. अनेकार्थक शब्द

2. समलेख शब्द

3. समध्वनि शब्द

4. विलोम शब्द

(1) अनेकार्थक शब्द–वह शब्द जो मूलतः एक हो किन्तु कई कारणों से एकाधिक अर्थों का विकास हो, उसे इस श्रेणी में रखते है। मुण्डारी भाषा में ऐसे शब्दों की प्रचुरता है।

उदाहरण–

हसदः मुण्डारी

अयुम = सुनना

अयुम अदेर = सुन के भीतर जाना।

अयुम अन्दाज = सुनकर पहचानना।

अयुम ऐटे = सुनने आरम्भ करना।

अयुम कुम्बुड = छिप कर सुनना / मेद लेना

अयुम चोटे = अधुरा सुनना

अयुम चबा = अन्त तक सुनना

अयुम तुका = सुनकर चला जाना

अयुम नम = सुन पाना

अयुम अउ = सुनकर आना

तमड़िया मुण्डारी

आयोम = सुनना

आयोम केयाते बोलोजन = सुन के भीतर जाना।

आयोम केयाते चिना = सुनकर पहचानना।

आयोम एटे = सुनने आरम्भ करना।

उकु केयाते आयोम = छिपकर सुनना।

टुन्डु तोक आयोम = अन्त तक सुनना।

आयोम केयाते सेनो जन = सुनकर चला जाना।

आयोम दाड़ि = सुन पाना।

आयोम केयाते हिजुः = सुनकर आना।

नगुरी मुण्डारी

अयुम = सुनना।

अयुम केते बितर सेनोः = सुन के भीतर जाना।

अयुम केते उरूमेन = सुनकर पहचानना।

अयुम एटे केदाए = सुनने आरम्भ करना।

ऊकु केते अयुम = छिप कर सुनना।

अधः अयुम = अधुरा सुनना।

अखिर सन अयुम = अन्त तक सुनना।

अयुम केते सेनो = सुनकर चला जाना।

अयुम धड़ि = सुन पाना।

अयुम केते हिजु = सुनकर आना।

केरः मुण्डारी

अयुम = सुनना।

अयुम कथोर भीतर सेन = सुन के भीतर जाना।

अयुम कथोर चिन्ह = सुनकर पहचानना।

अयुम शुरू ईय् = सुनने आरम्भ करना।

लुकु कथोर अयुम = छिप कर सुनना।

आधा अयुम = अधुरा सुनना।

चब तक अयुम = अन्त तक सुनना।

अयुम कथोर सेनओ = सुनकर चला जाना।

अयुम दड़ि = सुन पाना।

अयुम हिज् = सुनकर आना।

वाक्य द्वारा भी भिन्नता होती है जैसे–

नुइमे = पीओ। इस पीओ में पानी, दूध, हड़िया, रस आदि हो सकता है।

वाक्य प्रयोग–

हसदः मुण्डारी

दः नुइमे = पानी पीओ / पीयो

इलि नुइमे = हड़िया पीओ / पीयो

तोवा नुइमे = दूध पीओ / पीयो

रसे नुइमे = रस पीओ / पीयो

तमड़िया मुण्डारी

दाः नु = पानी पीओ।

तोवा नु = दूध पीओ।

इलि नु = हड़िया पीना।

रसे नु = रस पीना।

नगुरी मुण्डारी

दअः नुऐम = पानी पीओ।

तोवा नुऐम = दूध पीओ।

बोडेग नुऐम = हड़िया पीओ।

रसि नुऐम = रस पीओ।

केरः मुण्डारी

दः नूई मे = पानी पीओ।

दोअः नूई मे = दूध पीओ।

बोडेज नूई मे = हड़िया पीओ।

रसी नूई मे = रस पीओ।

मरङ होड़ो = बड़ा आदमी से तात्पर्य

(क) जो बड़ा है।

(ख) बड़ा साहब या अधिकारी

(ग) व्यक्ति जो प्रतिष्ठित हो

(घ) विशिष्ट अर्थ–हाथी

तमड़िया मुण्डारी

मरंग होड़ो = बड़ा आदमी।

मरांग सयोब / गोमके = बड़ा साहब या अधिकारी।

लुतुमाकन मरांग होड़ो = व्यक्ति जो प्रतिष्ठित हो।

हाथी = विशिष्ट अर्थ।

नगुरी मुण्डारी

मरंग होड़ो = बड़ा आदमी।

मरंग गोमके / सयोब = बड़ा साहब या अधिकारी।

होड़ो ओकोए सेंड़ाननि = व्यक्ति जो प्रतिष्ठित हो।

केरः मुण्डारी

मरंग होड़ो = बड़ा आदमी।

मरंग बाबू या सरकारी होड़ो = बड़ा साहब या अधिकारी।

अनेकार्थक शब्द की पहचान है कि उसका एक केन्द्रीय अर्थ हो तथा लक्षण, व्यंजन आदि के कारण उस अर्थ से ही अन्य अर्थ विकसित हो।

जैसे–गाली के क्रम में सेता (सेथा) कहते है जिसका अर्थ है कुत्ता, किन्तु इसका अर्थ निम्न तरह से होता है–

(क) निर मेआ सेता = भागो साला

(ख) पदाइ मेआ सेता = लात मारो साला को

(ग) दलि पेआ सेता के = पीटो साले आदमी को

(घ) सेता / सेथा कए अयुम जदा = साला नहीं सुनता है।

तमड़िया मुण्डारी

(क) निरमे सारा सेता = भागो साला कुत्ता।

(ख) फादाइ मे सार सेता के = लाात मारो साले कुत्ते को।

(ग) दालि मे सार सेता के = पीटो साला आदमी को।

(घ) सेता सारा काय आयोम जदा = कुत्ता साला नहीं सुनता है।

नगुरी मुण्डारी

(क) निर मे भौंड़ा सेता = भागो साला।

(ख) फदाइम बयला सेथा के = लात मारो साले को।,

(ग) ठोकाइम साला भौंडा सेथा के = पीटो साले आदमी को।

(घ) कम चियम अयुम तना भौंडा सेथा = साला नहीं सुनता है।

केरः मुण्डारी

(क) निरोम साला सेथा = भागो साला।

(ख) लथीयमे साले सेथा के = लात मारो साले को।

ग) उलिम साले सेथा रे = पीटो साले आदमी को।

घ) साला सेथा कऐ अयुम = साला कुत्ता / आदमी नहीं सुनता है।

(2) समलेख शब्द–इसके लेखन में समानता मिलती है किन्तु अर्थ में भिन्नता पायी जाती है।

जैसे–

हसदः मुण्डारी

उब = उड़ेलना

उद = निगलना,

उर = खोदना / कोड़ना,

बोर = सूत निकालना,

ऊब = बाल,

उद = मशरूम,

उर = चमड़ा

बोर = दामाद / दमाद

तमड़िया मुण्डारी

ऊब = उधेलना,

ऊद = मशरूम

उर = चमड़ा,

बोर = दुल्हा

उब = बाल,

ऊर = खोदना / कोड़ना,

उद = निगलना,

नगुरी मुण्डारी

उबतम = उघेलना, ऊब = बाल,

उद = निगलना, ऊद = मशरूम,

ऊर = खोदना / कोड़ना, ऊहुर = चमड़ा,

सुतम उडुग = सूत निकालना,

बोर = दामाद

केरः मुण्डारी

अझलाव = उथेलना, ऊब् = बाल,

उद = निगलना, उद् = मशरूम,

उर = खोदना / कोड़ना, ऊर = चमड़ा,

सुतम उडुग = सूत निकालना, दमाद = दामाद

(3) समध्वनि शब्द–मुण्डारी के कुछ शब्द है जो ध्वनि एवं उच्चारण में समानता पायी जाती है। वर्तनी में थोड़ी भिन्न होती है जैसे–

हसदः मुण्डारी

उद = निगलना, उद = मशरूम,

उर = खोदना / कोड़ना, उर = चमड़ा

तमड़िया मुण्डारी

ऊद = मशरूम ऊर = खोदना / कोड़ना,

उर = चमड़ा, उद = निगलना

नगुरी मुण्डारी

उद = निगलना, ऊद = मशरूम,

ऊर = खोदना / कोड़ना, ऊहुर = चमड़ा

केरः मुण्डारी

उद = निगलना, उद् = मशरूम,

उर = खोदना / कोड़ना, ऊर = चमड़ा

(4) विलोम शब्द–किसी भाषा के आपस में विरोध या एक दूसरे के उलटे अर्थ वाले शब्द भिन्नार्थी विपरीतार्थी शब्द मौजूद हैं। मुण्डारी भाषा में इस तरह के शब्दों की उपस्थिति मिलती है।

जैसे–

अयर = आगे,	तयोम =पीछे
अद = खोना,	नम = पाना
ओते = जमीन,	सिरमा = आसमान
इबिल = मोटा,	एतङ = पतला
एटे = शुरू,	टुण्डु = अंत
बुगिन = शुभ,	एदका = अशुभ
एंगा = माता,	अपु = पिता
काका = चाचा	काकी = चाची
कोड़ा = लड़का	कुड़ि = लड़की
चेतन = उपर	लतर = नीचे
तिसिङ = आज	गपा = कल
सुकु = सुख	दुकु = दुख
नड़े = निकट	संगिन = दूर
निदा = रात	सिंगि = दिन
रबल = हल्का	हम्बल = भारी
हगा = भाई	मिसि = बहन
हेंदे = काला	पुंडि = सफेद

तमड़िया मुण्डारी

तयार = आगे,	तयोम = पीछे,
नाम = पाना,	आद = खोना,
मोटो = मोटा,	नना = पतला,

येन्गा = माता, आबा = पिता,
चेतान = ऊपर, नीचे = लतार,
होपोर = निकट, सागीन = दूर,
टुनडू = अन्त, एटे = शुरू,
बुगिन = शुभ, का बुगीन = अशुभ,
पुनडी = सफेद, हेनदे = काला,
बेस = सुःख, दुःकु = दुःख,
सिगि = दिन, निदा = रात,
रबाल = हल्का, हाबाल = भारी,
कोड़ा होन = लड़का, कुड़ि होन = लड़की,
ओते = जमीन, सिरमा = आसमान,
हागा = भाई, बोको = बहन

नगुरी मुण्डारी

अयुर = आगे, तयोम = पीछे,
नम = पाना, अद = खोना,
मोटो = मोटा, नहन = पतला,
आखरी = अंत, एटेः = शुरू
एंगा / ऊँमा = माता, अपु = पिता,
काकी = चाची, काका = चाचा,
चेतन = उपर, लतर = नीचे,
नड़ें = निकट, दूर = संगिन,
सिंगी = दिन, अयुब = रात,
हगा = भाई, मिसि = बहन,
पुंडी = सफेद, काला = हेंदे,
सगुन = शुभ, काबुगिन = अशुभ,

कोड़ा = लड़का, कुड़ि = लड़की,
इसिंग = आज, गपा = कल,
बुगिन = सुख, दुकु = दुःख

केरः मुण्डारी

सिद = आगे, दोय = पीछे,
नम = पाना, भूलावों = खोना,
ऐगगी = माता, अबुग = पिता,
हनोम = चाची, काका = चाचा,
सेत् = दिन, निदा = रात,
खाल = हल्का, हबाल = भारी,
पूड़ी = सफेद, हेदे = काला,
हगा = भाई, मिसि = बहन,
चब = अंत, एटेज = शुरू,
कोड़ा = लड़का, कुड़ि = लड़की,
तिसिग = आज, गप = कल,
सुकु = सुख, दुकु = दुःख

2. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को जानने के लिए ऐतिहासिक भाषा विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है। इतिहास और भाषा विज्ञान एक दूसरे के लिए उपादेय और सहायक है। प्राचीन अभिलेख, शिलालेख सिक्के आदि अध्ययन करने के उपरांत ही इतिहास के निर्माण का आधार मिलता है। साथ ही अधूरी कड़ियों को जोड़ने का काम करता है। इतिहास ही भाषा विज्ञान के पद विकास, ध्वनि विकास, अर्थ विकास, वाक्य विकास आदि को समझने का मार्ग प्रशस्त करता है। इतिहास से ही सिन्धु नदी घाटी सभ्यता की खुदाई से प्राप्त अवशेषों, लिपियों का पता चलता है कि किन समुदाय के लोगों की सभ्यता थी। उस समय किस तरह की भाषा का प्रयोग होता था? बहुत सारे

शब्द मुण्डारी भाषा से अन्य भाषा में गये और कई शब्द मुण्डारी में आये। अन्य भाषाओं का सम्पर्क कब–कब कैसे हुआ। किन परिस्थितियों में भाषा का स्वरूप बदलता गया। बाहरी आक्रमणों के द्वारा भाषा पर क्या प्रभाव पड़ा? इस तरह के कई सवालों का जवाव इतिहास से ही प्राप्त होता है। समाज में धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, परिवर्त्तनों से भाषा में कई परिवर्त्तन हुए। इसका स्पष्ट पता इतिहास से ही प्राप्त होता है।

हड़प्पा, मोहनजोदड़ो सभ्यता से प्राप्त अभिलेख के सम्बन्ध में देवेन्द्र नाथ शर्मा व दीप्ति शर्मा लिखते है–''हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से प्राप्त अभिलेख अब तक नहीं पढ़े जा सके, इसलिए उनसे सिन्धु सभ्यता पर जो प्रकाश पड़ सकता था, वह नहीं पड़ सका है।'' [7] पर ऑस्ट्रिक भाषा समुदाय के विद्वानों में संताली भाषा के विद्वान श्री शिवलाल किस्कू ''मुरूतबाहा'' दावा के साथ कहते हैं कि वे हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से प्राप्त अभिलेखों, लिपि को आसानी से पढ़ समझ सकते हैं। वे कहते है कि दोनों सभ्यता ऑस्ट्रिक भाषा समुदाय के लोगों द्वारा निर्मित है। [8] प्राचीनकाल में पाषाणकालीन सभ्यता का निर्माण मुण्डा लोगों ने ही किया। जिसका प्रमाण वर्त्तमान तक मुण्डा समुदाय में किया जानेवाला सामाजिक संस्कार ''दिरि रकब'' (पत्थरगड़ी) है। इससे मालूम होता है कि दोनों सभ्यता के निर्माण में ऑस्ट्रिक समुदाय के लागों का हाथ रहा है।

झारखण्ड के सन्दर्भ में मुण्डाओं ने सुतिआम्बे को राजधानी बनाया। मदरा मुण्डा राजा बना। लगभग 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व मुण्डारी भाषा समृद्ध अवस्था में थी। राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए परगना में क्षेत्र विभाजित था। पूरे राज्य में मुण्डारी भाषा का ही प्रयोग, व्यवहार किया जाता था। नतीजा यह हुआ कि अन्य जातियाँ जो मुण्डा नहीं थे, वे भी मुण्डारी भाषा का व्यवहार करते थे। अन्य जातियों में उरांव, बड़ाइक, स्वांसी, तेली, डोम, मुस्लमान आदि। वर्त्तमान में भी ये मुण्डारी भाषा का व्यवहार करते हैं।

3. तुलनात्मक भाषा विज्ञान

भाषा की सूक्ष्मता, एक दूसरे के बीच शब्द रचना, वाक्य, अर्थ, ध्वनि रचना आदि भाषा विज्ञान के रूपों को विस्तृत रूप से अध्ययन करने का मार्ग तुलनात्मक भाषा विज्ञान के द्वारा ही संभव होता है। इसमें भाषा के विकसित रूप तथा अविकसित दोनों रूपों का अध्ययन होता है। भाषा का संरचना किसी

भाषा का दूसरे भाषा के साथ किस तरह समानता और विषमता उत्पन्न करता है। इन सारे बिन्दुओं को आधार में रखकर अध्ययन करना तुलनात्मक भाषा विज्ञान का लक्ष्य है। मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों हसद:, नगुरी, केर: तमड़िया के उदाहरणों में स्पष्ट होता है।

वाक्य द्वारा उदाहरण–

हिन्दी – गाँव के मुण्डा और पहान आए थे।

केर: – हातु रेन मुण्डा अर पहान हेक लेना किन

नगुरी – हातु रेन मुण्डा हडो पहान किन हिजु लेना

तमड़िया – हातु रेन मुण्डा ओडो पान किन हिजु लेना

हसद: – हातु रेन मुण्डा ओड़ो / अर पाड़ किन हिजु लेना

इस तरह से चारों में समानता मिलती है। अन्तर केवल हेक, हिजु, अर, हाडो, ओड़ो में है। चारों के उच्चारण में थोड़ी भिन्नता है जिसे बोलने वालों के मुख से सुनने पर या कम्पयुटर के माध्यम से समझ सकते हैं।

दूसरा उदाहरण–

हिन्दी – सूर्य डूब गया / अस्त हो गया।

केर: – सिंगि डुंगुक् एनक

नगुरी – सिंगि डुबुइ यनए

तमड़िया – सिंगि हसुर जनए

हसद: – सिंगि डुंबुइ / हसुर जनए

केर: को छोड़कर बाकी तीनों रूपों में डुबुइ उवं हसुर का प्रयोग है, परन्तु केर: में ' डुगुक ' का प्रयोग है। इसमें 'ब' के स्थान पर 'ग' और 'इ' के स्थान पर 'क्' आता है। एनए और यनए केर: व नगुरी में समानता है। तमड़िया एवं हसद: में जनए का व्यवहार होता है।

तीसरा उदाहरण–

हिन्दी – रोटी खा गया / रोटी खाया

केर: – पिठा जोम केरय

नगुरी – होलेञ जोम केदय

तमड़िया – लद जोम केदय

हसद: – लद जोम केदए

केर: में रोटी को पिठा एवं नगुरी में होलोञ कहा जाता है। केर: में 'र' ध्वनि की प्रधानता होती है। इसलिए क्रिया के पूर्ण होने में 'र' सहयोगी बनता है। तमड़िया व हसद: में रोटी को 'लद' कहा जाता है। नगुरी के होलोञ और तमड़िया, हसद: के होलोञ में अन्तर होता है। हसद:, तमड़िया में रोटी बनने से पूर्व गुड़ि चूर्ण को ''होलोञ'' कहा जाता है।

शब्द के द्वारा तुलना–

केर:, तमड़िया, नगुरी, हसद:, चारों क्षेत्रीय रूपों के शब्दों में समानता और विषमता दोनों पायी जाती है। भौगोलिक क्षेत्र एवं आर्य, द्रविड़ भाषाओं द्वारा प्रभावित होकर क्षेत्रीय रूपों की बोली में एक ही वस्तु को अलग–अलग नामों से कहा जाता है।

उदाहरण–

हिन्दी	**केर:**	**नगुरी**	**तमड़िया**	**हसद:**
धूप	सितुम	सितुङ	जेटे	जेटे
रोटी	पिटा	होलोङ	लाद	लद
आकाश	बदरि	सिरमा	रिम्बिल	रिम्बिल / लारि
लकड़ी	सहन	सहान	सान	सन
नहाना	उम	उमेन	रेआड़ा	डेबेल
तालाब	पोखइर	पोखरा	बंदा	बंदा
सिर	बोहो	बोहो	बो	बो
खेलना	एने	इनुञ	इनुञ	इनुञ
धान	हुडु	बबा	बबा	बबा
बाजार	पिट	पिट	हाट	पिट
पानी	द:	द:	द:	द:
दरवाजा	दुरा	दुवर	दुवार	दुवर

इसके आलावे और भी ऐसे शब्द है, जो इस चार क्षेत्रीय रूपों को समान या विषम दोनों रूपों में मिलता हैं।

कोश द्वारा तुलना

मुण्डारी भाषा का शब्दकोश जो पाश्चात्य विद्वान फॉदर जॉन हॉफमैन द्वारा बनायी गई है, अधूरे कार्य को पीटर पोनेट ने पूरा किया हैं। शब्दकोश का नाम है–''इन्साइकलोपीडिया मुण्डारिका'' है, जो 16 खण्डों में है। अन्य भाषाओं के शब्दकोशों की तुलना में यह सबसे बड़ा व वृहत्तर है। इसमें प्रत्येक अक्षर का विस्तार वर्णन है। इसके शब्द सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, इतिहास आदि के सबंध को दर्शाते हैं।

इन्होंने हसद: क्षेत्र में रहकर शब्दकोश का निर्माण किया। केर:, नगुरी, शब्दों का भी यथास्थान वर्णन मिलता है पर अधिकांश शब्द हसद: के ही हैं। हसद: को मुण्डारी भाषा का मूल केन्द्र स्थान के रूप में माना जाता है। बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान राँची द्वारा 1973 में ''मुण्डारी हिन्दी शब्दकोश'' प्रकाशित किया गया। यह कार्य श्रीमती स्वर्णलता प्रसाद एवं सहायक निदेशक भाषा तत्व प्रशाखा के निर्देशन में प्रकाशित हुआ। इसें बाद डॉ. मनमसीह मुन्डू ने ''मुण्डारी टुण्डकोढारि'' छापी जो मुण्डारी अंग्रेजी और हिन्दी में दर्शित है। यह शब्दकोश 1995 में छपी। विद्वान भादुड़ी ने ''मुण्डारी इंग्लिश शब्दकोश'' बनाया।

इस तरह मुण्डारी भाषा के शब्दों को सुरक्षित रखने का महान कार्य किया गया। इन तीनों शब्दकोशों में मुण्डारी की चारों क्षेत्रीय रूपों के शब्दों को रखा गया है। कुछ शब्दों के उदाहरण निम्न हैं–

हिन्दी	**केर:**	**नगुरी**	**तमड़िया**	**हसद:**
नहीं	कनोओ	कागि	कागे	कागे
भैंस	कडरू	कडरू	केडा	केड़ा
कुदाली	कुड़ी	कुदाली	कुद्लम	कुदलम
कोल्हु	कुलहु	कुलु	घांडि	गांडि
घड़ा	कुही	चटु	चटु	चटु
केला	केड़ा	केरा	कदला	कदल
बैर	कोयर	दोदड़ी	खोइर	बकअ
गिद्ध	गिद्धि	गिदी	दीदी	गिदि / दीदी

घास	घसड़	तसद	तसद	तसद
टेढ़ा	टेढ़	बंका/गोंजे	गोंजे	बंका
पंख	डेना	इहिल	अपरोब	इल
दरवाजा	दूरा	दुवर	दुवार	दुवर
पागल	पगला	बम्बर	कोंका	बलु
पत्तल	पतल	खलगी	कालुउ	कलुउ
कबूत्तर	पेरवा	पेरोआ	पराय	टुटुमल / पराय
छोटा भाई	बोकोए	उण्डिञ	हुड़िञ हगा	बोको
स्नान करना	उमोओ	उमेन	रेड़ान	डेबेल

निष्कर्ष

भारत में आदिवासी भाषाओं के अध्ययन पर अभी तक विशेष जोर नहीं दिया गया है। औपनिवेशिक शासन काल की तुलना में स्वतंत्र भारत में इस दिशा में तुलनात्मक रूप से अत्यंत कम काम हुआ है। हालांकि अध्ययन का क्रम जारी है फिर भी मुण्डारी सहित सभी भाषाओं के विविध पक्षों एवं आयामों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया जाना शेष है। अब तक के अध्ययनों में आदिवासी भाषा के मूल रूपों पर ही विचार हो सका है उनके क्षेत्रीय रूपों अथवा उपशाखाओं पर विद्वानों का बहुत अधिक ध्यान नहीं जा पाया है। इसीलिए मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों पर भी विस्तृत एवं स्वतंत्र भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का अभाव है।

मुण्डारी भाषा के चार क्षेत्रीय रूप या उपशाखाएँ हैं, हसद:, नगुरी, केर: एवं तमड़िया। चारों रूपों के भौगोलिक क्षेत्र हैं। राँची शहर के आसपास केर: मुण्डारी बोली जाती है, जो उराँव व मुण्डा समुदायों के बीच प्रचलित है। हसद: मुण्डारी वर्त्तमान खूँटी जिला के अन्तर्गत मुरहू प्रखण्ड, अड़की प्रखण्ड के पश्चिमी दक्षिणी भाग एवं सिंहभूम जिला के बंदगाँव प्रखण्ड के मध्य क्षेत्रों में बोली जाती है। अड़की प्रखण्ड का पूर्वी भाग तमाड़, बुन्डू, राहे, सोनाहातु प्रखण्ड के क्षेत्रों में तमड़िया मुण्डारी या लतर मुण्डारी का व्यवहार होता है। इन क्षेत्रों में पंचपरगनिया व बांग्ला मिश्रित बोली का प्रचलन है। नगुरी खूँटी जिला

से पश्चिम की ओर बोली जाती है। किसी भी भाषा की भाषिक संरचना को समझने के लिए भाषा विज्ञान के अंग जिनमें ध्वनि, रूप, पद, वाक्य, अर्थ, कोश आदि होते हैं, के आधार पर उसे देखने की आवश्यकता है। मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों–हसद:, नगुरी, केर: और तमड़िया की भाषिक संरचनाओं को भाषा विज्ञान की सभी शाखाओं, यथा–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, सामाजिक सांस्कृतिक भाषा विज्ञान के आधार पर अध्ययन में हम पाते हैं कि 1. मुण्डारी भाषा में ह्रस्व स्वर का प्रयोग अधिक होता है। साथ ही अल्पप्राण व्यंजनों का प्रयोग भी अधिक होता है। किन्तु जोर देकर कहने पर, गुस्से से व गाली देने के क्रम में महाप्राण रूपों का भी प्रयोग मुण्डारी भाषा में होता है। 2. मुण्डारी वाक्य को हिन्दी और अंग्रेजी के नियम के आधार पर लिखकर या उससे हटकर प्रस्तुत / लिखने पर भी अर्थ में कोई परिवर्त्तन नही होता है। इस तरह मुण्डारी के एक ही वाक्य को चार दृष्टियों से कहा जाता है, किन्तु इसके अर्थ में कोई परिवर्त्तन नहीं होता है। व्यवहार में सभी रूप मुण्डारी भाषा में मिलते हैं। मुण्डारी भाषा की विशेषता है कि मूल शब्द में बिना परिवर्त्तन किये संज्ञा, प्रत्यय, उपसर्ग, समाज, क्रिया विशेषण आदि पाए जाते हैं।

हसद: मुण्डारी में ह्रस्व की प्रधानता होती है। दीर्घत्व का प्रयोग आंशिक रूप में ही होता है। केर: मुण्डारी में दीर्घता से शब्दारम्भ होता है। इसमें आर्य भाषाओं से आगत शब्दों का प्रयोग अधिक मिलता है। तमड़िया मुण्डारी में बांग्ला, हिन्दी, पंचपरगनिया बोलियों का प्रभाव मिलता है, इसलिए उच्चारण में 'ओ' की प्रधानता रहती है। नगुरी–सादरी / नागपुरी से प्रभावित क्षेत्र की मुण्डारी भाषा के उच्चारण एवं शब्दों में केर: मुण्डारी की तरह दीर्घत्व पायी जाती है।

इस तरह मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों के तुलनात्मक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बहुत सारे शब्द एक समान है, पर कुछ में विषमता है। इसका कारण अन्य सम्पर्क भाषाओं का प्रभाव है। फिर भी मुण्डारी भाषा की समानता चारों रूपों में है।

उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है और सार्थकता की दृष्टि से शब्द। ध्वनि सार्थक हो ही, यह आवश्यक नहीं है, जैसे–अक क च ट प त आदि ध्वनियां तो हैं, किन्तु सार्थक नहीं। किन्तु, अब, कब, चल,

टल, तल, पल आदि शब्द हैं, क्योंकि इनमें सार्थकता है, अर्थात् अर्थ देने की क्षमता है। अत: सभी ध्वनियों को दो वर्गों–सार्थक अथवा निरर्थक में रखा जा सकता है। साथ ही संसार की अन्य भाषाओं की तरह मुण्डारी भाषा में भी शब्द रचना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास, पुनरूक्ति आदि मौजूद है। शब्द रचना के निर्माण में उपसर्ग की महत्ता होती है। मुण्डारी भाषा में भी विभिन्न प्रकार के शब्दों को जोड़कर शब्द रचना की जाती है। ध्वनियों के जुड़ाव से बने सार्थक वर्ण या वर्णों से निर्मित समुदाय को शब्द कहते हैं। मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में शब्द के तीन रूप मिलते हैं–(1) मूल शब्द (2) अन्य भाषाओं (आर्य) से आगत शब्द और (3) नया शब्द / नवनिर्मित शब्द।

मुण्डारी के मूल शब्द आदिकाल से हूबहू प्रयोग में लाये जा रहे हैं और इनमें वर्त्तमान समय में भी कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ है। मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों में अन्य भाषाओं से कई शब्द आये हैं। आगत अब ये शब्द मुण्डारी के ही हैं, किन्तु संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी में भी समान रूप से इस्तेमाल में लिये जा रहे हैं। आदिकाल से वर्त्तमान काल के मध्य मुण्डारी भाषा एवं समुदाय का इतिहास उतार–चढ़ावों वाला रहा है। वर्त्तमान परिवेश के हिसाब से मुण्डारी भाषा में कई शब्द जरूरत के अनुसार निर्मित किये गये हैं एवं व्यवहार में लाये जाते हैं। इसकी प्रक्रिया भाषायी विकास एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है तथा शब्दों के निर्माण और उसके अंगीकार की प्रक्रिया निरंतर जारी है। नगुरी, केर: और तमड़िया में आर्य भाषा से आगत शब्दों का व्यवहार अधिक किया जाता है। बावजूद भी समास के सारे रूपों का उदाहरण मिलता है। मुण्डा भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों की शब्द संरचना लगभग एक–सी है। हसद:, केर:, तमड़िया और नगुरी में व्याकरणगत भेद नहीं हैं।

हिंदी और अन्य आर्यभाओं की ही तरह मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में भी चार प्रकार के संज्ञा शब्द हैं। हिंदी के पृथक मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में व्याकरणगत लिंग भेद नहीं होता। उदाहरण के लिए, हिंदी में जिस तरह हम आकारान्त पुलिंग शब्दों के बाद ई, (लड़का लड़की) इत्यादि जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाते हैं तथा जिस तरह लिंग के साथ ही क्रिया रूप में बदलते हैं लड़का जाता है लड़की जाती है उस तरह के व्याकरणगत रूप रचनात्मक परिवर्तन मुण्डारी में नहीं होते। मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में स्त्रीलिंग और पुलिंग दोनों के लिए एक ही क्रिया रूप लागू होता है। चारों क्षेत्रीय रूपों में उभयलिंग

शब्दों में लिंग निर्णय कोड़ 'पुरुष' 'स्त्री' के प्रत्ययात्मक प्रयोग द्वारा होता है। शाब्दिक स्तर पर कुछ और जीववाचक शब्द हैं जिनमें मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में नैसर्गिक लिंग भेद दिखाई देता है। चारों क्षेत्रीय रूपों में केवल पारिवारिक संदर्भ में प्रयुक्त होनेवाले कुछ शब्द हैं जिनमें नैसर्गिक लिंग भेद देखने को मिलता है। मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में दो प्रकार के विधि रूप होते हैं। क. आकांक्षा बोधक और ख. आज्ञा बोधक। इस प्रकार हम पाते हैं कि मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों हसद:, नगुरी, केर: और तमड़िया की शब्द संरचना में विशेष अंतर नहीं है। केवल भौगोलिक अथवा स्थान परिवर्तन से उनमें थोड़ा अंतर आ गया है।

प्रत्येक भाषा के कुछ आधारभूत वाक्य होते हैं। उन्हीं से वाक्यों का निर्माण होता है। मुण्डारी भाषा में आधारभूत वाक्य रचना के लिए निम्नलिखित छ: प्रकार के शर्तों का पालन करना पड़ता है–(1) योजी क्रिया–युक्त (2) अकर्मक क्रिया–युक्त (3) सकर्मक क्रिया–युक्त (4) अप्रत्यक्ष क्रिया–युक्त (5) बाध्यता बोधक क्रिया–युक्त और (6) औचित्य बोधक क्रिया–युक्त।

मुण्डारी भाषा पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि इसके चारों क्षेत्रीय रूपों की अर्थ संरचना लगभग समान है। हिन्दी की तरह मुण्डारी भाषा में भी आठ प्रकार के अर्थों का प्रयोग होता है। मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों में भी अर्थ संरचना का मूल आधार मुख्यार्थ, वाच्यार्थ या अभिधार्थ है। किसी भी भाषा में सबसे अधिक प्रयोग इसी अर्थ का होता है। स्वाभाविक है कि मुण्डारी भाषा में भी मुख्यार्थ का प्रयोग अधिक दिखायी देता है। इस तरह मुण्डारी भाषा के सभी क्षेत्रीय रूपों एवं उसकी उपभाषाओं के मुहावरों में लक्ष्यार्थ की भरमार है, जो अर्थ संरचना में काफी सहयोग करता है।

भाषा का संरचना किसी भाषा का दूसरे भाषा के साथ किस तरह समानता और विषमता उत्पन्न करता है। इन सारे बिन्दुओं को आधार में रखकर अध्ययन करना तुलनात्मक भाषा विज्ञान का लक्ष्य है। तुलनात्मक दृष्टि से मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों हसद:, नगुरी, केर: तमड़िया में अत्यंत समानता है। अन्तर केवल हेक, हिजु, अर, हाडो, ओड़ो में है। चारों के उच्चारण में थोड़ी भिन्नता है जिसे बोलने वालों के मुख से सुनने पर या कम्पयुटर के माध्यम से समझ सकते हैं।

केर: को छोड़कर बाकी तीनों रूपों में डुबुइ उवं हसुर का प्रयोग है, परन्तु केर: में ' डुगुक ' का प्रयोग है। इसमें 'ब' के स्थान पर 'ग' और 'इ' के स्थान पर 'क्' आता है। एनए और यनए केर: व नगुरी में समानता है। तमड़िया एवं हसद: में जनए का व्यवहार होता है। केर: में रोटी को पिठा एवं नगुरी में होलोञ कहा जाता है। केर: में 'र' ध्वनि की प्रधानता होती है। इसलिए क्रिया के पूर्ण होने में 'र' सहयोगी बनता है। तमड़िया व हसद: में रोटी को 'लद' कहा जाता है। नगुरी के होलोञ और तमड़िया, हसद: के होलोञ में अन्तर होता है। हसद:, तमड़िया में रोटी बनने से पूर्व गुड़ि चूर्ण को ''होलोञ'' कहा जाता है।

केर:, तमड़िया, नगुरी, हसद:, चारों क्षेत्रीय रूपों के शब्दों में समानता और विषमता दोनों पायी जाती है। भौगोलिक क्षेत्र एवं आर्य, द्रविड़ भाषाओं द्वारा प्रभावित होकर क्षेत्रीय रूपों की बोली में एक ही वस्तु को अलग–अलग नामों से कहा जाता है।

इसी तरह जब हम अभी तक प्रकाशित मुण्डारी शब्दकोषों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि इनमें मुण्डारी के चारों क्षेत्रीय रूपों को स्थान दिया गया है। हालांकि सभी मुण्डारी शब्दकोषों में हसद: मुण्डारी के शब्द सबसे ज्यादा हैं।

संदर्भ

1. देवेन्द्रनाथ शर्मा एवं दीप्ति शर्मा–भाषा विज्ञान की भूमिका, पृष्ठ 176
2. देवेन्द्र नाथ शर्मा दीप्ति शर्मा–भाषा विज्ञान की भूमिका, पृष्ठ 222
3. डॉ. मनसिंह बडायउद, नवा होड़ो जगर मुंडि,
4. डॉ. रामदयाल मुण्डा, 'मुण्डारी व्याकरण' पृष्ठ सं–
5. डॉ. रामदयाल मुण्डा–मुण्डारी व्याकरण, पृष्ठ 65
6. डॉ. कर्ण सिंह–भाषा विज्ञान, पृष्ठ 270
7. देवेन्द्र नाथ शर्मा दीप्ति शर्मा–भाषा विज्ञान की भूमिका, पृष्ठ 185
8. साक्षात्कार–श्री शिवलाल किस्कू ''मुरूतबाहा''

तृतीय अध्याय

मुण्डारी भाषा का मानक स्वरूप एवं अन्तरक्षेत्रीय भाषिक संबंध

1. भाषा लेखन परम्परा

आदिवासी भाषाओं के लेखन की शुरुआत असंदिग्ध रूप से ब्रिटिश शासकों, पाश्चात्य भाषाविदों एवं मानववैज्ञानिकों द्वारा औपनिवेशिक काल में हुई। उन्होंने ही सर्वप्रथम नृवंशीय अध्ययन के क्रम में विभिन्न आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के लोक साहित्य का संकलन किया और उन्हें रोमन लिपि में प्रकाशित कराया। भारतीय मानवविज्ञानियों में शरत चंद्र राय का नाम प्रमुख है। इसके बाद ही भारतीय विद्वानों का ध्यान इधर गया और उसके बाद अनेक पुस्तकें सामने आई। ईसाई मिशनरियों के शिक्षण प्रयासों के फलस्वरूप जब झारखंडी आदिवासी पढ़े–लिखे तब उन्होंने अपनी भाषा में लिखना शुरु किया। आजादी के आसपास तक अधिकांश लेखन रोमन लिपि, कैथी लिपि, बंगला, उड़िया लिपि में ही आदिवासी भाषाओं को लिखा गया। आजादी के बाद देवनागरी का प्रचलन बढ़ा और भाषा–साहित्य लेखन में भी तेजी आई।

मुण्डारी भाषा को लिखित रूप देने की शुरुआत, तमाड़ राजदरबार में गायक के रूप में नियुक्त बुधनाथ शिखर ने की, जो रामभक्ति और कृष्णभक्ति विषय पर मुण्डारी भाषा में गीतों की रचना व प्रस्तुति किया करते थे। इन गीतों में प्रसिद्धि के कारण उनको बुदु बाबु कहा गया। उनके कंठ में माधुर्य भरा था। यह समय 1830 ई. के आस पास की है जब वैष्णों धर्म का प्रचार प्रसार करते

हुए चैतन्य महाप्रभु बंगाल के निकटवर्ती पंचपरगना (झारखंड) क्षेत्र में आए। उनका प्रभाव मुण्डारी भाषा एवं साहित्य पर भी पड़ा। 1845 ई. में ईसाई मिशनरी यहाँ पहुँचे। अंग्रेज शासक पहले ही यहाँ आ चुके थे। शासन की सुविधा एवं धर्म प्रसार के लिए उन्होंने यहाँ की भाषाओं का अध्ययन किया। शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया ताकि वे बाइबल एवं ईसाई धार्मिक सुसमोचार स्वंय पढ़ समझ सकें। मिशनरियों ने लगातार यहाँ की भाषाओं पर काम किया। इस दृष्टिकोण से मुण्डारी भाषा को लिखने की प्रक्रिया को तीन भागों में बाँटकर अध्ययन किया जा सकता है–

(1) पाश्चात्य विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन

(2) भारतीय विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन

(3) मुण्डा समुदाय के विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन

1. पाश्चात्य विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन

पाश्चात्य विद्वानों ने झारखण्ड में रहकर यहाँ की भाषाओं पर विस्तृत अध्ययन किया। लक्ष्य व कारण जो भी रहा हो, लेकिन उन्होंने न केवल मुण्डारी भाषा का बल्कि कुडुख, हो, संताली, खड़िया आदि भाषाओं का अध्ययन किया। इस क्रम में मुण्डारी भाषा से सबंधित निम्नलिखित पुस्तकें सामने आई–

1871 ई. में नोत्रोत ने ''मुण्डा इतुन पुथि''

1873 ई. में हिटली जे. सी. ने ''मुण्डारी प्रइमर''

1891 स्मिट ने ''रूडिमेन्ट ऑफ ए मुण्डारी ग्रामर''

1893 स्मिट ने ''ए मुण्डारी फस्ट रीडर''

1903 फा. जॉन हॉफमैन ने ''मुण्डारी ग्रामर ''

1911 के. डब्ल्यु. एस केनेडी एवं नोत्रोत ने मुण्डारी में

1917 रेभ. जे. सी ह्विटली ने ''किंडर गारटेन दुरञ''

1905 नोत्रेत ए ने ''ग्रामर ऑफ द कोल लैग्वेज''

1942 डब्ल्यू जी आर्चर ने ''मुण्डा दुरङ''

1928 फा. जॉन हॉफ मैन ने ''इन्साइकलोपीडिया मुण्डारिका''

(क) ''बइअँकिर पुथि''

(ख) ''होड़ो जगर मुडि''

1941 जयपाल सिंह मुण्डा ''फुदि इनुञ अइन जगर''

1961 भैयाराम मुण्डा–''दंडा जमाकन होड़ो कऩि को''

1965 बलदेव मुण्डा–''चंगा दुरञ''

1966 दुलायचन्द्र मुण्डा–''सुड़ा संगेन''

1967 डॉ. रामदयाल मुण्डा–'सेलेद'

1968 डॉ. रामदयाल मुण्डा–''प्रोटोखेरवारियन फोनेटिक सिस्टम''

1969 डॉ. रामदयाल मुण्डा–''ऑस्पेक्ट ऑप मुण्डारी वर्व''

1970 प्रो. सुलेमान बडिञ–''नइमिअ किमनते''

1970 डॉ. दिलवर हंस–''होड़ो ससंकिर बम्बरू''

1974 डॉ. रामदयाल मुण्डा–''मुण्डारी गीतकार बुदु बाबु प्रीतपाला एवं रामायण पाला''

1977 सागु हंस–''मुण्डा कोअ इतिहास''

1978 प्रो. दुलायचन्द्र मुण्डा–''बम्बरू''

1980 डॉ. रामदयाल मुण्डा अमिता, नलिन–

(क) ''एअ नव कनि को''

(ख) मुण्डारी पाठ

1980 डॉ. मनमसीह मुन्डू–''मुण्डा कुदूम ओड़ो सोलको''

1980 डॉ. काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे'–''गुइरम''

1984 मेनस राम ओड़ेया– ''मतुराअ कनि'' भाग 1

1986 मेनस राम ओड़ेया– ''मतुराअ कनि'' भाग 2

1988 मेनस राम ओड़ेया– ''मतुराअ कनि'' भाग 3

1989 मेनस राम ओड़ेया– ''मतुराअ कनि'' भाग 4

1989 मेनस राम ओड़ेया– ''मतुराअ कनि'' भाग 5

तृतीय अध्याय

मुण्डारी भाषा का मानक स्वरूप एवं अन्तरक्षेत्रीय भाषिक संबंध

1. भाषा लेखन परम्परा

आदिवासी भाषाओं के लेखन की शुरुआत असंदिग्ध रूप से ब्रिटिश शासकों, पाश्चात्य भाषाविदों एवं मानववैज्ञानिकों द्वारा औपनिवेशिक काल में हुई। उन्होंने ही सर्वप्रथम नृवंशीय अध्ययन के क्रम में विभिन्न आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के लोक साहित्य का संकलन किया और उन्हें रोमन लिपि में प्रकाशित कराया। भारतीय मानवविज्ञानियों में शरत चंद्र राय का नाम प्रमुख है। इसके बाद ही भारतीय विद्वानों का ध्यान इधर गया और उसके बाद अनेक पुस्तकें सामने आई। ईसाई मिशनरियों के शिक्षण प्रयासों के फलस्वरूप जब झारखंडी आदिवासी पढ़े–लिखे तब उन्होंने अपनी भाषा में लिखना शुरु किया। आजादी के आसपास तक अधिकांश लेखन रोमन लिपि, कैथी लिपि, बंगला, उड़िया लिपि में ही आदिवासी भाषाओं को लिखा गया। आजादी के बाद देवनागरी का प्रचलन बढ़ा और भाषा–साहित्य लेखन में भी तेजी आई।

मुण्डारी भाषा को लिखित रूप देने की शुरुआत, तमाड़ राजदरबार में गायक के रूप में नियुक्त बुधनाथ शिखर ने की, जो रामभक्ति और कृष्णभक्ति विषय पर मुण्डारी भाषा में गीतों की रचना व प्रस्तुति किया करते थे। इन गीतों में प्रसिद्धि के कारण उनको बुदु बाबु कहा गया। उनके कंठ में माधुर्य भरा था। यह समय 1830 ई. के आस पास की है जब वैष्णों धर्म का प्रचार प्रसार करते

मुण्डारी भाषा में पत्र–पत्रिकाओं का भी प्रकाशन हो रहा है।

2. लिपि समस्या

''लिपि वह माध्यम है जिसके सहारे भाषा काल तथा स्थान की सीमा के बंधन को पार कर जाती है।'' [1]

मुण्डा भाषा में अपनी सरलता और मनोहर विशेषताओं से भरा हुआ, गीतों, कहानियों और कहावतों आदि के रूप में प्रचुर साहित्य है। पर यह सारा साहित्य अभी तक मौखिक अवस्था में रहा है। मिशनरियों के आगमन से पूर्व तक के अपने सारे लम्बे इतिहास में, मुण्डा जाति कभी भी विकास की उस अवस्था में नहीं पहुँचने पाई है, जब मानसिक अभिव्यक्तियाँ लिपियों में आबद्ध कर उतारी जाती हैं। अस्तु, उनका सारा लिपि–विहीन साहित्य अभी तक मौखिक परम्परा के यान पर चढ़कर लम्बे युगों की दूरी तय करता आया है।[2]

लिपि किसी भी भाषा या बोली को लिखित रूप प्रदान कर उसे कालजयी बनाने का ऐतिहासिक कार्य करती है। वाचिक परम्परा की अनगढ़ता को तराशकर उसे शिष्ट रूप देती है और स्थायित्व प्रदान करती है। लिपि के द्वारा व्यक्ति अपनी ध्वनिभाषा को लिखित भाषा में बदलता है और अपनी अभिव्यक्ति से पीढ़ियों तक अपने अनुभव, विचार और व्यक्तिगत रूप से अर्जित ज्ञान को समृद्ध करता है। सामाजिक विकास के लिए और ज्ञान की साझेदारी के लिए यह एक महती सामाजिक दायित्व है जिसे व्यक्ति लिपि के द्वारा ही पूरा कर पाता है।

वाचिक परम्परा की अपनी सीमाएँ हैं। उन सीमाओं को इंसानी समाज ने आदिकाल में ही चिन्हित कर लिया था। इसीलिए उसने लिपि के आरंभिक काल में विभिन्न ध्वनियों, संकेतों, वस्तुओं के विशेष उपयोगों और चित्रों का ईजाद किया। आगे चलकर अभिव्यक्ति के इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप चित्रलिपि का विकास हुआ। हड़प्पा से लेकर झारखंड की दामोदर घाटी में मिली चित्रलिपियाँ इंसान की अभिव्यक्ति की छटपटाहट को बताने के लिए काफी है। झारखंड के दामोदर बेसिन में उत्तरी कर्णपुरा क्षेत्र में प्राप्त चित्रलिपि के इन अवशेषों के बारे में अशोक पागल ने लिखा है–''शताधिक सांकेतिक चित्रलिपियों का यह सघन कार्य हजारों वर्षों की कालावधि में फैले मानवसभ्यता और संस्कृति के सम्पूर्ण कथावृत को प्रस्तावित करता है। '' [3] (देखें परिशिष्ट 5) पर यह पर्याप्त नहीं था। इंसान ने अपने प्रयासों को और गति दी और

अंततः वह अक्षरों के अविष्कार में सफल हुआ। वाचिक परम्परा से अक्षर परम्परा तक की यह अथक सृजनशील विकासयात्रा इंसानी समाज की एक बड़ी उपलब्धि है। इसके बिना ज्ञान की इतनी लम्बी साझेदारी संभव नहीं थी। झारखंडी भाषाओं की लिपियों का विकास इसी अभिव्यक्ति श्रृंखला की कड़ी है। परंतु भाषा–व्यवहार के लम्बे कालखण्ड एवं वाचिक परंपरा की सीमाओं के कारण लिपि समस्या एक जटिल समस्या बन कर खड़ी है, जिससे झारखंडी भाषाएँ फिलवक्त जूझ रही हैं।

अन्य आदिवासी भाषाओं की तरह मुण्डारी भाषा का लेखन की शुरुआत भी पाश्चात्य व भारतीय विद्वानों ने रोमन लिपि में किया। कुछ भारतीय विद्वानों ने देवनागरी लिपि का प्रयोग किया है। झारखंड–बिहार के मुण्डा समुदाय के विद्वानों ने देवनागरी लिपि में लिखा है एवं लिख रहे हैं। जबकि पश्चिम बंगाल में बंगला तथा उड़ीसा में उड़िया भाषा में लिखा जा रहा है। इससे सही एवं शुद्ध लेखन की समस्या उठ खड़ी हुई है। क्षेत्रीय एवं व्यक्तिगत आग्रह लिपि के सवाल पर आपस में टकरा रहे हैं। यह समस्या सभी झारखंडी भाषाओं की है। ध्वनिगत विशेषता के कारण आदिवासी भाषाविद् देवनागरी, रोमन एवं अन्य लिपियों को असमर्थ बता रहे हैं और उनका जोर अपनी–अपनी लिपि पर है। इस सदी के पांचवें–छठे दशक में लिपि का आग्रह के जोर पकड़ने से पांचों प्रमुख आदिवासी भाषाओं–मुण्डारी, संताली, कुड़ुख, खड़िया और हो–में लिपियों का निर्माण हुआ। (देखें परिशिष्ट 6 से 10)

संताली भाषा–संस्कृति के अगुआ पं. रघुनाथ मुर्मू ने इसके लिए भारतीय स्वतंत्रता के आसपास एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन को जन्म दिया। उन्होंने भाषा–संस्कृति और आदिवासी धर्म के आधार पर आदिवासी समाज को संगठित होने का अभियान संचालित किया। अभिव्यक्ति और लेखन समस्या को हल करने के लिए पं. रघुनाथ मुर्मू ने मुण्डा समूह की सभी भाषाओं में एकरूपता लाने के लिए एक लिपि ''मुण्डारी पारसी'' का भी प्रस्ताव किया। दुर्भाग्य से उनके इस प्रस्ताव को खड़िया, हो एवं मुण्डा आदिवासी समुदायों ने प्रोत्साहित नहीं किया और न ही वे उनके सांस्कृतिक पुनर्जागरण का हिस्सा बने। नतीजतन रघुनाथ मुर्मू का सांस्कृतिक आंदोलन संताल समुदाय तक सीमित होकर रह गया। इस संबंध में अश्विनी कुमार पंकज लिखते हैं–''उन्होंने सिर्फ संताली नहीं, बल्कि मुण्डा परिवार की तमाम भाषाओं के लिए मुण्डारी पारसी लिपि की रचना की थी। निज भाषा के उत्थान के लिए वे जिस सवाल से जूझ

रहे थे वह सवाल सभी आदिवासी भाषाओं का था। इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि मुण्डा भाषा के अन्य समुदायों ने इसे नहीं अपनाया और वह केवल संतालों की लिपि 'ओलचिकि' बन कर रह गई।'' [4]

इसके बाद 'हो' समुदाय के गुरु लाको बोदरा ने भी लिपि का आंदोलन आरंभ किया। उनके प्रयासों को हो समुदाय में स्वागत हुआ और इस तरह लाको बोदरा द्वारा रचित लिपि 'वारंगक्षिति' हो भाषा के लिए समाज ने स्वीकृत कर ली।

संताल एवं हो आदिवासी समुदायों के अतिरिक्त खड़िया, मुण्डा और उरांव भाषाप्रेमियों एवं विद्वानों ने भी इस दिशा में प्रयास किया। इन प्रयासों के फलस्वरूप मुण्डारी लिपि, खड़िया लिपि और उरांवों की 'तोलोंगसिकि' लिपि सामने आई। (देखें परिशिष्ट 6 से 10) पर इन लिपियों को समाज में स्वीकृति नहीं मिली और इनका इस्तेमाल लेखन में नहीं हो रहा है। व्यापक तौर पर इस्तेमाल होनेवाली लिपियाँ संतालों की 'ओलचिकि' और 'हो' लोगों की 'वारंगक्षिति' ही है। इसमें भी सबसे ज्यादा अपनी लिपि का इस्तेमाल संताल लोग कर रहे हैं।

मुण्डा, खड़िया और उरांव समुदाय के लोगों के द्वारा सर्वाधिक प्रयोग की जानेवाली लिपि देवनागरी ही है। देवनागरी लिपि के इस्तेमाल में कुछ कठिनाईयां तो अवश्य हैं, लेकिन थोड़े बहुत संशोधनों के बाद यह पूर्ण रूप से आदिवासी भाषाओं को अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम है। इसलिए इन समुदायों के रचनाकार देवनागरी में ही लिख रहे हैं। देवनागरी समर्थकों का कहना है कि कोई भी लिपि किसी भी भाषा को हूबहू व्यक्त नहीं कर सकती है। लिखने के क्रम में कई तरह के समझौते करने ही पड़ते हैं। दुनिया की समर्थ से समर्थ भाषाओं की लिपियों में भी अक्षमता है। कोई भी लिपि पूरी तरह से पूर्ण नहीं होती है।

मुण्डारी भाषा को खड़िया एवं कुड़ुख भाषाओं की तरह ही वर्तमान में देवनागरी लिपि में लिखा जा रहा है और अब यह सर्वमान्य लिपि के रूप में स्वीकृत हो चुकी है। झारखंड के विश्वद्यालय एवं महाविद्यालयों में देवनागरी का ही प्रयोग किया जा रहा है। मुण्डारी भाषा को देवनागरी में लिखने के प्रारम्भिक दिनों में इसके लेखन में संस्कृत की तरह हलन्त और विसर्ग चिन्हों का प्रयोग अधिक किया हुआ करता था। अब यह समस्या सुलझ जाने के

करीब है। इससे मुण्डारी भाषा के मानकीकरण के प्रयासों में सफलता मिली है।

कई मुण्डारी भाषाविदों एवं लेखकों का मानना है कि रोमन लिपि से मुण्डारी भाषा को मानक रूप बनाना कठिन है। चूँकि मुण्डा भाषाभाषी समुदाय में अंग्रेजी का प्रचलन नहीं है। इसलिए इससे लिपि समस्या और मानकीकरण का हल नहीं निकाला जा सकता है। आम लोगों तक रोमन लिपि से लिखित सामाग्री को आसानी से पहुँचाना, समझाना व अंगीकार करवा पाना मुश्किल है। झारखण्ड राज्य मुण्डा समुदाय बहुल क्षेत्र है। यहाँ की शिक्षण विधि में देवनागरी लिपि अपनायी जाती है। इसलिए देवनागरी लिपि से ही भाषा का विकास, व्याकरण एवं मानक स्वरूप संबंधी समस्याओं का निराकरण संभव है। मैने भी इसीलिए अपने अनुसंधान में देवनागरी लिपि से मुण्डारी भाषा में लिखी हुई पुस्तकों को ही आधार बनाया है, जिससे कि मुण्डारी भाषा का मानक रूप तैयार करने में सहुलियत हो सके।

3. मानक स्वरूप का निर्धारण

मुण्डारी भाषा को मानक रूप बनाने के लिए व्याकरण की रचना की गई है। सभी व्याकरणों में कुछ अंतर है। यह अंतर मुण्डारी के क्षेत्रीय रूपों के कारण दिखायी देता है। पर ये अंतर इतने बड़े नहीं हैं जिससे कि मुण्डा भाषा को मानक स्वरूप प्रदान नहीं किया जा सके। भाषायी चेतना के उदय और विस्तार के साथ–साथ समुदाय के लेखकों, भाषाविदों एवं विद्वानों में मानकीकरण को लेकर विमर्श तेज हुआ है। इसके लिए कई राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण शिविरों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। फिर भी अभी तक मानकीकरण के प्रयास को पूर्णरूपेण सफलता नहीं मिल पायी है।

कई विद्वानों ने अपने–अपने व्याकरणों के माध्यम से मानकीकरण के संबंध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा लिखित व्याकरणिक विशेषताओं को तुलनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

मुण्डा समुदाय के विद्वानों द्वारा निर्मित मुण्डारी व्याकरण के वर्णमाला का तुलनात्मक अध्ययन

(1) 1940 ई. में निरमल सोय की व्याकरण पुस्तक ''होड़ो जगर मुंडि'' प्रकाशित हुई है। इसमें मुण्डारी भाषा के स्वर व व्यंजन वर्णो को इस तरह

दिखाया गया है–

मुनू बनी (स्वर वर्ण)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ = 11 (ग्यारह)

दिंगाए मुनु (अल्प स्वर) **इकिर मुनु (दीर्घ स्वर)**

अ इ उ ऋ आ ई ऊ ऐ ओ औ

बोंजा बनी (व्यंजन वर्ण)

क ख ग घ ड़–क तोक

च छ ज झ ञ–च तोक

ट ठ ड ढ़ ण– ट तोक

त थ त द ध न–त तोक

प फ ब भ म–प तोक

य र ल व –बितर बनी

श ष स ह–अदिग बनी

ड ढ़–मूहोर

अं :

व्यंजन वर्णों को उन्होंने कुल 37 माना है।[1] वे मानते हैं कि मुण्डारी भाषा को लिखने में इस बात को ध्यान में रखना चाहिए–

(क) श, ष और ढ़ का प्रयोग नहीं करते हैं।

(ख) विसर्ग और हलन्त के प्रयोग पर जोर देते हैं।

जैसे–अएअः = उसका, मअः = काटना,

तिः = हाथ, केचः = फाड़ना,

ओड़ः = घर, पुरअः = अधिक,

नाः = अभी,

(–) मद् = बाँस, लद् = रोटी,

एत्का = खराब, सब् = पकड़ना,

(2) इसी सम्बन्ध में निकोदिम केरकेट्टा 'सलायन' [5] ने अपनी व्याकरण पुस्तक 'बइअँकिर' में मुण्डारी स्वर और व्यंजन वर्णों को निम्नवत् माना है–

स्वर वर्ण–

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः ऐ औ = (14)

दिंगअः ए मुनु (अल्प स्वर)	**जिलिङ मुनु (दीर्घ स्वर)**
अ इ उ ए	आ ई ऊ ए ओ ऐ
ओ अं अः	औ
अल्पमात्रिक स्वर	**दीर्घमात्रिक स्वर**
अ––	आ–ा
इ–ि	ई–ी
उ–ु	ऊ–ू
ए–े	ओ–ो
ओ–ो	ऐ–ै
अं–ँ	औ–ौ
अः–:	

व्यंजन वर्ण–

क ख गा घ ड़ = क तोक

च छ ज झ ञ = च तोक

ट ठ ड ढ ण = ट तोक

त थ द ध न = त तोक

प फ ब भ म = प तोक

य र ल व स ह ड़ ढ़

उन्होंने व्यंजन वर्णों को कुल (33) माना है। [6]

रबल बनि (अल्पप्राण)	**हमबल बनि (महाप्राण)**
क ग ड च ज	ख घ छ झ

ञ ट ड ण त ठ ढ थ ध

द न प ब म फ भ ढ

य र ल व म

ह ड़

(3) मुण्डारी भाषा के विद्वान डॉ. मनमसीह मुन्डू ने ''टुण्डकोढ़ारि'' में मुण्डारी भाषा के स्वर एवं ब्यंजन वर्णो का उल्लेख किया है, जो निम्न है [7]-

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	—	ा
ि	ी	ु		ृ	ए	ऐ	ओ
औ	अं		अः	ॅ	ा	ै	.

: ' ै' के स्थान पर 'अउ' लिखा है।

कुल–(12) स्वर

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ड़
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	स
ह	ड़	ढ़		

कुल (33) व्यंजन वर्ण

उन्होंने निम्न विशेषताओं को बताया है–

(1) मुण्डारी भाषा में सिर्फ 'स' का प्रयोग किया जाता है। हसादाअ बोली नरम होने के कारण ख, घ, छ झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, म ढ का प्रयोग नही किया जाता है। लेकिन क्रोध अवस्था में थमि पेआ सेथा के = मारो साले कुत्ते को । ठेर ली पे = पत्थर मारो आदि कहा जाता है। नगुरी बोली में सभी का व्यवहार होता है।

(2) ि (इ) का प्रयोग अधिक होता है, जैसे–

उरि = गाय,	आड़न्दि = विवाह,
कमि = काम,	कुड़ि = लड़की / औरत,
पचरि = दिवाल	सिंगि = सूर्य,
मंड़ि = धीरे,	मंडि = भोजन,

(3) दीर्घत्व का प्रयोग होता है, यथा–

ईतु = सिखना,	ईसिन = पकाना,
कींस / खींस = क्रोध,	बी = पेट भरना,
नी = यह (जीवित)	

(4) कुछ शब्दों व वाक्यों में (') चिन्ह) लगता है।

जैसे–

अले ए 'रङ ए हिजु कना = हमलोगों को गाली देने आया है।

ए 'सेदा

ओ 'ल = लिखना

में 'सा = जमा करना

द 'सोङ = दसम प्रपात

(4) प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रामदयाल मुण्डा ने अपनी पुस्तक '' मुण्डारी व्याकरण में'' स्वर एवं व्यंजन वर्णों को इस रूप में दिखाया है :–

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ
ओ औ ा ि ी ु ू े
ै ो ौ अनुस्वार अं (.) कुल–(11) स्वर

दृष्टव्य: (1) सामान्यतया शब्दमध्य और शब्दान्त में व्यंजन के आने पर मात्रा रूप ही प्रयुक्त होते हैं।

जैसे–अब = पिता

इलि (इ + ल + इ) = हड़िया

उतु (उ + त् + उ) = तरकारी

हेड़ें (ह + ड़ + ए) = भुसा

होरो (ह + ओ + र + ओ) = कच्छुवा

(2) हिन्दी आदि आर्य भाषाओं से पृथक मुण्डारी में ह्रस्व ए और दीर्घ ए (ऐ) तथा ह्रस्व ओ और दीर्घ ओ (ओं) भी होते हैं। जैसे–

बोर (ब + ो + र) = सूत निकालना

बोओर (ब + ो + र) = वर

लेल (ल + ए + ल) = देखना

लेएल (ल + ` + ` + ल) = अच्छी तरह देखना

(3) अनुस्वार (.) का प्रयोग विकल्प रूप से संयुक्त अनुनासिक व्यंजन वर्ण को लिखने में होता है।

जैसे–अङ्क = अंक, गोलग्चि = गोलंचि,

कंटल / कण्टल = कटहल आदि ।

व्यंजन

अल्पप्राण	**महाप्राण**	**अल्पप्राण**	**महाप्राण**	**अनुनासिक**
क	ख	ग	घ	ङ़ –
कण्ठय				
च	छ	ज	झ	ञ –
तालव्य				
ट	ठ	ड	ढ	ण –
मूर्धन्य				
त	थ	द	ध	न –
दन्तय				
प	फ	ब	भ	म –

ओष्ठ

अर्द्धव्यंजन– य र ल व स ह : ड़

कुल–(33)

दृष्टव्य

(1) महाप्राण वर्णों / अक्षरों का प्रयोग मुण्डारी में बिरले ही प्रयुक्त होता है। इनका प्रयोग सामान्यतया आर्य भाषाओं से आगत शब्दों को लिखने में होता है। जैसे–

धोरोम = धर्म, फंसे =फांसी, भारोम = भार आदि असामान्य रूप से (क्रोध में) जोर देने के लिए मूल शब्दों के साथ भी महाप्राणत्व का प्रयोग होता है।

जैसे–

सेत–सेथा = कुत्ता

फदा = लात मारना

थम = पीटना

(2) (:) विसर्ग का प्रयोग मुण्डारी काकल्य (?) को लिखने में करते हैं। जैसे–

मः =काटना,रेः = लूटना,

दः = पानी, गुरिः = गोबर,

(3) शब्दान्त में सिर्फ द् ब् ड् ञ् न् म् र् ल् और : हह आते है। ङ् ञ् ण् ड़् : का प्रयोग शब्दारम्भ में नहीं होता । जैसे–बसर = रस्सी, तयर = खीरा, नव = नया आदि।

(4) र के रूप : हिन्दी–संस्कृत की तरह व्यंजन के पहले आने पर उस व्यंजन के ऊपर ‘ (रेफ) और व्यंजन के बाद आने पर उसके नीचे ‘ ‘ से दिखाए जाते है। सामान्य रूप में आर्य भाषाओं से आगत शब्दों में प्रयोग होता है। जैसे–प्रेम = प्रेम, ट्रक आदि।

(5) मुण्डारी शब्द रचना स्वर साम्य सिद्धान्त के अनुसार होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक शब्द सीमा में भिन्न उँचाई के स्वर नहीं होंगे। इ ई

उ ऊ उच्च स्वर कहे गए है। और ए ऐ ओ औ मध्य स्वर। अ निम्न स्वर कहा जाता है और इस नियम में तटस्थ माना गया है। इस तरह शब्द सीमा में सामान्यतया इ ए या उ ओ का संयोग नहीं होगा।

उदाहरण–

किचिरि = कपड़ा, ओते = धरती,

कुपुल = अतिथि, सलांगि = उँचा,

कतु = बैठी, आदि।

(6) मुण्डारी शब्द रचना में ह्रस्व की ही प्रधानता होती है। दीर्घत्व का प्रयोग बहुत ही कम शब्दों में देखा जाता है।

जैसे–

आबुग = आँख कान धोना। ईल = पंख, ऊब = बाल आदि।

(5) "Teach yourself Munadri" पुस्तक में सी. ए. हंस ने मुण्डारी भाषा के लेखन को स्वर और व्यंजन वर्ण मिलाकर (24) संख्या बतायी है। उन्होंने स्वर और व्यंजन को इस तरह रखा है। [8]

स्वर

अ आ ए (े) इ (ि) ओ (ो) उ (ु) = (6)

व्यंजन

प ब त द ड़ च ज क ग स ल म

न ह र ट ड अं . कुल–(18)

(6) डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद ने अपनी पुस्तक ''नवा होड़ो जगर मुंडि'' (नवीन मुण्डारी व्याकरण) में स्वर और व्यंजन वर्ण को इस तरह बताया है।[1]

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

कुल–(12)

व्यंजन

क ख ग घ ड़ – कण्ठ

च छ	ज	झ	ञ	– तलुवा
ट ठ	ड	ढ	ण	– मूर्द्धा
त थ	द	ध	न	– दन्त
प फ	ब	भ	म	– ओष्ठ
य र	ल	व	स	
ह ड़	ढ़	= (33)		

इन्होने स्वर वर्ण को दो वर्णों में रखा है–

(क) अल्पमात्रिक स्वर	**(ख) दीर्घ मात्रिक स्वर**
अ–(–)	आ–(ा)
इ–(ि)	ई –(ी)
उ–(ु)	ऊ– (ू)
ओ–(ो)	ऐ– (ै)
अं–(.)	
अ : (:)	
ए–(ॅ)	

उन्होंने ध्यान आकृष्ट कराया है कि मुण्डारी भाषा लेखन में दीर्घ मात्रिक चिन्ह ' ऐ' और (ौ) जस का तस नहीं जुड़ता है।

डॉ. बड़ायउद के ''नवा होड़ो जगर मुंडि'' (नवीन मुण्डारी व्याकरण) का प्रथम संस्करण 2005 ई. में प्रकाशित हुआ है। इसके बाद देवनागरी लिपि में व्याकरण की किसी नयी पुस्तक का प्रकाशन नहीं हुआ है।

इस तरह मुण्डारी भाषा को देवनागरी लिपि में लिखने वाले विद्वानों ने स्वर एवं व्यंजन वर्ण को मुण्डारी भाषा का मानक रूप प्रदान करने का भरसक प्रयास किया है एवं यह प्रयास अभी भी जारी है।

निरमल सोय ने ''होड़ो जगर मुंडि'' पुस्तक में स्वर वर्ण को 11(ग्यारह) एवं व्यंजन वर्णों को 37 (सैंतीस) माना है। कुल वर्णमाला–48 (अड़तालीस) हैं। ये मानते है कि मुण्डारी भाषा में श ष ढ़ का प्रयोग नहीं होता है किन्तु श

ष स ह को आदिंग बनी (भीतरी व्यंजन) एवं दो मूहोर (नासिक) के अन्तर्गत रखते है। लिखने में विसर्ग (:) और (्) के व्यवहार पर जोर देते हैं। जैसे–मअ: = काटना, ति: = हाथ, केचअ: = फाड़ना, ओड़अ: = घर, मद् = बाँस, लाद् = रोटी, सब् = पकड़ना आदि।

निकोदिम केरकेट्टा ने स्वर वर्णों को 14 (चौदह) माना है और व्यंजन वर्ण को 33 (तैंतीस) माना है। कुल वर्णमानला–47 (सैंतालीस) माना है। स्वर वर्ण के अल्पमात्रिक स्वर के अन्तर्गत 'ओ' रखा है एवं दीर्घमात्रिक स्वर में भी ''ओ'' मौजूद है। उन्होंने स्वर वर्ण के मात्रिक रूपों का उदाहरण प्रस्तुत किया है जो पूर्व वर्णित है।

डॉ. मनमसीह मुन्डू ने '' टुण्डकोढारी'' (शब्दकोश) में दिखाया है कि मुण्डारी स्वर वर्ण की संख्या 12 है। व्यंजन वर्ण 33 (तैंतीस) है। इस तरह कुल स्वर और व्यंजन वर्णों की संख्या 45 पैंतालिस) है। वे औ (ौ) के स्थान पर जोर देते हैं।

डॉ. रामदयाल मुण्डा ने ''मुण्डारी व्याकरण'' पुस्तक में स्वर वर्ण की संख्या 11 बतायी है। व्यंजन वर्ण 33(तैंतीस) है। कुल वर्णमाला 44 (चौवालीस) हुए। इसकी विस्तृत चर्चा पूर्व में की गई है।

सी. ए. हंस ने ''टीच योरसेल्फ मुण्डारी ''पुस्तक में स्वर और व्यंजन वर्णों को मिलाकर 24 (चौबीस) बताया है। इसमें स्वर 6 (छह) एवं व्यंजन 18 (अठारह) हैं। स्वर के अन्तर्गत उन्होंने ई, औ, ऐ, को नहीं रखा है, जबकि 'अं' और अल्पप्राणवर्णों को व्यंजन के अन्तर्गत रखते हैं।

डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद ने स्वर वर्णों की संख्या 12 (बारह) बताया है। व्यंजन वर्ण 33(तैंतीस) है। कुल वर्णमाला 45 (पैंतालीस) है।

सभी को अध्ययन करने से निष्कर्ष निकलता है कि निरमल सोय ने स्वर वर्ण के अन्तर्गत 'ऋ' को रखा है एवं अं अ: को नहीं रखा है। डॉ. रामदयाल मुण्डा ने 'अं' को अनुस्वार के अन्तर्गत रखा है एवं विसर्ग (:) का जिक्र अध व्यंजन वर्ण में किया है। डॉ. मनमसीह मुन्डू एवं डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद ने अं अ: को स्वर वर्ण के अन्तर्गत रखकर 12 संख्या बताया है। निकोदिम केरकेट्टा ने स्वर वर्ण अं अ: को साथ में रखा है एवं 'ऐ' औ को दो बार गिनती किया है इसलिए स्वर वर्ण की संख्या 14 (चौदह) बताते हैं। सी. ए. हंस स्वर वर्ण के सम्बन्ध में अलग तर्क प्रस्तुत करते हैं। वे स्वर वर्णों को मात्र छह मानते

हैं जो अ, आ, ए, इ, ओ, उ, है इसके अलावे बाकी का जिक्र नहीं किया है।

व्यंजन वर्ण के सन्दर्भ में निरमल सोय सबसे ज्यादा 37 व्यंजन वर्णों का जिक्र करते हैं जिसमें क,च, ट, त, प, वर्ग, बितर बनी प, र, ल, व, अदिग बनी–श, ष, स, ह, मूहोर–ड ढ एवं अं : को रखा है।

निकोदिम केरकेट्टा एवं डॉ. मनमसीह मुन्डू ने व्यंजन वर्ण की संख्या 33 बताया है। केरकेट्टा ने व्यंजन वर्ण को अल्पप्राण और महाप्राण में रखा है। डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद ने भी व्यंजन वर्ण को 33 माना है। डॉ. रामदयाल मुण्डा ने व्यंजन वर्ण को 33 माना है। उन्होंने य, र, ल, व, स, ह, : ड़ को अर्द्धव्यंजन कहा है। इन सबसे अलग हटकर सी. ए. हंस ने व्यंजन वर्ण को 18 माना है। जिसमें–प, ब, त, द, ड़, च, ज, क, ग, स, ल, म, न, ह, र, ट, ड अं हैं।

उपर्युक्त सभी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत स्वर व्यंजन वर्णों के आधार पर मुण्डारी भाषा की लेखन सामग्रियों को मानक रूप बनाने में होनेवाली कठिनाई दूर होगी। सभी विद्वानों का तार्किक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है, फिर भी सामाजिक समझौता एवं अध्ययन की गहराई को आधार मानते हुए भाषा वैज्ञानिक डॉ. रामदयाल मुण्डा द्वारा बनायी गई ''मुण्डारी व्याकरण'' मुण्डारी भाषा को लिखित मानक स्वरूप प्रदान करने में सर्वाधिक सटीक प्रतीत होता है। भाषा का मानक रूप तभी बनाया जा सकता है जब उसमें परिपक्वता एवं समृद्धता हो। मुण्डारी भाषा अभी हालाँकि पूर्ण रूप से समृद्ध नहीं है लेकिन समृद्धि के सारे तत्वों को पूरा करने की दिशा में लेखन कार्य गति में है। नजदीक भविष्य में समृद्धि अवश्य आएगी।

मुण्डारी भाषा के चार उपशाखाओं में हसद: मुण्डारी को छोड़कर बाकी तीनों क्षेत्रीय रूपों में लिखित सामग्री आंशिक रूप में ही मिलता है। नतीजा है कि हसद: के रूप पर ही सभी क्षेत्रीय रूपों को प्रस्तुत किया जाता है, किन्तु वह दिन दूर नहीं जब सभी क्षेत्रीय रूपों में भी धड़ल्ले से लिखा जाने लगेगा और मुण्डारी भाषा का मानक रूप अपने पूरे तेज के साथ उभर आएगा।

शब्द द्वारा तुलना

किसी भाषा को मानक रूप प्रदान करने के लिए उस भाषा का क्षेत्र विस्तार तथा व्यवहार में लायी जाने वाली बोली के शब्दों का अध्ययन

आवश्यक है। मुण्डारी भाषा की चार क्षेत्रीय उपशाखाएँ यथा हसद:, नगुरी, तमड़िया, केर: के प्रत्येक शब्दों में समानताएँ एवं विभिन्नताएँ मौजूद हैं। किन परिस्थितियों में एक ही वस्तु को कई नामों से कहा जाता है। भाषा प्रभावित होने के कारण तथा इस तरह के कई और कारक है जिसका अध्ययन करना आवश्यक है। इन सारे बिन्दुओं पर अध्ययन करने के उपरांत ही समाज स्वीकृत मानक रूप बनाने में सहूलियत होगी। मुण्डा समुदाय में सबसे पहले इस भाषा को लिखने का काम 1931 ई. में दाउद दयाल सिंह होरो ने ''सुरूद सलुकिद'' नामक मुण्डारी भाषा की पुस्तक लिख कर किया। इसकी प्रति उपलब्ध नहीं होने की वजह से उसका सन्दर्भ यहाँ नहीं दिया जा सका है।

1940 ई. में निरमल सोय ने दो पुस्तकें लिखीं, ''बइअंकिर पुथि'' एवं ''होड़ो जगर मुंडि''। होड़ो जगर मुंडि पुस्तक में कुछ शब्दों का जिक्र है, जो निम्न है–

मुण्डारी	**हिन्दी**	**मुण्डारी**	**हिन्दी**
मूद्	मूल	पीट	बाजार
दुरंग	गाना	सीतना	हल जोतना
मांड़ी	धीरे	दाली	दाल
कियीस	क्रोध	चौली	चावल
इनुँग	खेलना	नेलीपेया	उसे देखो
कुड़ी	औरत	दिरी	पत्थर
अपी	तीन	गई	गाय
उली	आम	ओड़अ:	घर
दसी	नौकर	कजी	बोली

1961 ई. में भैयाराम मुण्डा ने ''दंडा जमाकन होड़ो कहनी'' पुस्तक प्रकाशित की है। उस समय मुण्डारी भाषा में वर्तनी, शब्द को लेकर कुछ इस तरह प्रयोग हो रहे थे–

मुण्डारी	**हिन्दी**	**मुण्डारी**	**हिन्दी**
ओड:	घर	कुड़ी	स्त्री

दिरी	पत्थर	दुअर	दरवाजा
दासी	नौकर	कजि	बोली
ऊब	बाल	दुरङ	गाना
सेंड़ा	बुद्धि		

1966 ई. में दुलायचन्द्र मुण्डा ने ''सुड़ा सगेन'' पुस्तक निकाली। इसमें मुण्डारी शब्दों को इस तरह से दिखाया गया है–

मुण्डारी	**हिन्दी**	**मुण्डारी**	**हिन्दी**
ओडा:	घर	सेणा	बुद्धि
दिसुम	देश	चेणे	चिड़ियाँ
उरी	गाय	उली	आम
दुरङ्	गाना	पीट	बाजार
होड़ोमो	शरीर	कमी	काम
हाई	मच्छली	मयँ	कमर

पवित्र बाइबल से सबंधित उक्तियों का मुण्डारी भाषा में अनुवाद फा. म. तोपनो जी.एस. ने 1976 ई. में किया। इसका द्वितीय संस्करण 2000 में निकला। पुस्तक का नाम ''नवा बपइ–अइन'' है। इसमें मुण्डारी भाषा का प्रयोग इस तरह किया गया है–

मुण्डारी	**हिन्दी**	**मुण्डारी**	**हिन्दी**
सेंड़ां	बुद्धि	जोअर	नमस्कार
ओड़अ:	घर	लिजअ:	कपड़ा
गड़ा	नदी	मरङ	बड़ा
दिसुम	देश	दअ:	पानी
अइङ	मै	कुड़ि	स्त्री
नुबअ:	रात	गड़ा	नदी

1967 ई. में डॉ. रामदयाल मुण्डा ने ''सेलेद'' पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने मुण्डारी भाषा को इस तरह प्रस्तुत किया है–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
होएओ	हवा	ओड:	घर
चेणे	चिड़िया	सिङ्ग	सूर्य
चण्डु:	चाँद	मेदद:	आँसू
दिअ	बती	जू	जाओ
हतु	गाँव	उरि:	गाय
होड़मो	शरीर	गड़	नदी
सिर्म	उपर	अकड़	आखाड़ा

1977 ई. में सागु हंस मुंडा की ''मुण्डा कोअ इतिहास'' नामक पुस्तक आई। इसमें मुण्डारी शब्दों का इस्तेमाल इस तरह किया गया–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
दिशुम	देश	द:	पानी
मूर्ती	मूर्ति	पुर:	अधिक
चेड़े	चिड़िया	सिर्मा	ऊपर
ओड:	घर	गड़ा	नदी
सिङगी	सूर्य	दसी	नौकर
सदौ	शोषण,	तकलीफ	

''बइअंकिर'' पुस्तक 1981 ई. में छपी है। इसके लेखक हैं–निकोदिम केरकेट्टा। इसमें मुण्डारी शब्द निम्नवत हैं–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
सेंड़ां	बुद्धि	दिरि	पत्थर
पुरअ:	अधिक	उरि:	गाय
अइङ	मैं	इनि:	वह
गिति:	सोना	दअ:	पानी
पीटि	बाजार	मंडि	भोजन

1980 ई. में काशीनाथ सिंह मुण्डा ''काण्डे'' ने ''गुइरम'' नामक

मुण्डारी उपन्यास लिखा। इसमें मुण्डारी शब्दों का प्रयोग इस तरह किया गया है–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
होय	हवा	दुरं	गाना
ओंडः	घर	सिर्मा	उपर / आकाश
मेद्दः	आँसू	रः	रोना
अब्बा	पिताजी	सेंड़ा	बुद्धि
गिति	सोना	कुड़ी	लड़की / स्त्री

1984 ई. में मेनस राम ओड़ेया की ''मतुराअः कहनि'' पुस्तक का प्रकाशन हुआ। मुण्डारी शब्दों का इसमें इस तरह से व्यवहार हुआ है–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
हतु	गाँव	ओड़अः	घर
मुनडा	मुण्डा (जाति)	अइङ	मैं
कूपुल	अतिथि	बनदा	तालाब
लिजअः	कपड़ा	उरिः	गाय
सिंगि	सूर्य	पुरअः	अधिक
गिति	सोना	चेकन	क्या
तिसिङ	आज	चेंडे	चिड़िया

1988 ई. में तुलसीदासकृत श्री रामचरित मानस का मुण्डारी भाषा टीका निकाला गया, जिसके सम्पादक मण्डल में श्रवण कुमार गोस्वामी एवं दुलायचन्द्र मुण्डा थे। टीकाकार स्व. मझिया मुण्डा एवं छत्रपाल सिंह मुण्डा थे। प्रकाशक स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती देश धर्म सेवा संस्थान, मिशन कोर्ट (ग्राउण्ड फलोर) 25, आर. एन. मुखर्जी रोड कलकत्ता 700001 एवं मुद्रक मधु प्रिन्टर्स मस्जिद खजूर किनारी बाजार, दिल्ली–110006 हैं। इसमें मुण्डारी भाषा के शब्दों का व्यवहार इस तरह किया गया है–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
सेण	बुद्धि	अञ	मैं
दिसुम	देश	नेआ	यह
ओड:	घर	चंडु	चाँद
कट	पैर	गड़	नदी
सिर्म	उपर/आकाश	दुड़	धूल
होय	हवा	द:	पानी
चेणे	चिड़िया	एग:	माना
हुडि	कम	पुर:	अधिक

1988 ई. में डॉ. रामदयाल मुण्डा ने ''मुण्डारी व्याकरण'' प्रकाशित की। इसमें मुण्डारी भाषा के शब्दों को इस तरह दर्शाया है।–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
अपिर	उड़ना	आब्	मुंह कान चेहरा धोना
ईल	पंख	ऊब	बाल
जर्गि	वर्षा ऋतु	खींसि	क्रोध
होर	रास्ता	पर्कोम	खटिया
मंर	बड़ा	पुर्न	पुराना
होयो	हवा	रि:	गाय
सर्ते	सच्चा	द:	पानी
नर्णे	नजदीक	मोणेक	पाँच

1989 ई. में सदानन्द अविनाश विश्राम दिलवर हेस ने ''होड़ो जगर रेअ: एतेहइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब'' मुण्डारी पुस्तक में शब्दों को इस तरह दिखाया है–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
सेंड़ा	बुद्धि	नाअ	अभी

सियु:	हल जोतना	दुरङ	गाता
मरङ	बड़ा	पुरअ:	अधिक
होरा	रास्ता	दिसुम	देश
जगर		बात	

1995 ई. में डॉ. मनमसीह मुन्डू ने ''मुण्डारी टुङकोढारि'' (मुण्डारी शब्दकोश) प्रकाशित किया है। इसमें मुण्डारी शब्दों का इस्तेमाल इस तरह हुआ है–

मुण्डारी	**हिन्दी**	**मुण्डारी**	**हिन्दी**
अइङ (अञ्)	मैं	उब	बाल / केश
उम	नहाना	उरि:	गाय
उलि	आम	ओड़अ: / ओड़ा:	घर
कुपुल	अतिथि	खींस / खींसि	गुस्सा
चांड़ें	पक्षी	जरगि	वर्षा ऋतु

डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद ने ''नवा होड़ो जगर पुथि'' (नवीन मुण्डारी व्याकरण) बनायी। प्रथम संस्करण 2005 ई. में एवं द्वितीय संस्करण 2007 में आया। इस पुस्तक में मुण्डारी शब्दों को इस तरह रखा गया है–

मुण्डारी	**हिन्दी**	**मुण्डारी**	**हिन्दी**
कुड़ि	लड़की	उलि	आम
उरि:	गाय	अइञ	मैं
ओड़अ:	घर	एंगा	माता
दिरि	पत्थर	पीटि	बाजार
दसि	नौकर	दअ:	पानी
ऊब / उहुब	बाल	चंडु:	चाँद
पुरना	पुराना	मरङ	बड़ा
होरणे	हवा	सिंगि	सूर्य

2005 ई. में डॉ. रामदयाल मुण्डा ने ''सेलेद'' पुस्तक प्रकाशित की। इसमें मुण्डारी भाषा को न केवल झारखण्ड के बल्कि बंगाल, उड़िसा,

छत्तीसगढ़ के मुण्डा भाषा समुदायों को ध्यान में रखते हुए उच्चारण एवं वर्तनी, लेखनी की सहुलियत के हिसाब से मुण्डारी भाषा के शब्दों को इस तरह दिखाया है–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
हातु	गाँव	चाण्डु:	चाँद
राबाङ	सर्दी	दारू	पेड़
ओडा:	घर	हाडाद	कड़वी
आमा:	तुम्हारा	हासा	मिट्टी
दुराङ	गाना	जागार	बात
जानाओ	हर रोज	लांदा जागाार	हंसी बात
आञ	मैं	चाण्डु:	चन्द्रमा
खाने खाने	बार बार	काटा	पैर
मासाकाल	प्रकाशित	होड़ोम	शरीर
राचा	आंगना	आम	तुम

2007 ई. में प्रो. लगनी हेरेंज ने ''मसकल सआ'' (उजाले की ओर) पुस्तक निकाली। उन्होंने मुण्डारी भाषा के शब्दों को इस तरह रखा है–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दीमुण्डारी
स्वरग	स्वर्ग	सेतआ	सुबह
रतंग	वर्फ	गड़ा	नदी
दआ	पानी	ओड़आ	घर
सियुउ	हल जोतना	अमआ	तुम्हारा
चण्डुउ	चन्द्रमा	मरंग	बड़ा

इस तरह शब्द के द्वारा तुलना करने पर स्पष्ट रूप से कुछ अंतर दिखाई पड़ता है। लेकिन ये अंतर मानकीकरण की समस्या को बढ़ाने वाले नहीं हैं। इसे हम निम्न शब्द तालिका में देख सकते हैं–

विद्वानगण	शब्द समानता / विषमता					
निरमल सोय	ओड़अः	सेंड़ा	कुड़ी	उरिः	चण्डु	दिशुम
भैयाराम मुण्डा	ओड़ः	सेंड़ा	कुड़ी	उरि	चंडुः	दिसुम
डॉ. रा. द. मुण्डा	ओड़ः	सेंड़ा	कुड़ी	उरिः	चण्डु	दिसुम
फ. म. तोपनो	ओड़अः	सेंड़ा	कुड़ी	उरि	चनडु	दिसुम
सागु हंस	ओड़ः	सेंड़ा	कुड़ी	उरि	चनडु	दिसुम
काशीनाथ मुण्डा	ओड़ः	सेण	कुड़ी	उरिः	चंडुः	दिसुम
रामचरितमानस,	ओड़ः	सेण	कुड़ि	उरिः	चंडुः	दिसुम
मुण्डारी भाषा टीका						
निकोदिम केरकेट्टा	ओड़अः	सेड़ा	कुड़ि	उरिः	चंडु	दिसुम
डॉ. मनमसीह मुन्डू	ओड़ाः	सेंड़ा	कुड़ि	उरिः	चंडु	दिसुम
मेनसराम ओड़ेया	ओड़अः	सेंणः	कुड़ि	उरिः	चंनडुः	दिसुम
दिलवर हंस	ओड़अः	सेंड़ा	कुड़ी	उरिः	चंडु	दिसुम
जगदीश त्रिगुणायत	ओड़ः	सेंड़ा	कुड़ि	उरिः	चंडुः	दिशुम
दुलायचन्द्र मुण्डा	ओड़ाः	सेण	कुड़ि	उरि	चंडुः	दिसुम
मनसिद्ध बड़ायउद	ओड़अः	सेंड़ा	कुड़ि	उरि	चंडुः	दिसुम
प्रो. लगनी हेरेंज	ओड़आ	सेंड़ा	कुड़ि	उरि	चण्डुउ	दिसुम

मुण्डारी भाषा के समुचित प्रसार–प्रसार और विकास के लिए समय–समय पर पत्र–पत्रिकाओं का भी प्रकाशन हुआ। इन पत्रिकाओं का उद्देश्य मुण्डारी भाषा का विकास तथा भाषा–साहित्य के प्रति आम लोगों में जागरूकता लाना रहा है। जन समस्याओं को पत्रिका के माध्यम से जानने–समझने तथा भाषा संरक्षित रखने के लिए सुशील कुमार बागे एवं निरल एनेम होरो के सम्पादकत्व में ''जगर सड़ा'' नामक मुण्डारी पत्रिका 1960 ई. में निकाली गयी। इसके प्रकाशक गोपाल मुंजाल थे। इस पत्रिका में उस समय की मुण्डारी भाषा के शब्दों का व्यवहार इस प्रकार था–

मुण्डारी	हिन्दी	मुण्डारी	हिन्दी
पुरअः	अधिक	कुड़ी	स्त्री
इली	हड़िया	होड़मो	शरीर
कामी	काम	हातु	गाँव

सिंगी	सूर्य	चण्डू:	चाँद
मन्डी	भात	चेंड़े	पक्षी
सेंड़ा	बुद्धि	अइङ	मैं
चिर्गल	सावधान	ओड़अ:	घर

विद्वानों द्वारा प्रस्तुत उपर्युक्त शब्दों को देखने से प्रतीत होता है कि मुण्डारी भाषा को मानक रूप बनाने में अधिक कठिनाई नहीं है। घर को मुण्डारी में ओडा: / ओड़अ: / ओड: / ओड़आ कहा जाता है। वर्तनी के इतने रूप विद्वानों द्वारा प्रस्तुत हैं। उच्चारण एवं ध्वनि के हिसाब से उपर्युक्त सभी शब्द सही हैं, चूँकि भाषाविज्ञान में ध्वनि के आधार पर समस्त भाषाओं को I.P.A. (International Phonetical Alphabet) द्वारा लिखने का कार्य किया जा रहा है। इसलिए थोड़ी भिन्नता तो प्रारंभिक अवस्था में होगी ही किन्तु मुण्डारी भाषा को देवनागरी लिपी में लिखने पर मानक स्वरूप का निर्धारण आसान है। मेरे विचारानुसार घर के लिए 'ओड़ा:' शब्द लिखना सटीक लगता है। उसी तरह बुद्धि के लिए 'सेंड़ा', गाय के लिए 'उरि:' चाँद के लिए 'चण्डु' और देश के लिए 'दिसुम' का प्रयोग सर्वथा उचित है।

विद्वानों ने स्वर व्यंजन वर्ण अध्याय में वर्णित किया है कि मुण्डारी भाषा में दीर्घत्व का प्रयोग बहुत कम किया जाता है। इस तर्कसंगत युक्ति का मैं समर्थन करता हूँ।

1960 ई. के आसपास ''जगर सड़ा'' पत्रिका के माध्यम से मुण्डारी भाषा को मानक रूप देने का प्रयास किया गया। इसके लिए कुछ नियमावली बनायी गयी, जो निम्न है–

(क) ''लगातिङ:'' शब्द एवं इस तरह के और भी शब्द जो कि कुछ लोग ''लगतिंग्'' लिखते हैं। इस बारे में कहा गया है कि 'ग' में हलन्त (–) जुड़ा है। किन्तु मुण्डारी भाषा की शुद्धता ङ में है, इसलिए ''लगतिग'' के स्थान पर ''लगातिङा'' होना चाहिए।

(ख) ''तइन'' को बहुत लोग ''तैन'' लिखते हैं पर यह उचित नहीं लगता है, इसलिए 'तइन' ही होना चाहिए।

(ग) मुण्डारी भाषा में अधिकतर ह्रस्व स्वरों का प्रयोग होता है।

जैसे–

कजि = बात, कमि = काम,

दसि = नौकर, उरि: = गाय, हिसिर = हार आदि।

(घ) का (नहीं) कहने के लिए सभी समय दीर्घ रूप का व्यवहार होता है।

जैसे–काइङ तइना = नहीं रहूँगा।

कालिङ सुकुजना = हमदोनों नही पसंद किये।

काले मनातिङा = नहीं मानेंगे।

काए पतियादा = वह नहीं माना।

(ड़) संयुक्ताक्षर का प्रयोग मुण्डारी भाषा में अधिक नहीं है, जैसे–मेनदो, एनते, मेनते। इन शब्दों को कुछ लोग मेन्दो, एन्ते, मेन्ते लिखते हैं जो बिल्कुल ही ठीक नहीं है, क्योंकि 'मेन और 'दो' अलग अलग ध्वनि है और इसको नहीं जोड़ा जा सकता है, इसलिए मेनदो, एनका, मेनते, एनते का ही प्रयोग होना चाहिए।

(च) कहीं कहीं अक्षर जुड़ाव पाया जाता है, जैसे–मुण्डा, अड़न्दि, गण्डु, सन्दि, बिण्डा आदि। ऐसे जुड़ाव पर देवनागरी के नियमानुसार मानना होगा। ट, ठ, ड, ढ, ण इसके अन्त में ण होने के कारण शब्द / अक्षर में 'ण' जुड़ता है, जैसे–मुण्डा, गण्डु, बिण्डा आदि। त थ द ध न अन्त में 'न' है इसलिए शब्द में 'न' लगता है,

जैसे–मुन्दम =अंगुठी, अडन्दि = विवाह आदि।

इस तरह ''जगर सड़ा'' के माध्यम से मुण्डारी भाषा को मानक रूप देने का प्रयास कुछ साल पहले से हो रहा है। किसी भी भाषा की विकास चरम अवस्था तब तक अपूर्ण होगी, जब तक कि उस भाषा में समृद्धता एवं परिपक्वता नहीं आ जाती। विकासशील भाषा मुण्डारी मानक रूप बनने के करीब है। निकट भविष्य में जल्द ही मानक रूप स्थापित हो जाएगा, ऐसी उम्मीद है।

2005 ई. में रामदयाल मुण्डा ने ''सेलेद'' पुस्तक निकाली जो कि पूर्व

में प्रकाशित हो चुकी थी किन्तु उसकी उपादेयता एवं मुण्डारी हिन्दी अनुवाद सहित वर्त्तमान आवश्यकता को देखते हुए किंचित विस्तार और पुनः संयोजन के साथ प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक में मुण्डा समुदाय का क्षेत्र विस्तार, भाषायी फैलाव मुण्डारी भाषा के चार उपशाखाओं के अलावे बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ के भाषायी उच्चारण एवं वर्तनी को आधार में रखकर तथा सारे क्षेत्रों का समन्वय रूप स्थापित कर प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है–

मुण्डारी	**हिन्दी**	**मुण्डारी**	**हिन्दी**
दिसुम	देश	ओड़ा	घर
चाण्डु	चाँद	सेंड़ा	बुद्धि
आमा:	तुम्हारा	हातु	गाँव
टुराङ	गाना	जागार	बात
आञ	मैं	काटा	पैर

इस तरह भाषा वैज्ञानिक अध्ययन एवं भाषायी व्यापकता को एक सूत्र में बाँधने का एवं सामाजिक समझौता के आधार पर डॉ. रामदयाल मुण्डा के लेखन प्रस्ताव का प्रचलन मेरे विचारानुसार सही प्रतीत होता है, क्योंकि मुण्डा समुदाय के लोग कई राज्यों में हैं, उनको अपनी भाषा के द्वारा सहज रूप से जोड़ने समझने तथा भाषायी विकास को ध्यान में रखकर लेखन प्रक्रिया को निरंतर प्रोत्साहन देने का महत्वपूर्ण कारक हो सकता है। किन्तु दूसरी बात भी सत्य है कि मुण्डारी भाषा के हसदः क्षेत्र में बोली जाने वाली मुण्डारी को शुद्ध माना जाता है, इसलिए इन क्षेत्रों में लिखी जानेवाली वर्तनी उच्चारण को भी सही एवं तथ्यात्मक माना जाता है।

दोनों दृष्टिकोण के आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक समझौता ही बेहतर विकल्प हो सकता है मानक रूप स्वीकृत होने का। मेरे विचारानुसार दोनों पक्षों से अधिक से अधिक लेखनी समाज के सामने आए। बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ के लोगों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन प्रक्रिया और झारखण्ड में चार क्षेत्रीय उपशाखाएँ, सभी से लेखन सामग्री पुस्तक या पाण्डुलिपियों के रूप में समाज के लोगों के बीच आये। सारे क्षेत्रों के पुस्तकों का विस्तृत एवं सम्यक् अध्ययन करने के उपरांत मुण्डारी भाषा का एक निर्धारित मानक रूप आसानी से बनाया जा सकता है।

वाक्य द्वारा तुलना

किसी भाषा को मानक रूप प्रदान करने में उस भाषा के वाक्यों का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। वाक्यों की बनावट प्रकृति एवं व्याकरणगत आधार पर एक मानक स्वरूप तैयार किया जा सकता है। जिससे भाषा की विषमता को दूर करने एवं उसे व्याकरणिक ढाँचे में सहेजने में सहुलियत होगी। विद्वानों ने उपर्युक्त तत्वों को ध्यान में रखकर ही मुण्डारी भाषा के व्याकरणों की रचना की है। अपने अनुसंधान के क्रम में मैंने मुण्डा समुदाय के विद्वानों द्वारा लिखित मुण्डारी व्याकरण पर ही जोर दिया है, क्योंकि भाषा का मानक रूप का निर्धारण व्याकरण के द्वारा ही संभव है। इस भाषा के लिखने के लिए देवनागरी लिपि सही जान पड़ता है। इससे नैसर्गिक व व्याकरणिक विशेषताओं को बहुत हद तक सरलता से रखा जा सकता है, और आम लोगों को समझने में सुविधा, सहुलियत व व्यवहार में कठिनाई भी महसूस नहीं होगी। इसके लिए मैने डॉ. रामदयाल मुण्डा की ''मुण्डारी व्याकरण'', डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद की ''नवा होड़ो जगर मुंडि'', निकोदिम केरकेट्टा की ''बइअङकिर'' और निरमल सोय की ''होड़ों जगर मुंडि'' पुस्तक को आधार बनाया है। इसके साथ ही संबधित अन्य पुस्तकों को भी यथासंभव अध्ययन किया है।

निरमल सोय ने ''होडो जगार मुंडि'' पुस्तक में वाक्य के सम्बन्ध में बताया है कि शब्दों को जोड़ने से वाक्य बनता है। शब्दों को जोड़ने से किसी अर्थ की जानकारी तुरंत होती है, उसी जुड़ाव को वाक्य कहते हैं।'' [9] 'मण्डी जोम' कहने से स्पष्ट नहीं होता है किन्तु ''अले मण्डी जोम तना'' कहने से तुरंत जानकारी होती है। उसी तरह 'दोलाबु मण्डी जोम ते (चलिए खाना खाने), पिट तेबु सेनोअ (हम लोग बाजार जाएँगे) आदि इस वाक्य से अर्थ तुरंत स्पष्ट हो जाता है। इसे ही वाक्य कहते है।

1940 ई. के आसपास निरमल सोय ने मुण्डारी भाषा का व्याकरण ''होड़ो जगर मुंडि'' लिखा। उस समय मुण्डारी भाषा के वाक्यों को उन्होंने दो रूपों में रखा–

(1) संज्ञा से संबंधित वाक्य [10]

(क) मेता (संज्ञा)–उरि को को अतिगतना = गायें चर रही है।

(ख) नंग मेता (सर्वनाम)–अपे पे इतुनतना = आपलोग जानते है।

(ग) जति (जाति संज्ञा)–पेड़े: यन को निरतना=ताकत वाले भाग रहे है।

(घ) उदम मेता (क्रिया संज्ञा)–सेनो: तन को ले नेलतना = जाने वाले को देख रहे है।

(ड़) बकंड कांड मेता (वाक्य संज्ञा)–सिंगि तुरो: गे गिति: का बुगिना= सूर्योदय होने तक सोना ठीक नहीं है।

(2) गाना से संबंधित वाक्य [11]

(क) बंग बदल कजीकोते–जेरका मंडी मंड़ी तेए हिजु: तना = जेरका धीरे धीरे आ रहा है।

(ख) बंकड कांडते–अइञ दुडुमअकन इमता सिमको रअ: केदा = मेरे सोये हुए समय में मुर्गा बांग दिया।

(ग) उदम तला तलान–जोटो जोम केतेए गिति: जना = जोटो खाकर सो गया।

(घ) मेता गलंग–कुला बुरू चेतनरेए हु: करजदा = बाघ जंगल की चोटी पर दहाड़ / गरज रहा है।

निरमल सोय ने बेड़ा (काल) के अन्तर्गत वाक्यों को इस तरह प्रस्तुत किया है। वे काल को तीन भागों में बाँटते हैं–

(1) हली बेड़ा (वर्त्तमान काल)

(2) सेनो:यन बेड़ा (भूतकाल)

(3) हिजु बेड़ा (भविष्यत काल)

(1) हली बेड़ा (वर्त्तमान काल)

वाक्य उदाहरण = होन रअ: तनाए = बच्चा रो रहा है।

होड़ो को को सेनो: तना = आदमी लोग जा रहे है।

(2) सेनोयन बेड़ा (भूतकाल)

मण्डीइंग जोमकेदा = मैने खाना खाया।

चेंड़े निरयनाए = चिड़ियाँ भाग गयी।

(3) हिजु बेड़ा (भविष्यतकाल)

गापाइञ सेनोआ = कल जाऊँगा।

दअ: ए गमाया = वर्षा होगी।

1981 ई. में निकोदिम केरकेट्टा ने मुण्डारी भाषा को निश्चित ढाँचे में रखने के लिए ''बइअङकिर'' व्याकरण किताब की रचना की, जो होड़ो जगर मुंडि (मुण्डारी वार्तालाप) के रूप में है। उन्होंने वाक्य के काल को तीन भागों में बाँटा है [12]–

(1) नेमङ बेड़ा (वर्त्तमान काल)

(2) देमङ बेड़ा (भूतकाल)

(3) समङ बेङा (भविष्यतकाल)

(1) नेमङ बेड़ा (वर्त्तमान काल) वाक्य

– मंगरा ए जोम तना = मंगरा खा रहा है / खाता है।

– हई को दअ: रे को तइना = मच्छलियाँ पानी में रहती है।

– अइङ इङ दुब तना = मै बैठता हूँ / बैठ रहा हूँ।

(2) देमङ बेड़ा (भूतकाल)

– दअ: इङ नू केदा = मैने पानी पीया।

– इनि मण्डि जोम केदा = वह खाना खाया / उसने खाना खाया।

– मंगरा ए निर केदा = मंगरा भाग गया / मंगरा दौड़ा।

– दरू मअ: जना = पेड़ काटा गया।

– पिट ते सेनो जना = बाजार चला गया।

(3) समङ बेङा (भविष्यतकाल)

– मंडि बु जोमा = हमलोग खाना खाएँगे।

– नेरे दुब पे = यहाँ बैठिये।

– दुब के: तेबु जगरा = बैठकर हमलोग बात करेंगे।

– इनि मंडि: जोमा = वह खाना खायेगा।

– पटि: ए इदीअ = वह चटाई ले जाएगा।

तीनों कालों के उपभेदों की चर्चा ना करते हुए सिर्फ वाक्य के उदाहरण को ही यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

इस तरह निरमल सोय एवं निकोदिम केरकेट्टा ने काल के वाक्यों को तीन भागों में बाँटा है। मुण्डारी शब्द के नामकरणानुसार निरमल सोय ने वर्तमान काल को ''हली बेड़ा'' भूतकाल को ''सेनो: मन बेड़ा'' भविष्यतकाल को ''हिजु बेड़ा'' कहा है। जबकि निकोदिम केरकेट्टा ने नेमङ बेड़ा (वर्त्तमान काल), देमङ बेड़ा (भुतकाल), समङ बेड़ा (भविष्यतकाल) कहा है। दोनों ने वर्त्तमान काल के वाक्यों को इस तरह प्रस्तुत किया है–

– होन राअ: तनए = बच्चा रोता है / रो रहा है।

– मंगरा ए जोम तना = मंगरा खा रहा है / खाता है।

– होड़ो को को सेनो तना = लोग जा रहे है।

– अइङ दुब तना = मै बैठता हूँ / बैठ रहा हूँ।

इन उदाहरणों में वर्तनी असमानता को छोड़कर बाकी काल के तीनों रूपों में समान व्यवहार है। भूतकाल के उदाहरणों में–

– मण्डीइग् जोमकेदा = मैने खाना खाया।

– चेड़े निरयनाए = चिड़ियाँ भाग गई।

– दरू मअ: जना = पेड़ काटा गया।

इसमें केदा, यनाए, जना, भूतकाल की पहचान है।

भविष्यतकाल के वाक्यों में –

– गपाइग् सेनो:आ = कल जाऊँगा।

– दअ: ए गमाया = वर्षा होगी।

– मंडि बु जोमा = हमलोग खाना खाएँगे।

– इनि मंडि जोमा = वह खाना खायेगा।

– पटि: ए इदीअ = वह चटाई ले जाएगा।

इसकी पहचान इदीया, जोमा, इदिअ आदि है। इसमें क्रिया के अन्त में आकारान्त (ा) का चिन्ह लगा रहता है।

इस तरह सोय एवं केरकेट्टा ने जो वाक्य प्रस्तुत किया है, मेरे विचारानुसार सही जान पड़ता है, केवल वर्तनी की विषमता है। इसमें मुण्डारी के चारों उपशाखाओं में नगुरी मुण्डारी शब्द ''यनाए'' का प्रयोग है, जबकि हसद: में जनाए कहा जाता है। इस छोटे अन्तर को असानी से दूर किया जा सकता है। दूसरी अशुद्धियाँ या भेदों को लिखते–लिखते ही दूर किया जा सकेगा।

डॉ. रामदयाल मुण्डा ''मुण्डारी व्याकरण'' में वाक्यों को काल के आधार पर इस तरह प्रस्तुत करते हैं [13]–

वर्त्तमानकाल

– दुबतन:ए = वह बैठ रहा है / बैठता है।

अए सेनो: तन = वह जाता है / जा रहा है।

कमि तन बेन् = तुम दोनों काम कर रहे हो।

ओल जदए = वह लिख रहा है।

रेंगे: तनको = इन्हें भूख लगी है।

मण्डिले जोमतन = हम खाना खा रहे हैं।

भूतकाल

जोम लेदए: = उसने खाया था।

मण्डिञ् जोम ल: = मैने खाना खाया था।

हिजु: लेनए: = वह आया था।

कमितन तइकेनको = वे काम (किया) करते थे।

मण्डि को जोमकद तइकेन = वे लोग खाना खाए हुए थे।

भविष्यतकाल

कमिअए = वह काम करेगा।

दुबञ = मै बैठूंगा।

सेनले = हम जाएँगे।

डॉ. मुण्डा काल के विभिन्न वाक्यों को दृष्टव्य के द्वारा विशेष रूप से समझाया है। वाक्यों के व्यवहार एवं समाज में प्रचलित मान्यताओं के आधार पर यह मुण्डारी व्याकरण काफी महत्वपूर्ण एवं सटीक है। मेरे विचारानुसार

वाक्यों का मानक रूप इसी आधार पर होना चाहिए। जहाँ तक वर्तनी की बात है, वर्त्तमान व्यवहार एवं विस्तृत दायरा को देखते हुए इसका किंचित परिवर्तित रूप बनाया जा सकता है। जैसे शब्द द्वारा तुलना के अध्याय में डॉ. रामदयाल मुण्डा का प्रस्ताव है कि व्यापकता में मुण्डारी भाषा को देखने की आवश्यकता है।

डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद ने "नवा होड़ो जगर मुंडि" (नवीन मुण्डारी व्याकरण) में काल के द्वारा वाक्यों को इस तरह प्रस्तुत किया है। उन्होंने भी काल के तीन रूपों को माना है। मुण्डारी नामकरण के अनुसार–

1. नेमन बेड़ा (वर्त्तमान काल)
2. होलामन बेड़ा (भूतकाल)
3. गपामन बेड़ा (भविष्यतकाल)[14]

1. नेमन बेड़ा (वर्त्तमान काल)

ओल तनाए: = वह लिख रहा है।

जोम तनाए: = वह खा रहा है।

लेल जअ: अइञ = मै उनको देख रहा हूँ।

राँचीम सेन / सेनो तना = तुम राँची जा रहे हो।

राँची ती तना = वह राँची जर रहा है।

2. होलामन बेड़ा (भूतकाल)

मंडिञ जोमाकदा = मैने खाना खाया है।

राँचीञ सेनाकना = मै राँची गया हूँ।

लेल केदाइञ = मैने देख लिया।

लद ए जोमाकदा = उसने रोटी खाया।

3. गपामन बेड़ा (भविष्यतकाल)

सेनोगाइञ = मै जाऊँगा।

सेनो: अए = वह जायेगा।

गपा ए हिजुअ = वह कल आयेगा।

गपा मंडि कए जोमा = कल खाना नही खायेगा।

निरमल सोय के अनुसार काल इस प्रकार हैं–

1. हली बेड़ा (वर्तमान काल)
2. सेनो:यन बेड़ा (भूतकाल)
3. हिजू बेड़ा' (भविष्यतकाल)

उपर्युक्त सभी विद्वानों के नामकरण सही हैं, परन्तु किसी एक नामकरण पर सहमति बनने से अधिक अच्छा होगा। मेरे विचारानुसार मुण्डारी भाषा के सभी विद्वानों की कार्यशाला आयोजित कर इस तरह की विषमताओं पर गम्भीरपूर्वक विचार मंथन करने से एक मानक रूप सामने आएगा और कई गम्भीर मुद्दे आसानी से सुलझ जायेंगे।

विद्वानों द्वारा रचित पुस्तकों के अध्ययनानुसार एवं समाज में प्रचलित मुण्डारी भाषा का व्यवहार दोनों ही दृष्टियों से प्रतीत होता है कि मुण्डारी भाषा के वाक्य निर्माण को हम हिन्दी और अंग्रेजी के नियमानुसार प्रस्तुत कर सकते हैं या स्वतंत्र रूप से रख सकते है। सभी के वाक्यों में कोई अलग अर्थ नहीं निकलता है।

जैसे–

हिन्दी–	मैं	खाना	खाता हूँ।
	कर्त्ता	कर्म	क्रिया
अंग्रेजी–	I	eat	food
	कर्त्ता	क्रिया	कर्म

इस क्रम या शर्त को यदि नही मानते है और वाक्य निर्माण करते हैं तो हिन्दी और अंग्रेजी के वाक्यों का कोई अर्थ परिलक्षित नहीं होता है, किन्तु मुण्डारी भाषा के साथ ऐसा नहीं है। इसके वाक्य को हिन्दी व अंग्रेजी के अनुसार रख सकते हैं या स्वतंत्रतापूर्वक भी प्रस्तुत कर सकते हैं। अर्थ में कोई अन्तर नहीं होता है। जैसे–

हिन्दी–	मैं	खाना	खाता हूँ।
मुण्डारी–	(1)	अइञ	मंडि जोम तना

	कर्ता	कर्म	क्रिया	
	(2)	मंडिञ		जोम तना
		कर्म + कर्त्ता		क्रिया
	(3)	जोम तनाइञ		मंडि
		क्रिया कर्त्ता		कर्म
	(4)	मंडि अइञ		जोम तना
		कर्त्ता	कर्म	क्रिया

दूसरा उदाहरण–

	हिन्दी–			
	मैं	बाजार	जाता हूँ।	
	कर्त्ता	कर्म	क्रिया	
अंग्रेजी–	I	go to market		
	कर्त्ता	क्रिया	कर्म	
मुण्डारी–	(1)	अइञ	पिट	सेनो तना
		कर्त्ता	कर्म	क्रिया
	(2)	सेनो	तनाइञ	पिट
		क्रिया	कर्त्ता	कर्म
	(3)	पिट	तेहञ	सेनो तना
		कर्म	कर्त्ता	क्रिया
	(4)	पिठिंञ	सेनो	तना
		कर्म + कर्त्ता		क्रिया

इस तरह मुण्डारी भाषा के वाक्य निर्माण में व्याकरणिक शर्त एवं प्राकृतिक व्यवहार दोनों का ध्यान रखा जाता है।

मुण्डारी भाषा के चारों उपशाखाओं में भाषिक सम्बन्ध बनाने के लिए प्रत्येक क्षेत्रीय रूपों के वर्ण, शब्द, वाक्य, सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवहार

आदि पक्षों का एक दूसरे के बीच समानता–विषमता दर्शाते हुए एक मानक रूप तैयार करना ही अध्ययन का उद्देश्य है। इसकी विस्तृत चर्चा छठे अध्याय में की गयी है। सातवें अध्याय में भी इस संबंध में आवश्यक विचार प्रस्तुत किये गये हैं। दोनों अध्याय में विद्वानों द्वारा मानक रूप बनाने की पहलकदमियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। सारे तत्वों को एक स्थान पर रखकर समानता दिखाने का एक लघुतर प्रयास है। ऐसा ही प्रयास ''जगर सड़ा'' मुण्डारी पत्रिका के माध्यम से भी लगातार किया गया, ताकि लेखन अभ्यास में एकरूपता आये और मुण्डारी भाषा का मानक स्वरूप स्थिर हो सके। कुछ वर्ष चलने के बाद अब पत्रिका का प्रकाशन बन्द है। इससे मानकीकरण के सामूहिक प्रयास में बाधा आई है। फिलहाल इस बाधा को दूर करने काम वर्तमान में प्रकाशित मुण्डारी पत्रिका ''सेंड़ा सेतेंग'' और अन्य झारखंडी भाषाओं सहित मुण्डारी में प्रकाशित एकमात्र पाक्षिक अखबार ''जोहार दिसुम खबर'' के माध्यम से जारी है। इस तरह पत्र–पत्रिकाएँ भाषायी विकास और एकता को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

4. अन्तरक्षेत्रीय भाषायी सम्बन्ध

भारत नृजातीय विविधताओं वाला देश है। ये विविधताएँ पृथकताएँ नहीं हैं। साझेदारी और निजता के विविध रूपों को इनमें प्रकट होते देखा जा सकता है। इसे इस बात से ही समझा जा सकता है कि भारत में 4635 मानव समुदायों की पहचान की गई है, जिनके नाक–नक्श, भाषा, वेश–भूषा, उपासना की पद्धति, पेशे, खान–पान, आदतें और नाते–रिश्ते के रूप अलग–अलग हैं। [1] इन भिन्नताओं के कारण समाज में जहाँ आपसी हितों में टकराव होता है, वहीं समुदायों अथवा समाजों के बीच चलने वाली सांस्कृतिक सम्मिलन की अन्तधारा भी प्रवाहित होती रहती है।

संसार में व्यवहृत होनेवाली भाषाओं की संख्या प्रायः तीन हजार मानी गयी है। इनमें सैकड़ों भाषाएँ ऐसी हैं जिनकी सीमाएँ आपस में मिलती हैं और सीमावर्ती भाषा सहज ही पार्श्ववर्ती भाषाओं से प्रभावित होती है। [2] देवेन्द्रनाथ शर्मा का यह कथन अत्यंत सटीक है। समुदायों अथवा भाषाओं की सीमा का निर्धारण करना अत्यंत दुरूह कार्य तथा लगभग असंभव जैसा है। हजारों वर्षों की जीवनयात्रा के दौरान संस्कृतियों ने इस तरह से एक–दूसरे को प्रभावित किया है कि कोई भौगोलिक सीमा–रेखा खींचना अब आसान नहीं रह गया है।

राज्य और राष्ट्रों के उदय के बाद हमने राजनीतिक सीमा जरूर तय कर ली है, लेकिन सांस्कृतिक सीमाएँ नहीं खींची जा सकी हैं। और यदि ऐसी कोई सीमा निर्धारित भी कर ली जाती है, तब भी संस्कृतियों के सम्मिलन को रोक पाना असंभव बना रहेगा।

इससे यह अर्थ ध्वनित होता है कि भाषाओं के बीच अन्तरक्षेत्रीय संबंध का होना एक अनिवार्य सांस्कृतिक प्रक्रिया है और इससे कोई भी भाषा अछूती नहीं रहती। भाषा गतिशील होती है और अन्तरक्षेत्रीय यात्रा उसकी एक सामान्य प्रवृति है। इस क्रम में एक भाषा अनेक भाषाओं के सम्पर्क में आती है और उन सभी के बीच एक अन्तरक्षेत्रीय संबंध स्थापित होता है। झारखंड की सभी भाषाओं के अध्ययन से यह ज्ञात है कि बंगला, हिन्दी, उड़िया, मैथिली, मगही और भोजपुरी जैसी भाषाओं के साथ उनका अन्तरक्षेत्रीय संबंध है। मुण्डारी के संबंध में भी यही बात है।

प्रारम्भ में भाषावैज्ञानिक आर्यभाषा परिवार के अतिरिक्त अन्य भाषा परिवारों को कोल भाषाओं के अंतर्गत गिनते थे, लेकिन मैक्समूलर और अन्य परवर्ती भाषा चिन्तकों ने कोल के स्थान पर मुण्डा शब्द का प्रस्ताव सामने रखा। इसके बाद ही मुण्डा आदिवासियों की भाषा मुण्डारी कही गई। झारखंड के अतिरिक्त मुण्डा बोलियाँ छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि प्रदेशों के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं। लेकिन मुण्डारी का मानक रूप झारखंड में ही है। बाह्य संपर्क एवं अन्य कारणों से झारखंड में मुण्डारी के चार क्षेत्रीय रूप भी हैं। हसद:, तमड़िया, नगुरी और केर:। इनमें से सिर्फ हसद: रूप ही मुण्डारी के प्राचीन स्वरूप और अस्तित्व का परिचायक है। तमड़िया, नगुरी और केर: एक तरह से मुख्यत: अन्तरक्षेत्रीय संबंधों की उपज हैं। मुण्डारी के इन सारे रूपों में ध्वनि और शब्दावली का अंतर ही है। भाषा की मूल प्रकृति एक है जिससे मुण्डारी भाषा की विलक्षण एकता का पता चलता है।

आज का झारखंड राज्य बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ राज्यों की सीमाओं के सम्पर्क में है। इन राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्र जहाँ आपस में मिलते हैं वहाँ अलग–अलग भाषिक समुदायों की उपस्थिति है। सीमा पर रहने के कारण भाषाओं का अन्तरक्षेत्रीय संबंध विकसित होना स्वाभाविक है। मुण्डारी का अन्य भाषाओं के साथ किस तरह का संबंध है और इन संबंधों

के फलस्वरूप झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में किस तरह का भाषायी एवं सांस्कृतिक परिदृश्य है, उसे जानने–समझने का प्रयास करेंगे।

1. मुण्डारी और बंगला का सम्बन्ध

झारखंड की सीमा पश्चिम बंगाल से लगी हुई है। झारखंड का यह क्षेत्र पंचपरगना के नाम से जाना जाता है। पूर्व के प्रसंगों में हमने जाना है कि कभी इस इलाके में मुण्डाओं की एक बहुत बड़ी आबादी रहती थी। पंचपरगना के चोकाहातु गाँव का विशाल 'ससन' इसी तथ्य का प्रमाण है। कालांतर में यहीं से मुण्डा लोग सिंहभूम की ओर गये। लेकिन आज भी इस इलाके में मुण्डा लोग बड़ी संख्या में बसे हुए हैं।

पश्चिम बंगाल और झारखंड के इस सीमावर्ती क्षेत्र में बंगला भाषा और मुण्डारी भाषा के अन्तरक्षेत्रीय भाषिक संबंध स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। बंगला ने जहां एक ओर मुण्डारी पर प्रभाव डाला है वहीं दूसरी ओर मुण्डा भाषा का भी उस पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। इन दोनों तथा नागपुरी के सम्मिलन एवं संबंध से झारखंड–बंगाल के इस सीमावर्ती क्षेत्र में दो नई बोलियों अथवा भाषाओं का उभार हुआ, जिसे 'पंचपरगनिया' और 'कुरमाली या 'करमाली' कहा जाता है। वैसे, पंचपरगनिया एवं कुरमाली में बहुत कम भेद हैं, लेकिन झारखंड में अब इन दोनों भाषाओं को स्वतंत्र रूप से जाना जाने लगा है।

बंगला एवं मुण्डारी भाषा में संबंध स्थापित होने के कारण मुण्डारी भी मूल रूप में नहीं रह गई और इस क्षेत्र की बंगला भाषा के स्वरूप में भी अंतर आया। इसलिए इधर बोली जानेवाली मुण्डारी को बंगला संबंध के कारण ही 'तमड़िया मुण्डारी' कहा गया।

2. मुण्डारी और उड़िया का सम्बन्ध

झारखंड की दक्षिण सीमा पर उड़ीसा है। यहाँ की उड़िया और मुण्डारी के भाषिक संबंधों का प्रभाव इन दोनों भाषाओं में परिलक्षित होता है। जहाँ उड़िया भाषा में मुण्डारी के बहुत सारे शब्द, ध्वनि समाहित हो गये हैं वहीं मुण्डारी भाषा ने भी उड़िया भाषा से बहुत कुछ ग्रहण कर लिया है। मुण्डारी का यहाँ जो क्षेत्रीय रूप प्रचलित है उसे नगुरी मुण्डारी के अंतर्गत रखा जाता है।

3. मुण्डारी और छत्तीसगढ़ी का सम्बन्ध

लातेहार, गुमला और पलामू का झारखंडी क्षेत्र छत्तीसगढ़ से सटता है। झारखंड के इन इलाकों में मुण्डा समुदाय की आबादी नहीं के बराबर है किन्तु छत्तीसगढ़ राज्य में जो ऑस्ट्रिक समूह की मुण्डा भाषाएं हैं उन पर छत्तीसगढ़ बोलियों का प्रभाव है। अत: कहा जा सकता है कि मुण्डारी और छत्तीसगढ़ी भाषाओं का अन्तरक्षेत्रीय भाषिक संबंध हैं और दोनों भाषाओं ने एक–दूसरे की शब्द संपदा एवं विशिष्ट भाषायी ध्वनियों को आत्मसात् किया है।

4. मुण्डारी और हिन्दी का सम्बन्ध

झारखंड राज्य अविभाजित बिहार के समय से ही हिन्दीभाषी प्रदेश रहा है। राज्य की स्थानीय बोलियों और भाषाओं के बावजूद हिन्दी इन राज्यों की प्रमुख भाषा है। स्वतंत्रता के बाद से राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा शिक्षा एवं राजकाज की भाषा के रूप में हिन्दी के व्यापक प्रयोग एवं व्यवहार ने सभी स्थानीय बोलियों और भाषाओं के साथ संबंध बनाने में सफलता अर्जित की है। मुण्डा और हिन्दी के सम्पर्क के कारण जो अन्तरभाषिक संबंध विकसित हुआ है, उसके फलस्वरूप मुण्डारी भाषा में इस प्रभाव को सहज ही देखा जा सकता है।

5. मुण्डारी और अन्य बोलियों का सम्बन्ध

इसी प्रकार से हम देखते हैं कि झारखंड और बिहार की सीमांत भाषाओं के कारण अन्तक्षेत्रीय भाषिक संबंध बना है। विशेषकर, मैथिली, भोजपुरी और मगही बोलियों के साथ। इन समुदायों की राज्य में उपस्थिति बड़ी संख्या में है। इस वजह से भी इन भाषाओं और मुण्डारी भाषा के बीच स्थापित संबंध को आसानी से देखा जा सकता है। उपरोक्त भाषाओं के कई शब्द मुण्डारी में घुलमिल गये हैं तथा मुण्डा क्षेत्र में रहने वाले इन समुदायों की भाषाओं पर मुण्डारी का भी स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित किया जा सकता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भाषाओं का आपस में अन्तरक्षेत्रीय संबंध होता है और यह संबंध विशेषकर उन भाषाओं में स्पष्टत: देखा जा सकता है, जो सीमावर्ती भाषाएँ होती हैं। मुण्डारी का क्षेत्र चूँकि आज के झारखंड में कई राज्यों के साथ लगता है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि मुण्डारी और सीमावर्ती भाषाओं में अन्तरक्षेत्रीय संबंध कायम हो। इस अन्तरक्षेत्रीय

संबंध के कारण मुण्डारी ने दूसरी अनेक भाषाओं से विशेषकर शब्दों एवं ध्वनिगत विशिष्टताओं को ग्रहण किया है। वहीं दूसरी भाषाओं में भी मुण्डारी के भाषिक प्रभाव दिखाई देता है।

निष्कर्ष

आदिवासी भाषाओं के लेखन की शुरुआत औपनिवेशिक काल में हुई। ब्रिटिश शासकों, पाश्चात्य भाषाविदों एवं मानववैज्ञानिकों ने ही सर्वप्रथम नृवंशीय अध्ययन के क्रम में विभिन्न आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के लोक साहित्य का संकलन किया और उन्हें रोमन लिपि में प्रकाशित कराया। इसके बाद ही भारतीय विद्वानों का ध्यान इधर गया और उसके बाद अनेक पुस्तकें सामने आई।

आजादी के आसपास तक अधिकांश लेखन रोमन लिपि, कैथी लिपि, बंगला, उड़िया लिपि में ही आदिवासी भाषाओं को लिखा गया। आजादी के बाद देवनागरी का प्रचलन बढ़ा और भाषा–साहित्य लेखन में भी तेजी आई और अब देवनागरी लिपि के रूप में स्वीकृत हो चुकी है। मुण्डारी भाषा को देवनागरी में लिखने के प्रारम्भिक दिनों में इसके लेखन में संस्कृत की तरह हलन्त और विसर्ग चिन्हों का प्रयोग अधिक किया हुआ करता था। अब यह समस्या सुलझ जाने के करीब है।

मुण्डारी भाषा को मानक रूप बनाने के लिए व्याकरण की रचना की गई है। सभी व्याकरणों में कुछ अंतर है। यह अंतर मुण्डारी के क्षेत्रीय रूपों के कारण दिखायी देता है। पर ये अंतर इतने बड़े नहीं हैं जिससे कि मुण्डा भाषा को मानक स्वरूप प्रदान नहीं किया जा सके।

आज का झारखंड राज्य बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ राज्यों की सीमाओं के सम्पर्क में है। इससे अन्तरक्षेत्रीय भाषायी संबंध विकसित होना स्वाभाविक है। इस अन्तरक्षेत्रीय संबंध के कारण मुण्डारी ने दूसरी अनेक भाषाओं से विशेषकर शब्दों एवं ध्वनिगत विशिष्टताओं को ग्रहण किया है। वहीं दूसरी भाषाओं में भी मुण्डारी के भाषिक प्रभाव दिखाई देता है।

संदर्भ

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी–भाषाविज्ञान कोश, पृष्ठ 575
2. जगदीश त्रिगुणायत–मुण्डा लोक कथाएँ, पृष्ठ 60
3. अशोक पागल–पुरातत्व और इतिहास की झारखंडी धरोहर, पृष्ठ 59
4. अश्विनी कुमार पंकज–पुरखा लड़ाके (सं.–वंदना टेटे), पृष्ठ 62
5. निरमल सोय–होड़ो जगर मुंडि, पृष्ठ 4–5
6. निकोदिम केरकेट्टा–बइअङकिर, पृष्ठ 7
7. निकोदिम केरकेट्टा–बइअङकिर, पृष्ठ 8
8. डॉ. रामदयाल मुण्डा, 'मुण्डारी व्याकरण', पृष्ठ 5
9. सी. ए. हंस–टीच योरसेल्फ मुण्डारी, पृष्ठ 3
10. डॉ. मनसिद्ध बड़ायउद–नवा होड़ो जगर मुंडि (नवीन मुण्डारी व्याकरण), पृष्ठ 5
11. निरमल सोय–होड़ो जगर मुंडि, पृष्ठ 78
12. निकोरिम केरकेट्टा–बइअङकिर, पृष्ठ 52
13. डॉ. रामदयाल मुण्डा–मुण्डारी व्याकरण, पृष्ठ 28
14. देवेन्द्रनाथ शर्मा/दीप्ति शर्मा–भाषाविज्ञान की भूमिका, पृष्ठ 344

चतुर्थ अध्याय

मुण्डारी भाषा तब और अब

मुण्डा और उनकी भाषा मुण्डारी आदि प्राचीन काल से प्रचलित रही है। यह विश्व के प्राचीनतम वंश में से आते हैं। ऐतिहासिकता के आधार पर यह कहा जाता है कि मुण्डा समुदाय की भाषा–संस्कृति और सभ्यता का शुभारंभ मानव उत्पति के साथ हुआ है। मुण्डा भाषा प्राचीन काल से लोगों के कंठ में सुरक्षित है। लोकगीत, लोककथा और लोक परम्पराओं से समृद्ध मुण्डा लोक साहित्य एक ऐसा वृहत् ज्ञानकोश है जिसमें इंसानी समाज की विकासयात्रा के बहुआयामी अनुभव सुरक्षित है। नेग दस्तूर, संस्कार, आचार–व्यवहार, धार्मिक विश्वास और सम्पूर्ण जीवन–पद्धति का प्रतिबिम्ब मुण्डा लोक साहित्य में मौजूद है।

युग परिवर्त्तन के साथ ही मुण्डाओं का भौगोलिक निवास क्षेत्र परिवर्तित होता गया। बाह्य जातियों के साथ भाषायी एवं सांस्कृतिक सम्मिलन हुआ। वक्त गुजरने के साथ ही मुण्डाओं का मूल निवास स्थान छोटानागपुर के सुतियाम्बेगढ़ में बना। मदरा मुण्डा सर्वसम्मति से मानकी व राजा बनाये गये। इस समय तक मुण्डारी भाषा का अपने सर्वोत्कृष्ट रूप में यहाँ प्रचलित थी। इसकी विस्तृत चर्चा तीसरे अध्याय के भाषायी स्थानान्तरण के अन्तर्गत किया गया है। फिर भी मुण्डारी भाषा के कई पक्ष हैं जिनपर विचार करना आवश्यक है। मुण्डा भाषा की सांप्रतिक स्थिति के बारे में तभी विचार किया जा सकता है जब हम उसे ऐतिहासिक रूप में देखें। किसी भी भाषा के वर्तमान और उसकी भविष्य की दिशा को जानने–समझने के लिए भी यह जरूरी है।

मुण्डारी भाषा को लिखित रूप देने का कार्य 1840 ई. के आसपास शुरू हुआ, जब मध्य काल या भक्ति काल का दौर चला। डॉ. रामदयाल मुण्डा लिखते हैं कि–19वीं शताब्दी के प्रथम दशक के आसपास बुधनाथ शिखर का जन्म हुआ था। उनके पिता गौर शिखर तमाड़ राजा के दरबारी गायक थे। बुध नाथ को गीत–संगीत की विरासत अपने पिता से ही मिली। बुधनाथ ने प्रारंभ में पंचपरगना–बंगला और पंचपरगनियाँ में ही गीत लिखे, किन्तु उन्होंने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ–प्रीतपाला और रामायणपाला मुण्डारी में रचा। वैष्णव धर्म के प्रचार–प्रसार में मुण्डारी भाषा का योगदान बुदु बाबु (बुधनाथ शिखर) और उनके साथियों के गीतों से काफी हुआ। [1]

इसी के आसपास यानी 1844–45 ई. में ईसाई मिशनरियों का आगमन छोटानागपुर में होता है। उन्होंने यहाँ की भाषाओं का अध्ययन किया। जगदीश त्रिगुणायत लिखते हैं–''मुण्डाओं के मनोभावों को समझने के लिए और अधि कतर उनके बीच अपने धार्मिक और बाइबिलकल साहित्य को प्रचारित करने के लिए उन्होंने अपने धर्मग्रंथों का अनुवाद किया है।'' [2]

मुण्डारी भाषा का अध्ययन कई विद्वानों ने किया है, जिनमें मैक्समूलर, हडसन, कैम्बेल, रॉबर्ट काष्ट, गियर्सन, स्टेन नो, रिजले, हन्टर, लोगन, काबर्स, फेडरिक मिलर आदि प्रमुख हैं। अध्ययन के क्रम में नोत्रोत ने 1871 ई. में 'मुण्डारी इतुन पुथि' बनायी। 1873 ई. में ह्विटली जे.सी. ने 'मुण्डारी बइअंकिर' लिखा। सांतवे अध्याय में पाश्चात्य विद्वानों, भारतीय विद्वानों और मुण्डा समुदाय के विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा की लिखित पुस्तकों की सविस्तार सूची दी गई है। मेरे विचारानुसार मुण्डारी भाषा की सांप्रतिक स्थिति को दो भागों में रखकर देख सकते हैं–

(1) अलिखित

(2) लिखित

1. अलिखित

प्राचीन काल में प्रचलित मुण्डारी भाषा, जो सिर्फ कंठ व व्यवहार में प्रचलित थी और विश्व के विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई थी। इस संबंध में सदानंद अविनाश विश्राम दिलवर हंस लिखते हैं– ''होड़ो जगर सिंगि तुरो: सअ आते सिंगि हसुर सअ मेनलेरे मदागास्कर दोरेआते प्रशान्त चि का हेलोओ: मरङ दोरेअ रेअ ईस्टर नुतुम अकन दोरेआते जकेद ओड़ो: बोओ कदुड़ि आते कटा

जमबड़ मेनलेरे पंजाब दिसुमआते न्यूजीलैंड दोरेओत जकेद पसरबअकना।"[3] अर्थात् मुण्डारी भाषा पूर्व से पश्चिम मेडागास्कर और प्रशांत महासागर के ईस्टर नामक स्थान तक और उत्तर से दक्षिण कहने पर पंजाब से न्यूजीलैंड तक फैला हुआ है। उन दिनों मुण्डारी भाषा विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई थी। लोग इसी भाषा का प्रयोग व्यवहार जीवन के सभी पक्षों में करते थे। उन दिनों यह भाषा मौखिक किन्तु विकसित थी, परन्तु बदकिस्मती से इस भाषा को लिखित रूप न देना सबसे बड़ी भूल हुई। मुण्डारी भाषा के स्वर्णकाल का जतन और इसे लिखित नहीं रखने के कारण बहुत सारा दुर्लभ गुण ज्ञान का भंडार बुजुर्गों के गुजरने के साथ ही समाप्त हो गया। किन्तु गर्व की बात है कि अलिखित भाषा रहने के बावजूद वर्त्तमान तक यह सुरक्षित है।

अपने साक्षात्कार में श्री नवीन मुण्डू, सम्पादक 'सेंड़ा सेतेंग' पत्रिका कहते हैं कि मुण्डारी भाषा भारत की सबसे पुरानी भाषा है। इस भाषा को बोलने वाले लोग भारत में करीब साठ हजार बर्षों से रह रहे हैं। ये सम्पूर्ण उत्तरी भारत में फैले हुए थे। गंगा सिंधु के विस्तृत मैदान में इनकी सभ्यता फैली हुई थी। उन दिनों मुण्डारी भाषा पूरी विकसित अवस्था में थी। कई गांव शहर स्थापित थे। उस समय के जगहों और शहरों के मुण्डारी नाम विकृत रूप में आज भी पाये जाते हैं। [4] जैसे–

मुण्डारी	**हिन्दी**
कबु बुल तना	काबुल
बोलो घाट/बोलो होरा	बोलोन घाट
मोयोद जो दारू	मोहनजोदड़ो
महरा/मरा उलि	मेहरौली
होड़ो रप्पा	हड़प्पा
नवा दअ	नवादा

नामकरण के उपर्युक्त विषय में दूसरे अध्याय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत क्षेत्रों का पारम्परिक नामकरण और फैलाव विस्तृत रूप से वर्णित है।

लगभग 2000–1500 ईसा पूर्व मध्य एशिया से आर्य जाति के लोग उत्तरी भारत में आये। इससे पहले उस स्थान पर मुण्डाओं का वास था। आर्य

और अनार्यों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष संघर्ष होता था। इससे शांतिप्रिय मुण्डा लोग वहाँ से हट कर वर्त्तमान झारखंड आये। दोनों के संपर्क से दोनों भाषा प्रभावित हुई और शब्दों का आदान–प्रदान हुआ। जिसे हम संस्कृत और हिन्दी में देख सकते हैं। जैसे–

मुण्डारी	**संस्कृत**	**हिन्दी**
रोवा	रोपणम	रोपना
क:सोम	कपासम	कपास
बुसु	बुसम	पुआल
सि	सि	हल जोतना
समड़ोम	सुवर्णम	सोना
जलोम	जलोम	जाल
तुल	तुल	वजन उठाना
सुतम	सुतम	सूत
इदङ	इदं/इदानी	जल्दी
गिदि	गृधनि	गीद
सुनुम	सुनुम	तेल
पनति	पंक्ति	पंक्ति

इस तरह से कई शब्द हैं जो मुण्डारी से अन्य भाषाओं में गये हैं, ऐसा प्रतीत होता है। मुण्डा भाषा के लोग जब आजमगढ़ छोड़ा और उमेडण्डा पहुंचे, उन लोगों का जीवन बहुत ही अस्थिर रहा। फिर भी अपनी भाषा और संस्कृति को बचाये रखा। लेकिन फिर भी भाषा के अलिखित रहने से समय के साथ ही ज्ञान और विज्ञान की कई अनमोल चीजें काल के गर्त में समा गये। रिसा मुण्डा की अगुवाई में इक्कीस हजार मुण्डा लोग मुड़मा पहुंचे। इनके इक्कीस गुट बने। मदरा मुण्डा इनके प्रधान, मुखिया या राजा बने। मुण्डा लोग सुतियाम्बा, कुरूम्बए, लोहरदगा, डोंएसा, चुटिया आदि जगहों में बसे। वे प्रत्येक वर्ष मुड़मा में मिलते थे और राज–काज की बात करते थे। जवान युवक–युवतियां नृत्य के लिए जाते थे। पर्व–त्योहार, पूजा पाठ, नये–नये गीत बनने लगे। प्रत्येक गांव में अखड़ा बनने लगे। गितिओड़ा का प्रचलन शुरू हुआ। यहाँ कथा,

कहानियाँ, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, धार्मिक से संबंधित ज्ञान की बातें युवा मुण्डा लोग सीखते थे। इस तरह गाँव की भावी पीढ़ी शिक्षा की बातें ग्रहण करने लगी और मुण्डा भाषा को श्रुति रूप में बढ़ने और सुदृढ़ होने का अवसर मिला।

2. लिखित

लगभग 1840 ई. पूर्व तक मुण्डारी भाषा अलिखित रही। बुदु बाबु के काव्य से गीतों के रूप में मुण्डारी भाषा का लेखन शुरू हुआ। इसके कुछ वर्ष पश्चात ईसाई मिशनरियों ने यहाँ की भाषाओं का अध्ययन कर लिखना आरंभ किया। धार्मिक गतिविधियों को संचालित करने के लिए कुछ मिशन स्टेशनों को बनाया उनमें सरवादा, बुड़जू, खूँटीटोली, गोविन्दपुर, मुरहू आदि थे। मुण्डारी भाषा सीखने और गिरजा में विनती प्रार्थना, बाइबल पाठ, गीत आदि मुण्डारी भाषा में ही करने लगे। फिर धार्मिक रचनाओं को मुण्डारी भाषा में अनुवाद कर उसे छपवाया और वितरित किया। इस तरह मुण्डारी भाषा का लिखित साहित्य मुण्डाओं के बीच फैलने लगा। [1]

मुण्डारी भाषा के लिखित शुभारम्भ की अवधि को निम्न वर्गों में रख सकते हैं–

(क) 1840 ई. से 1900 ई. तक

(ख) 1900 ई. से 1950 ई. तक

(ग) 1950 ई. से वर्त्तमान तक

1942 ई. में डबल्यू. जी. आर्चर ने 1641 मुण्डा गीतों का संग्रह 'मुण्डा दुरंग' प्रकाशित कराया था। 1957 ई. में जगदीश त्रिगुणायत के मुण्डा गीतों का संग्रह 'बांसुरी बज रही' बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से प्रकाशित हुआ। श्री त्रिगुणायत के मुण्डा लोक–कथाओं का संग्रह भी सरकारी अनुदान से प्रकाशित हो चुका है। मुण्डा जाति और उसकी भाषा–संस्कृति के अध्ययन में सबसे बड़ा योगदान कैथलिक मिशन के फादर जॉन हॉफमैन का है। उन्होंने इन्साइक्लोपीडिया मुण्डारिका जैसे वृहद् ग्रंथ का चौदह भागों में संपादन किया और मुण्डारी का व्याकरण भी तैयार किया। मुण्डा भाषा में बाइबल का अनुवाद और भजनों के संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। मुण्डा धर्म, संस्कृति और विश्वास पर मेनस राम ओड़ेया द्वारा लिखित एवं पी. पोनेट द्वारा संपादित–अनुवादित 'सिंङबोंगा ओड़ो:

एटअः बोंगा को' अति महत्वपूर्ण पुस्तक है। सेम तोपनो का 'मुण्डा कुर्सीनामा' और कई वर्षों के अथक श्रम के बाद प्रकाशित 'म्युजिकल कल्चर ऑफ मुण्डा ट्राइब' संग्रहणीय कृतियां हैं। [5]

मुण्डारी के शिष्ट साहित्य की शुरुआत बुदू बाबू के गीतों से होती है। इसके साहित्यिक विकास में रामदयाल मुण्डा, दुलायचन्द्र मुण्डा और कांडे मुण्डा के काव्य–संग्रहों सेलेद, हिसिर और ससंबा का योगदान उल्लेखनीय है। सागु मुण्डा का 'मुण्डा कोआ इतिहास' मुण्डारी गद्य की एक नयी देन है। मुण्डारी कथा–साहित्य में मेनेस राम ओड़ेया की अप्रकाशित पुस्तक 'मतुराअ कानि' पी. पोनेट के शब्दों में 'मुण्डा जाति के जीवन का औपन्यासिक कोष' है। सुलेमान बडिंग, सुखदेव राम बरदियार, बलदेव मुण्डा, लक्ष्मण सुलंकी, भइया राम मुण्डा, भगवान सिंह, हस्सादेव मुण्डा, मोसो राम मुण्डा, कुंजल साय, मिरू टोप्पो, जगजीवन सिंह मुण्डा, आचार्य बिरसा हंस, काशीनाथ सिंह कांडे, गंदुरा मुण्डा, भुवनेश्वर मुण्डा, मणिनाथ बरदियार, मंगल सिंह मुण्डा, प्यारी टूटी, गोविन्द टोप्पो, पारसनाथ ठाकुर, कमल टोप्पो, बिसु लकड़ा, मनसिद बड़ायुद आदि ने मुण्डारी भाषा–साहित्य के विकास को अपने सृजन से नई ऊंचाईयां दी है। एम. एम. मुण्डू ने अपने जीवन भर के परिश्रम से मुण्डारी का एक वृहद् शब्द–कोष तैयार किया है। फादर पी. पोनेट का भी मुण्डारी भाषा के अध्ययन और विकास में उत्साहजनक योगदान रहा है। [6]

(क) 1840 ई. से 1900 ई. तक–इस अवधि में मुण्डारी भाषा पर पाश्चात्य विद्वानों ने कई कार्य किये। साथ ही भारतीय एवं मुण्डा समुदाय के विद्वानों द्वारा भी विपुल कार्य हुआ। इनमें प्रमुख हैं–

1871 ई. में नोत्रोत ने ''मुण्डा इतुन पुथि'', 1873 ई. में ह्विटली जे. सी. ने ''मुण्डारी प्रइमर'', 1891 में स्मिट ने ''रूडिमेन्ट ऑफ ए मुण्डारी ग्रामर'' और 1893 में स्मिट ने ''ए मुण्डारी फस्ट रीडर'' की रचना की।

(ख) 1900 ई. से 1950 ई. तक–लिखित साहित्य के पहले काल में जहाँ अध्ययन एवं लेखन मुण्डारी भाषा–व्याकरण तक ही सीमित था। लेकिन इस कालावधि में मुण्डा भाषा और साहित्य के विविध पहलुओं पर लेखन सामने आता है। ऐसा नहीं है कि इस काल में भाषा एवं व्याकरण संबंधी प्रकाशनों में कमी आई बल्कि हुआ यह कि भाषा एवं व्याकरण के साथ–साथ जीवन और समाज के दूसरे पक्षों पर भी लेखन–परम्परा की शुरुआत हुई।

इस कालावधि में जो महत्वपूर्ण प्रकाशन हुए उनमें प्रमुख है–1903 में फा. जॉन हॉफमैन का ''मुण्डारी ग्रामर'', 1905 में नोत्रेत ए का ''ग्रामर ऑफ द कोल लैग्वेज'', 1911 में डब्ल्यु. एस केनेडी एवं नोत्रोत की मुण्डारी में प्रकाशित पुस्तकें, 1912 में शरत चन्द्र राय का ''मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री'', 1917 में रेभ. जे. सी ह्विटली का ''किंडर गारटेन दुरङ'', 1928 में फा. जॉन होफ मैन का ''इन्साइकलोपीडया मुण्डारिका'', 1931 में एम. वी. भादुड़ी का ''ए मुण्डारी इंग्लिश डिक्शनरी' , दाउद दयाल सिंह होरो का 'सुरूद सलुकिद'', जेम्स हेवर्ड का (1) ''होड़ो जगर ओल जुगुत'', (2) ''नगुरी जगर सोनतो'', (3) ''मुण्डारी सरल शिक्षा'', (4) ''मुण्डा हपड़मकोम कनजि'', (5) ''सिदा पड़व डंडय'', 1940 में निरमल सोय का ''बइअंकिर पुथि'' एवं ''होड़ो जगर मुडि'', 1941 जयपाल सिंह मुण्डा ''फुदि इनुञ अइन जगर'', 1942 में डब्ल्यू जी आर्चर का ''मुण्डा दुरङ'', 1950 में जगदीश त्रिगुणायत का ''सोसोबोंगा'' और पी. पोनेट एस जे. का ''हड़म कोअ कजिम''।

(ख) 1950 ई. से अब तक–स्वतंत्रता के बाद का समय न सिर्फ मुण्डारी साहित्य के लेखन की दृष्टि से बल्कि सभी झारखंडी भाषाओं के साहित्य के विकास के लिहाज से महत्वपूर्ण समय है। 1950 ई. के बाद झारखंड के सभी भाषा–भाषी समुदायों में शिक्षा के प्रचार–प्रसार और सामाजिक–राजनीतिक जागरूकता तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी के माध्यम से विश्व साहित्य के सम्पर्क में आने से एक नवीन सृजनात्मक चेतना का उदय हुआ। इसके फलस्वरूप विभिन्न विषयों पर अपनी–अपनी मातृभाषाओं के साथ–साथ हिन्दी में व्यापक झारखंडी साहित्य सामने आया। मुण्डारी साहित्य की दृष्टि से भी अनेक लेखकों एवं उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तकों का प्रकाशन सर्वाधिक इसी दौर में हुआ। साहित्य सृजन का यह सिलसिला लगातार गति पकड़ रहा है और नित नयी पुस्तकें सामने आ रही हैं। यहाँ प्रस्तुत है 1950 ई. के बाद प्रकाशित साहित्य की संक्षिप्त सूची।

1. भाषा–व्याकरण संबंधी पुस्तकें

1957 में स्वर्णलता प्रसाद का ''मुण्डारी हिन्दी शब्दकोश'', 1958 में डॉ. मनमसीह मुन्डू का ''मुण्डारी संक्षिप्त व्याकरण'', 1968 में डॉ. रामदयाल मुण्डा का ''प्रोटोखेरवारियन फोनेटिक सिस्टम'', ''ऑस्पेक्ट ऑप मुण्डारी

वर्व'' (1969), 1980 में डॉ. रामदयाल मुण्डा का ''मुण्डारी पाठ'', 1981 में निकोदिम केरकेट्टा का ''बइअङकिर'', 1988 में डॉ. रामदयाल मुण्डा का ''मुण्डारी व्याकरण'', 1989 में दिलवर हंसं का ''होड़ो जगर रेअ एतेइइसि'', 1995 में डॉ. मनमसीह मुन्डू का ''मुण्डारी टुङकोढारि'' आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई। व्याकरण रचयिता निरमल सोय ने मुण्डारी में नये शब्दों का सृजन किया है जो आज सर्वमान्य रूप से प्रचलित हैं। उनमें निम्न है–

मेता= संज्ञा

नङमेता= सर्वनाम

उदम= क्रिया

बेड़ा= काल

जाति= विशेषण

बंग बदल= क्रिया विशेषण

बंकड़= वाक्य

संडि जिउको= पुलिंग

एंगा जिउको= स्त्रीलिंग

बंग जिउको= नपुंसक लिंग

चनल चल= परिवर्त्तन

एतेहइसि= इतिहास

दिमसि= दिनांक

इतुसइ= पाठशाला

ससंकिर= संस्कृति

कपोटअ= खिड़की

सकम= वचन आदि।

ईसाई बने मुण्डा लोग इन शब्दों का प्रयोग करते हैं–गिरजा= गिर्जा, विनती= विन्ती, पाप= पाप, इसुवर= ईश्वर, सयतन= शैतान, नरका= नरक, धरम पुथि= धर्मशास्त्र आदि।

2. लोक साहित्य संबंधी पुस्तकें

1957 में जगदीश त्रिगुणायत का ''मुण्डा लोक कथाएँ'' एवं ''बाँसरी बज रही'', 1961 में भैयाराम मुण्डा का ''दंडा जमाकन होड़ो कनि को'', 1974 में डॉ. रामदयाल मुण्डा का ''मुण्डारी गीतकार बुदु बाबु प्रीतपाला एवं रामायण पाला'', 1980 में डॉ. मनमसीह मुन्डू का ''मुण्डा कुदूम ओड़ो सोलको'' का प्रकाशन हुआ।

3. धर्म, समाज–संस्कृति एवं इतिहास संबंधी पुस्तकें

1965 में बलदेव मुण्डा का ''चंगा दुरङ'', 1970 में डॉ. दिलवर हंस का ''होड़ो ससंकिर बम्बरू'', 1977 में सागु हंस का ''मुण्डा कोअ इतिहास'', पी. एन. जे. पुर्ती का ''होड़ो होव कोअ कुर्सीनामा ओड़ो किलिको'', 1984 में मेनस राम ओड़ेया का ''सिंङबोगा ओड़ो एटअ एटअ: बोंगा को'', 1988 में तुलसीदास कृत रामचरितमानस का मुण्डारी भाषा टीका, 2000 में जुसब कन्डुलना का ''मुण्डा कोअ ससंकिर'', 2002 में डॉ. रामदयाल मुण्डा एवं रतन सिंह मानकी का ''बा बोंगा'', ''अङदि बोंगा'' एवं ''गोनोए परोमेन बोंगा''

4. कहानी, कविता, उपन्यास एवं विविध साहित्य संबंधी पुस्तकें

1966 में दुलायचन्द्र मुण्डा का ''सुड़ा संगेन'', 1967 में डॉ. रामदयाल मुण्डा का 'सेलेद', 1970 में प्रो. सुलेमान बडिञ का ''नइमिअ किमनते'', 1978 में प्रो. दुलायचन्द्र मुण्डा का ''बम्बरू'', 1980 में डॉ. रामदयाल मुण्डा अमिता, नलिन का ''एअ नव कनि को'' डॉ. काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे' का ''गुइरम'', 1984 में मेनस राम ओड़ेया का ''मतुराअ कनि'' (पांच भागों में), 1985 में लारेन्स सिलास हेम्ब्रोम का ''ओनोरोङ आद सनङ'', 1987–88 में विशु लकड़ा का ''सरना संगीत'', 1995 में निकोदिम केरकेट्टा का ''कुदुम'', 2005 ई. में 'पहम रिनिका' (मुण्डारी कवि सम्मेलन पर आधारित प्रस्तुतियों का संकलन, सम्पादक–बीरेन्द्र कुमार सोय), 2006 में बीरेन्द्र कुमार सोय (मुण्डा) का ''सेंड़ा दुबार'', 2007 में भीमा हेरेंज का ''सोसोबोंगा, ओड़आ बोंगा को मुण्डारी ते हिन्दी अर लुटकुम हड़म लुटकुम बुड़िया रआ कहानी'' और 2007 प्रो. लगनी हेरेंज का ''मसकल सआ''।

1980–81 ई. में राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना की गई। डॉ. रामदयाल मुण्डा प्रथम विभागाध्यक्ष बने।

इनके नेतृत्व में भाषायी जागरण एवं आन्दोलन का दीया मशाल बनकर समूचे झारखंड में और साथ ही साथ राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्वाला बन कर फैली। यहाँ के जनजातीय क्षेत्रीय भाषाओं को राष्ट्रीय ख्याति मिली। इसमें शिक्षण, अनुसंधान के कार्य तीव्र गति से हुए। साहित्य के सारे विधाओं पर इस भाषा की पुस्तकें निर्मित हुई। इसी आस पास झारखंड आन्दोलन को भाषायी, सांस्कृतिक, साहित्यिक बल मिला भाषायी जागरूकता, संरक्षण, संवर्धन हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली में यहां के भाषाओं को मान्यता मिली। तब से आज तक भाषा साहित्य सेवा एवं विकास हेतु प्रत्येक वर्ष विभाग के प्रतिभावान छात्रों की नियुक्ति अनुसंधानकर्त्ता के रूप में होती है। राष्ट्रीय पात्रता जाँच परीक्षा में कई छात्र उत्तीर्ण होते हैं। यह भाषायी जागरण का प्रतीक है।

इसी अवधि में मातृभाषा की सुरक्षा और इसके विकास के लिए सरकारी संरक्षण मिला। मातृभाषा के पढ़ाई होने का आदेश निर्गत हुआ। साक्षरता दर वृद्धि लाने के लिए सरकार द्वारा यह कदम उठाया गया। अविभाजित बिहार के समय में मातृभाषा में पढ़ाई होने हेतु निर्गत आदेशों का विवरण निम्न है–

(1) पत्रांक संख्या 7/एफ, 6–01/56 शि.–850 दिनांक 5.2.1960, प्रेषक–श्री से. गो. अहमद, अपर लोक शिक्षा निदेशक, बिहार, प्रेषित–सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी।

(2) पत्र संख्या 7/सी, 8–01/60 शि.–2679 दिनांक 4.6.1960, प्रेषक–श्री से. गो. अहमद, अपर लोक शिक्षा निदेशक, बिहार, प्रेषित–सभी जिला शिक्षापदाधिकारी (नाम से)

(3) पत्र संख्या 7/सी, 8–9–60 शि.–3408 दिनांक 17.8.1962, प्रेषक–श्री के. अहमद, अपर लोक शिक्षा निदेशक, बिहार, प्रेषित–सभी अपर प्रमंडल शिक्षा पदाधिकारी।

(4) पत्रांक 3242, दिनांक 28.10.1971, प्रेषक–श्री अ.प्र. श्रीवास्तव, अपर लोक शिक्षक निदेशक, बिहार, प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक/ सभी अवर प्रमंडल शिक्षा पदाधिकारी/ सह नगरपालिका शिक्षा पदाधिकारी।

(5) पत्रांक 7/ब 3/7/74, शि.–312 दिनांक 15.1.1974, प्रेषक–

श्री कैलाश बिहारी शर्मा, निदेशक (प्राथमिक शिक्षा) सह संयुक्त सचिव, बिहार, प्रेषित (4) पत्रांक 3242, दिनांक 28.10.1971, प्रेषक–श्री अ.प्र. श्रीवास्तव, अपर लोक शिक्षक निदेशक, बिहार, प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक/ सभी जिला शिक्षा अधीक्षक/ सभी जिला विद्यालय निरीक्षक/सभी अवर प्रमंडल शिक्षा पदाधिकारी/ सभी विद्यालय उपनिरीक्षक।

(6) पत्रांक आई/भी– 7–8–75, शि. 648, दिनांक 8.4.1976, प्रेषक– श्री जे.पी. बक्सी, उप शिक्षा निदेशक (विद्यालीय शिक्षा), प्रेषित–सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी/ सभी जिला शिक्षा अधीक्षक।

(7) पत्रांक 180– शि. दिनांक 13.2.1991, बिहार सरकार, मानव संसाधन विकास विभाग, शाखा सचिवालय राँची। प्रेषक–श्री ई.बी. बाखला सरकार के संयुक्त सचिव ने उपयोजना क्षेत्र के प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों में जनजातीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की स्वीकृति दी।

(8) पत्रांक 140– शि. वि. राँची, दिनांक 15.6.1995, प्रेषक– अपर शिक्षा निदेशक राँची, प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक, विषय– प्राथमिक मध्य विद्यालय में जनजातीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की योजना।

(9) पत्रांक 144– शि. वि. राँची, दिनांक 16.6.1995, प्रेषक– अपर शिक्षा निदेशक राँची, शाखा सचिवालय रांची। प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक, विषय– 118 प्राथमिक माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना।

(10) पत्र संख्या–59/शि. वि. राँची, दिनांक 23.2.1996, प्रेषक– अपर शिक्षा निदेशक राँची, शाखा सचिवालय रांची। प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक, विषय– 118 प्राथमिक माध्यमिक विद्यालयों में जनजातीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना।

(11) पत्रांक 28/ 16–1–99 बिहार सरकार शिक्षा विभाग, शाखा सचिवालय रांची।, प्रेषक– अपर शिक्षा निदेशक। प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक रांची, गुमला, लोहरदगा, पलामू, गोड्डा,

साहेबगंज, दुमका, देवघर। विषय– पुस्तक खरीदने और पढ़ाई प्रारंभ करने के संबंध में।

(12) पत्रांक 1/वि. 1–10110/89 आ. 931, दिनांक 16.अगस्त.1989। प्रेषक– श्री चिन्तु नायक आदिवासी आयुक्त राँची। प्रेषित– सचिव कल्याण विभाग बिहार पटना। विषय–पढ़ाई के शुरू करने के लिए प्रखंडों का चयन।

(13) पत्रांक 047– शि.97/52, दिनांक 24.जनवरी 2000, प्रेषक– बी.एल. वैश्यन्त्री, अपर शिक्षा निदेशक, शाखा सचिवालय रांची। प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक। विषय– जनजातीय क्षेत्र के प्राथमिक मध्य विद्यालयों में जनजातीय भाषा की पढ़ाई सुनिश्चित करने के संबंध में।

(14) पत्रांक सं. 2/2002–180, दिनांक 2 मार्च 2000, प्रेषक– बी.एल. वैश्यन्त्री, अपर शिक्षा निदेशक, शाखा सचिवालय रांची। प्रेषित–सभी जिला शिक्षा अधीक्षक, झारखंड क्षेत्र। विषय– झारखंड क्षेत्र के 18 जिले में जनजातीय भाषा से पढ़ाई सुनिश्चित करने हेतु शिक्षकों का चयन के संबंध में।

15 नवम्बर 2000 को लंबे संघर्ष के बाद झारखंड राज्य का निर्माण हुआ। आशा, उम्मीद, भरोसा, अवसर, सामाजिक, भाषिक, सांस्कृतिक तत्वों की सुरक्षा एवं उनको विकास का समुचित अवसर मिलने की खुशी सभी लोगों को है। नवगठित झारखंड में यूपीए सरकार ने सभी शिक्षक, पुलिस एवं राज्य प्रशासनिक सेवा की नौकरियों में आदिवासी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को जानना और उसकी लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य बना दिया है। यह झारखंडी भाषाओं के विकास की दिशा तथा सामाजिक नवनिर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। उम्मीद है कि इससे मुण्डारी एवं अन्य झारखंडी भाषाओं का भविष्य उज्जवल बनेगा।

मुण्डारी भाषा की पत्र–पत्रिकाएँ

मुण्डारी पत्रिकाओं में 'अबुआ दिसुम' और 'जगर साड़ा' का ऐतिहासिक महत्व है। आंशिक रूप से अन्य पत्रिकाओं में भी मुण्डा रचनाएं छपती हैं। फिलहाल मुण्डारी भाषा में एकमात्र जीवित पत्रिका 'सेंड़ा सेतेङ' है जो मासिक

है और रांची (झारखंड) से प्रकाशित हो रही है। इसके प्रकाशक–संपादक नवीन मुण्डू हैं।

भाषायी विकास, भाषा के मानकीकरण और साहित्य समृद्धि के साथ–साथ समाज की सांस्कृतिक चेतना को उन्नत बनाने में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। पत्र–पत्रिकाएँ न सिर्फ अपने लेखकों के लेखन का मंच देती है बल्कि यह समाज को भी वैचारिक रूप से उद्वेलित करते हुए उन्हें संगठित करने का काम करती है। मुण्डारी भाषा के विकास में लगी पत्र–पत्रिकाओं का भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान है। हालाँकि कई पत्र–पत्रिकाएँ समय–समय पर निकली और बंद हो गई, लेकिन अभी भी एक मुण्डारी पत्रिका का प्रकाशन जारी है। जो मुण्डारी पत्रिकाएँ अर्थाभाव के कारण बंद हो गई हैं, उन्हें भी पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है।

(1) सन् 1945 ई. में 'जगर साड़ा' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक प्रो. सुशील बागे और एन.ई. होरो थे।

(2) सन् 1960 ई. में 'सरना सकम' मासिक पत्रिका निकाली गयी। इसके सम्पादक भइया राम मुण्डा थे।

(3) 1982 ई. में 'सम्पड़तिङ' मासिक पत्रिका निकली। इसके प्रकाशक और संपादक डॉ. विशप एस. ए. बी. डी. हंस थे। यह पत्रिका भारत सरकार के समाचार पत्रों के महापंजीयक कार्यालय, नई दिल्ली से पंजीकृत थी।

(4) 1993– 1994 ई. में 'मारसल' मासिक पत्रिका निकाली गई। इसके सम्पादक झारखंड आंदोलन के पुरोधा श्री एन.ई. होरो थे।

(5) 1994 ई. में 'सनङ' मासिक पत्रिका छपी। श्री लोरेन्स सिलास हेमरोम इसके सम्पादक थे।

(6) 1999 ई. से शुरू हुई 'सेंड़ा सेतेंग' त्रैमासिक पत्रिका वर्तमान में भी छप रही है। इसके प्रकाशक और सम्पादक श्री नवीन मुण्डू हैं। 'सम्पड़तिङ' पत्रिका के बाद भारत सरकार के समाचार पत्रों के महापंजीयक कार्यालय, नई दिल्ली से पंजीकृत होनेवाली दूसरी मुण्डारी पत्रिका है।

(7) जून, 2004 ई. में रांची से प्रकाशित ''झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा'' त्रैमासिक बहुभाषायी पत्रिका है जिसमें सभी झारखंडी भाषाओं की रचनाएँ छपती हैं। इसकी प्रकाशक–संपादक वंदना टेटे हैं। झारखंड की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के लिए कार्यरत 'प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन' के सहयोग से इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। मुण्डारी भाषा और साहित्य को इसमें नियमित स्थान मिलता है। 2008 ई. में यह पत्रिका भी भारत सरकार के समाचार पत्रों के महापंजीयक कार्यालय, नई दिल्ली पंजीकृत कर ली गई है।

(8) 2007 ई. जुलाई में झारखंड की राजधानी रांची से एक झारखंड के पहले बहुभाषायी पाक्षिक समाचार–पत्र ''जोहार दिसुम'' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ है। भारत सरकार के समाचार पत्रों के महापंजीयक कार्यालय, नई दिल्ली से निर्बंधित इस पत्र के प्रकाशक एवं संपादक अश्विनी कुमार पंकज है। आठ पृष्ठों के इस अखबार में भी मुण्डारी भाषा की रचनाएँ और समाचारों का नियमित प्रकाशन होता है।

मुण्डारी भाषा की चुनौतियाँ

(1) मुण्डारी भाषा के साथ आर्यों की भाषा मिश्रित होने के कारण बहुत सारे मुण्डाओं का झुकाव दूसरी भाषाओं की ओर हुआ है जिससे वे अपनी मातृभाषा मुण्डारी भूल गये हैं। भाषा भूलने का अर्थ है अपनी भाषा और संस्कृति से विमुख हो जाना। क्या वे फिर से मुण्डारी भाषा और समुदाय के अनुसार भाषा और संस्कृति को सीख पायेंगे या जानने की रूचि रखेंगे?

(2) उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक के आसपास मुण्डारी भाषा की कई पुस्तकें लिखी गयी थी, वर्त्तमान में ये दुर्लभ होकर अनुपलब्ध हो गई हैं। उन पुस्तकों को पुनर्प्रकाशित करना समुदाय की चुनौती है।

(3) 20वीं सदी में मुण्डाओं के बीच मुण्डारी साहित्य का बीजांकुर हुआ पर साहित्य के विकास को पूरा प्रोत्साहन न सरकार, न राजनीतिज्ञों, न समाज, न मिशनरियों द्वारा उचित रूप से मिला। भारतीय संविधान की

धारा 350ए में मातृभाषाओं को प्रोत्साहन देने का प्रावधान है। इसका पालन सरकार न के बराबर करती है। मुण्डा समाज में राजनीतिज्ञ हुए पर भाषा की राजनीति नहीं करते हैं। क्षेत्र के बहुत से मिशन स्टेशन और स्कूल है पर उनमें मुण्डारी भाषा की पढ़ाई नहीं होती। किसी समय ऐसा भी था कि मिशनरी स्कूल तथा संस्थाओं में मुण्डारी बोलने पर पाबंदी थी। मुण्डा समुदाय समाज और सरकार के सभी क्षेत्रों में व्याप्त आदिवासी भाषाओं के प्रति इस उपेक्षा एवं दुराग्रह को कम करने की क्या रणनीति है? आदिवासी भाषाओं के पक्ष में माहौल बनाना एक बड़ी चुनौती है।

(4) सरकार द्वारा निर्गत आदेशों का अनुपालन न होना, मातृभाषा के विकास में सबसे बड़ा बाधक है।

(5) सभी मुण्डा परिवारों में मुण्डारी भाषा का अनिवार्य रूप से व्यवहार तथा अपनी मातृभाषा के प्रति गौरव का भाव जगाना, मुण्डारी पत्र–पत्रिकाओं का वार्षिक सदस्य बनकर उसका नियमित पठन–पाठन जैसी कई चुनौतियाँ मुण्डारी भाषा के साथ है।

मुण्डारी भाषा विकास के लिए आशा की किरणें

उपर्युक्त सभी चुनौतियों का सामना करते हुए मुण्डारी भाषा का विकास क्रमतर जारी है। हम विकासक्रम को निम्न रूपों में देख सकते हैं–

(1) राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग स्थापना के साथ ही यहां के भाषाओं को उभरने का अवसर मिला। लोगों में भाषायी जागरूकता बढ़ रही है।

(2) मुण्डारी भाषा परिषद का गठन, Societies Act xxI, 1860, No.93/73-74 किया गया। यह संस्था मुण्डारी भाषा को प्रोत्साहन देने का कार्य कर रही है।

(3) 2000 ई. में झारखंड राज्य की स्थापना के साथ ही झारखंड लोक सेवा आयोग की स्थापना हुई, इसमे अन्य भाषाओं के साथ–साथ मुण्डारी भाषा को एक विषय के रूप में रखकर कई लोगों को राज्य प्रशासनिक सेवा के साथ भाषायी सेवा का अवसर मिला है। इस तरह लोगों का ध्यान पुनः भाषायी एवं व्यक्तित्व विकास पर

गया है।

(4) झारखंड सरकार ने प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक मातृभाषा में पढ़ाई सुनिश्चित करने और इनके शिक्षक उपलब्ध कराने पर जोर दे रही है। यही क्रम चलता रहा तो नजदीक भविष्य में जल्द ही यहां की भाषाओं को विकास का समुचित अवसर मिलेगा और राज्य के साक्षरता दर में तीव्र गति से वृद्धि होगी।

निष्कर्ष

इस तरह हम कह सकते हैं कि मुण्डारी भाषा तब और अब में काफी परिवर्त्तन आया है। अलिखित से लिखित रूप आने में काफी वक्त लगा। शुरू के दिनों में मुण्डारी भाषा की लेखनी स्वतंत्रपूर्वक होती थी। व्याकरणिक एवं वर्त्तनी का प्रयोग सुविधा के हिसाब से लोग करते थे। इसीलिए दीर्घ मात्रिक रूपों का प्रयोग करते थे। हाल के दिनों में विद्वानों ने व्याकरण के हिसाब से लिखना शुरू किया है, चूँकि मुण्डारी में दीर्घमात्रिक चिन्हों का प्रयोग नहीं होता है। डॉ. रामदयाल मुण्डा ने मुण्डारी भाषा का विशाल क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए तथा बंगाल, उड़ीसा की मुण्डारी भाषा को जोड़ते हुए दीर्घ चिन्हों या मात्रिक रूपों का प्रयोग करते हैं। सामाजिक समझौते के आधार पर मुण्डारी भाषा का एक रूप बनाया जा सकता है। इसका प्रयास जारी है।

मुण्डारी भाषा को फलने फूलने तथा विकास के सही रास्ते पर ले जाने के लिए सामुदायिक जागरूकता के साथ साथ सरकारी संरक्षण अति आवश्यक है। झारखंड सरकार ने देर से ही सही पर पहल किया है, भाषाओं को विकास के रास्ते पर लाने के लिए यह शुभ लक्षण है।

संदर्भ

1. डॉ. रामदयाल मुण्डा–मुण्डारी गीतकार श्री बुदु बाबु और उनकी रचनाएँ 'प्रीतपाला और रामायाणपाला', भूमिका से
2. जगदीश त्रिगुणायत–मुण्डा लोक कथाएँ, पृष्ठ 60
3. स.अ.वि.वि. हँस–होड़ो जगर रेअ एते:हइसि नङगम ओड़ो हरा रनकव, पृष्ठ 02
4. साक्षात्कार–श्री नवीन मुन्डू, सम्पादक, 'सेंड़ा सेतेंग' मुण्डारी पत्रिका, राँची
5. साक्षात्कार–श्री नवीन मुन्डू, सम्पादक, 'सेंड़ा सेतेंग' मुण्डारी पत्रिका, राँची
6. वंदना टेटे–लोक और शिष्ट साहित्य की आदिवासी दुनिया (अप्रकाशित लेख)

उपसंहार

मुण्डारी भाषा की प्राचीनता, व्यापकता, सरलता, व्याकरणिक शर्तों की सटीकता को लिखित रूप में पुनर्स्थापित करना एवं इस भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों के समानधर्मी तत्वों को एक साथ रखकर मुण्डारी भाषा को समृद्ध बनाना है। किसी भी समुदाय की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति होती है। भाषा का जुड़ाव, प्रयोग, व्यवहार न सिर्फ समुदाय के बीच में बल्कि अन्य लोगों के साथ तालमेल बनाने का काम भी करती है।

भाषा का महत्व समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक, प्रशासनिक, व्याकरणिक, साहित्यिक को मजबूती प्रदान करना है। भाषा व साहित्यिक विकास से समाज, समुदाय को सही दिशा प्रदान करना है। भौतिकता की अनिश्चित इच्छा को साहित्य सृजन के द्वारा ही लगाम लगा पाना संभव होता है जिससे जीवन शांति व सुखदायी बनता है। मुण्डारी भाषा के साथ भी यही बात लागू होती है। यह भाषा अत्यंत ही सरल, कोमल व मधुर है, इसलिए इस भाषा के बोलने वाले लोग ईमानदार, सदाचार, मितभाषी, मिलनसार, शांत, निश्छल, निष्कपट होते हैं। कुछ अपवादों को छोड़कर इस समुदाय के लोग उपर्युक्त गुणों से परिपूर्ण हैं। यह सिर्फ मुण्डा समुदाय के लिए ही नहीं, बल्कि मानवता, सहृदयता, सहिष्णुता, सदभाव, समानता, भाईचारा, हितैषी की सोच रखने वाले समस्त मानव समुदाय के लिए आवश्यक है। इसी के आधार पर राष्ट्रप्रेम, देशप्रेम, मातृभाषा प्रेम, मानव प्रेम की भावना पैदा होगी। इससे हमारा देश शक्तिशाली रूप से उभरेगा।

मुण्डारी भाषा प्राचीनता के साथ-साथ नगर सभ्यता के निर्माण का भी

साक्षी है। इसे सुरक्षित रखना आवश्यक और अनिवार्य है। इस शोध एवं अध्ययन से मुण्डारी भाषा की विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र के सभी क्षेत्रीय रूपों के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त होगा और मानक रूप निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। हसद:, नगुरी, तमड़िया, केर: मुण्डारी के अध्ययन से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि इनके शब्दों, वाक्यों में अधिक अन्तर नहीं है। थोड़ी विषमता अवश्य है। परन्तु व्याकरणिक नियमों व व्यवहारिक प्रचलन में समानता है।मेरे विचारानुसार मुण्डारी भाषा के संपूर्ण विकास हेतु भविष्य के संभावित कार्य निम्नलिखित हो सकते हैं –

(क) भाषायी, क्षेत्रीय रूपों की विषमताओं को कम कर भाषायी मानक रूप व जनसंख्या का सही निर्धारण किया जा सकता है।

(ख) पड़ोस की अन्य आर्य, द्रविड़ भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त होगा।

(ग) भाषायी व्यापकता, व्यवहार व जनसंख्या के आधार पर ही विपुल साहित्य सृजन से भारत की आठवीं अनुसूची में मुण्डा भाषा को शामिल किया जा सकता है।

(घ) भाषायी जागरूकता, आत्मविश्वास व समानता की भावना पैदा किया जा सकता है।

(ङ) रोजगार के अवसर का सृजन किया जा सकता है।

(च) देश / राज्य की साक्षरता दर में आसानी से वृद्धि किया जा सकता है।

(छ) गांव, राज्य, देश के सभी समस्याओं को समझाना और उसका निराकरण आसानी से किया जा सकता है।

(ज) सरकारी, अर्द्धसरकारी नीतियों पर सहयोगात्मक रूप से कदम उठाया जा सकता है।

(झ) मुण्डारी भाषा के बोलने वालों की संख्या में वद्धि होगी और सामाजिक, सांस्कृतिक एकता कायम होगी। मुण्डारी भाषा साहित्य समृद्ध होगा और राष्ट्रीय भाषा की उन्नति का मजबूत आधार बनेगा।

इसके अतिरिक्त कई कार्य हैं जो भाषायी भविष्य को संवारने, विकसित करने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल होने का अवसर बनाया जा सकता है।

ऑस्ट्रिक भाषा के ऑस्ट्रोएशियाटिक शाखा की मुण्डारी भाषा का अपना गौरवमयी इतिहास रहा है। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी महत्ता, आवश्यकता एवं इस समुदाय के लोगों को समुचित अवसर प्रदान करने के साथ ही सरकारी संरक्षण के प्रावधानों को धरातल में उतारने की आवश्यकता है। तभी मुण्डारी भाषा के साथ अन्य भाषाओं का सच्चा सम्मान होगा, जो झारखंडी भाषा की धरोहर एवं एकता को प्रदर्शित करती है। विद्वानों, बुद्धिजीवियों, महानुभावों, गणमान्य व्यक्तियों के अनुभव, मार्गदर्शन एवं पुरखों के आशीर्वाद और आप सभी के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ है। मुण्डारी भाषा की भाषिक सांचना विषय पर किया गया यह कार्य शोधार्थियों, अध्येताओं और सुधी विद्वानों का ध्यान जरा सा भी खींच सका तो अपने आपको एवं अपने श्रम को सार्थक समझूंगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इस कार्य से भाषायी समानता का नया मार्ग प्रशस्त होगा।

ऑस्ट्रिक कुल के ऑस्ट्रोएशियाटिक शाखा की मुण्डारी भाषा अत्यन्त प्राचीन है। इसके अन्तर्गत संताली, मुण्डारी, कोरकू, खड़िया, हो, जुआंग, सबरा, गदाबा, आदि प्रमुख रूप से हैं। मुण्डारी भाषा की अपनी गौरवमयी इतिहास रहा है। प्राचीन सभ्यताओं के निर्माण में मुण्डारी भाषा की वैभवता प्रमाणित होती है। मयोद जो दरु (मोहनजोदड़ो) और होड़ो रप्प: (हडप्पा) मुण्डारी भाषा का ही शब्द है। विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से यह भी एक है। मुण्डा समुदाय और अपनी भाषा मुण्डारी की विशेष पहचान है। भाषा और समुदाय को दर्शाते हुए ''मुण्डारी भाषा का भाषिक संरचना'' विषय पर अध्ययन प्रस्तुत है।

प्रथम अध्याय में राज्य में प्रदेशिक भाषा की मान्यता योजना पर दृष्टि डाला गया है। भाषा परिवर्त्तन के आन्तरिक कारणों में अनुकरण की अपूर्णता, प्रयत्नलाघव, बलाघात, भावावेश, जातीय मनोवृति एवं बाह्य कारकों में भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैयक्तिक, वैज्ञानिक, जातीय प्रभाव आदि है। इसी अध्याय में भाषा उपयोग करने की योजना पर चिस्तार से चर्चा की गई है तथा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29(1), 30(1), 350(क), 45, 46 275(1) में भाषायी संरक्षण, संवर्धन, विकास से संबंधित कानूनी प्रावधानों पर विहंगम दृष्टिपात किया गया है।

द्वितीय अध्याय में भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय

रूपों की भाषिक संरचना के अन्तर्गत वर्णनात्मक भाषा विज्ञान, ऐतिहासिक भाषा विज्ञान, तुलनात्मक भाषा विज्ञान, सामाजिक सांस्कृतिक भाषा विज्ञान के अनुसार ध्वनि संरचना, स्वर, व्यंजनों का अध्ययन मुण्डा समुदाय के विद्वानों द्वारा रचित व्याकरण पुस्तकों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। शब्द संरचना मुण्डारी भाषा में तीन रूपों में मिलते हैं - (क) मूल शब्द (ख) अन्य भाषाओं से आगत शब्द (ग) नवनिर्मित शब्द।

उपसर्ग, प्रत्यय, समास के साथ ही वाक्य संरचना में मुण्डारी भाषा के चारों उपशाखाओं यथा - हसद:, केर:, नगुरी, तमड़िया पर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है। अर्थ संरचना में मुख्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंजानार्थ, सामाजिक अर्थ, व्याकरणिक अर्थ, बलात्मक अर्थ, शैलीय, व्यंग्यार्थ, शब्द स्तर पर विस्तृत अध्ययन है।

ऐतिहासिक भाषा विज्ञान में मुण्डारी भाषा एवं समुदाय के अतीत में घटित लक्षण वर्त्तमान में परिलक्षित एवं अन्य समुदाय से प्रभावित होने के पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। मुण्डारी भाषा को बोलने वाले अन्य जातियों में उरांव, बड़ाईक, स्वांसी, तेली, डोम, मुसलमान आदि हैं।

तुलनात्मक भाषा विज्ञान में मुण्डारी भाषा के चार क्षेत्रीय उपशाखाओं के बीच शब्द रचना, वाक्य, अर्थ, ध्वनि रचना पर अध्ययन है। हसद: मुण्डारी को छोड़कर बाकी तीन उप शाखाएँ - तमड़िया, केर:, नगुरी मुण्डारी पर अन्य सम्पर्क भाषाओं यथा - नागपुरी / सादरी, हिन्दी, बंगला, पंचपरगनिया आदि भाषाओं का प्रभाव पड़ा है, इसलिए बहुत सारे शब्द मुण्डारी से अन्य भाषा में समा गये हैं और बहुत सारे मुण्डारी में आ गये हैं, फिर भी भाषायी विवाद झारखंड में नहीं है। झारखंड की नौ भाषाओं की शब्दिक संरचना एक दूसरे से बहुत हद तक समान है। यही कारण है कि यहां समरसता, समानता, भाईचारा, मदैत, सहिया की प्रथा कायम है और सम्पूर्ण देश के लोकतांत्रिक, प्रजातांत्रिक, मानवतावादी स्वरूप का सर्वोत्कृष्ट रूप एवं जीवन्त व्यवहार इस राज्य में कायम है।

सामाजिक-सांस्कृतिक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत दोनों में समन्वय स्थापित कर सांस्कृतिक एकता को दर्शाया है।

तृतीय अध्याय में मुण्डारी भाषा के मानक स्वरूप निर्धारण, अन्तरक्षेत्रीय भाषिक संबंध का अध्ययन कर मुण्डा भाषा के विद्वानों-लेखकों को तीन वर्गों

में रखा गया है - (क) पाश्चात्य विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन (ख) भारतीय विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन (ग) मुण्डा मुदाय के विद्वानों द्वारा मुण्डारी भाषा लेखन। इसके अन्तर्गत विद्वानों का नाम, उनके द्वारा रचित पुस्तकों का नाम दर्शाया गया है। मुण्डारी भाषा लेखन शुभारम्भ से वर्त्तमान तक की पुस्तकें, जिससे मुण्डारी भाषा समृद्ध होती है, उनकी सूची बनायी गयी है।

मुण्डारी भाषा के मानक रूप निर्धारण के पहल की गई लेखन परम्परा को विद्वानों ने किस प्रकार प्रस्तुत किया है, उनके द्वारा वर्णित स्वर वर्ण, व्यंजन वर्ण आदि के समानता पर अध्ययन किया गया है। यह अनुसंधान देवनागरी लिपि में होने के कारण तथा मुण्डाओं की अधिक संख्या का देवनागरी लिपि के माध्यम से ही शिक्षा ग्रहण करने एवं आम लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मैंने देवनागरी लिपि में लिखित मुण्डारी पुस्तकों को ही अध्ययन का आधार बनाया है। चूंकि मानक रूप का निर्धारण इसी लिपि में करना है। मुण्डारी भाषा की अपनी स्वतंत्र लिपि व्यवहार में नहीं है। इसलिए निरमल सोय की पुस्तक 'होड़ो जगर मुंडि', निकोदिम केरकेट्टा की पुस्तक 'बइअंकिर', डॉ. मनमसीह मुण्डू की 'टुन्डकोदारि', डॉ. रामदयाल मुण्डा की 'मुण्डारी व्याकरण', सी.ए. हंस की 'टीच यूयोर सेल्फ मुण्डारी', डॉ. मनसिध बड़ायउद की पुस्तक 'नवा होड़ो जगर मुंडि' को ही आधार बनाया है। अन्य अध्यायों में अन्य विद्वानों की भी चर्चा की गयी है।

सभी विद्वानों का तार्किक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। फिर भी सामाजिक समझौता व स्वीकृति का होना अनिवार्य है। भाषा का मानक रूप तभी बनाया जा सकता है, जब उस भाषा की परिपक्वता, समृद्धता विकसित होगी। इस दिशा में मुण्डारी भाषा गतिशील है। साहित्य के सारे विधाओं में रचनाएँ की जा रही है। इसी अध्याय में विद्वानों द्वारा व्यवहृत शब्द, वाक्यों की तुलना प्रस्तुत है। साथ ही तुलसीदास कृत रामचरित मानस का मुण्डा भाषा टीका में व्यवहार किये गये शब्द, वाक्य तथा बाइबल के अनुवाद में मुण्डारी शब्द, वाक्यों का प्रयोग आदि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस तरह से मुण्डारी भाषा के चारों क्षेत्रीय रूपों में भाषिक संबंध बनाने के लिए प्रत्येक क्षेत्रीय रूपों के वर्ण, शब्द, वाक्य, सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहार आदि को प्रमुख रूप से स्थान दिया है और मानक रूप बनाने का मार्ग बनाने की कोशिश की है।

अनुसंधान के चतुर्थ अध्याय में मुण्डारी भाषा तब और अब पर प्रकाश डाला गया है। इसकी प्रामाणिकता स्थानों के नामकरण, मृतकों के शव दफनाने

के बाद उनके नाम से 'दिरि रकब' (पत्थरगाड़ी) संस्कार से स्पष्टतः मालूम होता है। मुण्डारी भाषा का इतिहास, लेखन की शुरुआत को ध्यान में रखकर मैंने दो रूपों में दिखाया है (क) अलिखित और (ख) लिखित भाषा।

अलिखित के अन्तर्गत प्राचीन काल में व्यवहृत, जो सिर्फ सामाजिक व्यवहारिक रूप में कठोर थी। कंठों में भाषा के सारे गुण-अवगुण मौजूद थे। मस्तिष्क तीव्र गति से काम करता था। नतीजा था कि जीविका के सारे उपाय चाहे प्रशासनिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक पक्ष हो, सभी में याददाश्त के बल पर कार्य होते थे। इस अनमोल पक्षों को लिखित रूप उस समय नहीं दिया गया, चूंकि इसकी आवश्यकता ही नहीं महसूस की गयी थी।

मुण्डारी भाषा के लेखन का शुभारम्भ 1830 ई. के आस पास बुधनाथ शिखर, बुदु बाबु के दरबारी गायक बनने के बाद शुरू हुआ। इसके बाद ईसाई मिशनरियों का आगमन हुआ। अपने धार्मिक उद्देश्य की सहजता हेतु उन्होंने यहां की भाषाओं का अध्ययन किया। इस क्रम में कई पुस्तकों का निर्माण किया। इसका वर्णन सातवां अध्याय में किया गया है। इस भाषा के लिखित अवधि को तीन कालों में विभाजित किया गया है -

(क) 1840 ई. से 1900 ई. तक

(ख) 1900 ई. से 1950 ई. तक

(ग) 1950 ई. से वर्त्तमान तक

इसी अध्याय में दिखाया गया है कि जनजातीय भाषा यथा - मुण्डारी, संताली, हो, कुडुख की पढ़ाई भारतीय संविधान के अनुच्छेद, जिसमें मातृभाषा की पढ़ाई पर बल दिया गया है, अनुपालन करते हुए बिहार सरकार ने कई आदेश पारित किये थे जिनका विस्तृत उल्लेख पत्रांक संख्या, तिथि सहित किया गया है।

संदर्भ सूची

1.	बड़ायउद, डॉ. मनसिद्ध	नवा होड़ो जगर मुंडि	2005 प्रथम संस्करण	काथलिक प्रेस, रांची
2.	भट्ट एवं भार्गव, एस. सी. एवं गोपाल के.	लैण्ड एंड पीपुल ऑफ इंडियन स्टेट्स एंड यूनियन टेरिटरीज (वोल्यूम 4)	2005 पुनर्मुद्रण	कलाज पब्लिकेशंस सत्यवती नगर दिल्ली - 52
3.	भट्टाचार्य, सुधिभूषण	स्टडीज इन कम्परेटिव मुंडा लिंग्विस्टिक्स	1975 प्रथम संस्करण	रजिस्ट्रार, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज शिमला
4.	चौधरी, एन. सी.	मुण्डा सोशल स्ट्रक्चर	1977 प्रथम संस्करण	के. एल. एम. प्रा. लि., बी. बी. गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-12
5.	डि. स्मेट	रुडिमेण्ट्स ऑफ ए मुंडारी ग्रामर	1891 प्रथम संस्करण	कलकत्ता
6.	डॉल्टन, एडवर्ड टुइटे	ट्राइबल हिस्ट्री ऑफ ईस्टर्न इंडिया	1978 द्वितीय संस्करण	कॉस्मो पब्लिकेशन अंसारी रोड दरियागंज, दिल्ली
7.	डुंगडुंग, मथियस	हिन्दी और खड़िया (तुलनात्मक और विश्लेषणात्क अध्ययन)	1986 प्रथम संस्करण	सत्य भारती रांची
8.	डिफलोथ, जी.	द कंस्टीट्यूशन ऑफ द लिंग्विस्टिक पैलेनटोलॉजी टु द होमलैंड ऑफ ऑस्ट्रो एशियाटिक	2006 चतुर्थ संस्करण	भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर
9.	दूबे, श्यामाचरण	मानव और संस्कृति	2001 संशोधित सं.	राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली

10.	ग्रियर्सन, जॉर्ज	लिंग्विस्टीक सर्वे ऑफ इंडिया (भाग-4)	1967 पुनर्मुद्रण	श्री सुंदरलाल जैन मोतीलाल बनारीदास बंगला रोड, जवाहर नगर, दिल्ली - 7
11.	हलदार, राखालदास	एन् इंट्रोडक्शन टु दि मुण्डारी लैंग्वेज	1919 प्रथम संस्करण	जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल
12.	हॉफमैन, जॉन	मुण्डारी ग्रामर एंड एक्सरसाईज	2001 पुनर्मुद्रण	ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
13.	हॉफमैन, जॉन	इन्साइक्लोपिडिया ऑफ मुण्डारिका	1950 पुनर्मुद्रण	गर्वमेंट प्रिंटिंग प्रेस पटना
14.	हंस, सी. ए.	टीच योरसेल्फ मुण्डारी	प्रथम संस्करण	होड़ो सेंड़ा समइति जोजोहातु हाउस पूर्वी चर्च रोड, कठर टोली, रांची - 1
15.	हंस, सदानन्द अविनाश विश्राम दिलवर	होड़ो जगर रेअ एतेहइसि नङगम ओड़ो हरा रनकब	1989 प्रथम संस्करण	होड़ो मुंडा सांस्कृतिक समाज, जोजोहातु हाउस, पूर्वी चर्च रोड, कठर टोली, रांची-1
16.	हंटर, डब्ल्यू. डब्ल्यू	ए कम्प्रेटिव डिक्सनरी ऑफ द इंडिया एंड हाई एशिया	1868	कलकत्ता
17.	हट्टन, जे. एच.	सेन्सस ऑफ इंडिया 1931 (वोल्यूम 2)	1986 पुनर्मुद्रण	ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, शास्त्री नगर, दिल्ली-7
18.	ह्विट्ली, जे. सी.	मुण्डारी प्राइमर	1873 प्रथम संस्करण	कलकत्ता
19.	कुंडलना, जोसेफ	छोटानागपुर के आदिवासी	2000 द्वितीय संस्करण	छोटानागपुर मुंडा संगोम समइति, लचरागढ़, गुमला
20.	केरकेट्टा, निकोदिम	बइअङकिर	1981 प्रथम संस्करण	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
21.	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	झारखंडी भाषाओं की समस्याएँ और संभावनाएँ	1992 प्रथम संस्करण	ज्योति प्रकाशन अपर बाजार, रांची
22.	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	छोटानागपुर का इतिहास कुछ सूत्र, कुछ संदर्भ	1979 प्रथम संस्करण	विलियम केरी स्टडी एंड रिसर्च सेंटर श्रीरामपुर, कलकत्ता
23.	कृष्ण, अभिषेक	लोकतंत्र चाहिए तो मातृभाषाओं को बचाइए	15 फरवरी 2008	दैनिक जागरण रांची
24.	महतो, जगन्नाथ	मुण्डारी शिक्षक	19.... प्रथम संस्करण	कठर टोली, रांची

25.	मुण्डा, भैयाराम	दंड़ा जमाकन होड़ो कहनी को	1961 प्रथम संस्करण	अधीक्षक, सचिवालय शाखा मुद्रणालयए रांची
26.	मुण्डा, भैयाराम	'सोसोबोंगा' (संग्रहित)		
27.	मुण्डा, डॉ. रामदयाल	आदि धर्म	2000 प्रथम संस्करण	झारखंड प्रकाशन दिरि ओड़ा:, सरना टोली, हातमा, रांची
28.	मुण्डा, डॉ. रामदयाल	आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल	2000 प्रथम संस्करण	प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली - 2
29.	मुण्डा, डॉ. रामदयाल	मुण्डारी व्याकरण	1988 द्वितीय संस्करण	छोटानागपुर प्रकाशन केन्द्र, श्रद्धानंद रोड,रांचा-1
30.	मुण्डा, डॉ. रामदयाल	मुण्डारी गीतकार श्री बुदु बाबु और उनकी रचनाएँ 'प्रीतपाला और रामायाणपाला'	1974 प्रथम संस्करण	आदिवासी साहित्य परिषद्, खूंटी, रांची
31.	मुण्डा, डॉ. रामदयाल	प्रोटो खेरवारियन फोनेमिक	1968 प्रथम संस्करण	यूनिवर्सिटी ऑफ सिस्टम शिकागो, डिपार्टमेंट ऑफ लिंग्विस्टक्स
32.	मुण्डा, डॉ. रामदयाल	मुण्डारी पाठ	1981 प्रथम संस्करण	मुण्डारी साहित्य परिषद्, रांची
33.	मुण्डू, डॉ. मनमसीह	मुण्डारी टुङकोदारि (मुण्डारी शब्दकोश)	1995 प्रथम संस्करण	कैथोलिक प्रेस, रांची
34.	मुण्डा, सागु हंस	मुण्डा कोअ: इतिहास	1977 प्रथम संस्करण	वीरभारत तलवार हिन्दी विभाग, रांची वि. वि., रांची
35.	मुण्डा, डॉ. सुभाष चन्द्र	पंचपरगना के मुण्डाओं पर हिन्दू धर्म का प्रभाव	2003 प्रथम संस्करण	सुड़ा सागेन कॉलेज रोड, बुण्डू, रांची
36.	नोत्रोत, ए.	ग्रामर ऑफ दि कोल लैंग्वेज	1905 प्रथम संस्करण	रांची
37.	उराँव, डॉ. प्रकाश चन्द्र	लैण्ड एंड पीपुल ऑफ झारखंड	1961 प्रथम संस्करण	जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी, रांची
38.	ओड़ेया, मेनस	सिङबोंगा ओड़ो एटअ: एटअ: बोंगा को	2004 प्रथम संस्करण	कैथोलिक प्रेस रांची
39.	पागल, अशोक	पुरातत्व और इतिहास की झारखंडी धरोहर	2004 प्रथम संस्करण	प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली - 2
40.	पंकज, अश्विनी कुमार	पुरखा लड़ाके (सं.-वंदना टेटे)	2005 प्रथम संस्करण	प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, बरियातु, रांची - 9
41.	प्रसाद, डॉ. दिनेश्वर	लोक साहित्य और संस्कृति	1973 प्रथम संस्करण	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद

42.	प्रसाद, स्वर्णलता	बिरहोर वार्तालाप निर्देशिका	1986 प्रथम संस्करण	बिहार जनजातीय कल्याण एवं शोध संस्थान, रांची
43.	प्रसाद, स्वर्णलता	कोरवा वार्तालाप निर्देशिका	1985 प्रथम संस्करण	वही
44.	प्रसाद, स्वर्णलता	भूमिज वार्तालाप निर्देशिका	1989 प्रथम संस्करण	वही
45.	प्रसाद, स्वर्णलता	खड़िया वार्तालाप निर्देशिका	1986 प्रथम संस्करण	वही
46.	प्रसाद, स्वर्णलता	असुरी वार्तालाप निर्देशिका	1986 प्रथम संस्करण	वही
47.	प्रसाद, स्वर्णलता	हिन्दी-मुंडारी शब्दकोष	1976 प्रथम संस्करण	वही
48.	पोनेट, पी.	द मुण्डा वर्ल्ड	1978 प्रथम संस्करण	कैथोलिक प्रेस रांची
49.	राय, शरत चन्द्र	मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री	2004 तृतीय संस्करण	क्राउन पब्लिकेशंस अपर बाजार, रांची
50.	सच्चिदानंद	द चेंजिंग मुण्डा	1979 प्रथम संस्करण	कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नयी दिल्ली
51.	शर्मा, देवेन्द्र शर्मा, दीप्ति	भाषा विज्ञान की भूमिका	2001 संशो. संस्करण	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली - 51
52.	शर्मा, रामविलास	भारत की भाषा समस्या	1989 तृतीय संस्करण	राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली
53.	शर्मा, डॉ. विमला चरण	झारखण्ड की जनजातियाँ	2006 प्रथम संस्करण	क्राउन पब्लिकेशंस आर्यन टावर, पूर्वी जेल रोड, रांची
54.	सिंह, भगवान	भारतीय सभ्यता की निर्मिति	2004 प्रथम संस्करण	इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद
55.	सिंह, डॉ. कर्ण	भाषा विज्ञान	1995 एकादश संस्क.	साहित्य भंडार मेरठ
56.	सिंह, कुमार सुरेश	बिरसा मुण्डा और उनका आंदोलन	1979 प्रथम संस्करण	क्लासिकल पब्लिकेशन, नयी दिल्ली
57.	सिंह, कुमार सुरेश	झारखंडी संस्कृति और अस्मिता: गहन अंधकार के रोशनदान (हरिवंश द्वारा संपादित पुस्तक 'झारखंड : दिसुम मुक्तिगाथा और सृजन के सपने')	2002 प्रथम संस्करण	राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली
58.	सिंह, कुमार सुरेश	'पीपुल ऑफ इंडिया: ऐन इंट्रोडक्शन'	2002 प्रथम संस्करण	सीगल बुक्स, 26 सर्कस एवेन्यू, कलकत्ता

59. सिंह, एन. एच. इटगी, शैलेन्द्र कुमार — लिंग्विस्टीक लैण्डस्केपिंग इन इंडिया — 2002 प्रथम संस्करण — भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

60. सिन्हा, एन. के. — मुण्डारी ग्रामर — 1975 प्रथम संस्करण — भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

61. सिन्हा, एन. के. — मुण्डारी फोनेटिक रीडर — 1974 प्रथम संस्करण — भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

62. सोय, निरमल — होड़ो जगर मुंडि — 1940 प्रथम संस्करण

63. सक्सेना, डॉ. बाबूराम — सामान्य भाषा विज्ञान — 197 प्रथम संस्करण — हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

64. टेटे, वंदना — एक दिन मिट जाएंगे प्यारे तेरे बोल — 15 फरवरी 2008 — दैनिक जागरण रांची

65. टेटे, वंदना — लोक और शिष्ट साहित्य की आदिवासी दुनिया (अप्रकाशित लेख)

66. थापर, रोमिला — भारत का इतिहास — 1975 15वां संस्करण — राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली

67. तिलमिङ, जे. सी. — मुण्डारी सरल शिक्षा — 19... प्रथम संस्करण — रांची

68. तिवारी, डॉ. भोलानाथ — भाषाविज्ञान कोश — 1972 प्रथम संस्करण — वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली

69. तिवारी, डॉ. भोलानाथ — हिन्दी भाषा की संरचना — 1979 प्रथम संस्करण — वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली

70. तोपनो, जी. एस. — नवा बपइ अइन — 2000 प्रथम संस्करण — धार्मिक साहित्य सदन, मनरेसा हाउस, रांची

71. तोपनो, सेम — कुर्सीनामा : मुण्डाओं का नृजातीय इतिहास — 1982 प्रथम संस्करण — भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, कलकत्ता

72. त्रिगुणायत, जगदीश — मुण्डा लोक कथाएँ — 1968 प्रथम संस्करण — अधीक्षक, सचिवालय शाखा मुद्रणालय, रांची

73. त्रिगुणायत, जगदीश — बाँसुरी बज रही — 1957 प्रथम संस्करण — बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

74. विद्याभूषण — झारखण्ड समाज संस्कृति और विकास — 2000 प्रथम संस्करण — प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली-2

75. जॉइड, नॉरमन एच. — स्टडीज इन द मुण्डा नमरल्स — 1978 प्रथम संस्करण — भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

जर्नल/स्मारिका

76. अनुसूचित जनजाति विशेष से संबंधित राज्य प्राथमिक जनगणना सार 2001, टेबल क-11

77. डाटा हाइलाइट्स : द शेड्युल ट्राइब्स (झारखंड) सेन्सस ऑफ इंडिया 2001

78. स्मारिका, झारखण्डी भाषा साहित्य परिषद, वर्ष - 1997

पत्र-पत्रिकाएं

79. आदिवासी — सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, बिहार एवं झारखंड सरकार, रांची
80. दैनिक जागरण, रांची — कोकर औद्योगिक क्षेत्र, रांची
81. हिन्दुस्तान, रांची (दैनिक) — कोकर औद्योगिक क्षेत्र, रांची
82. जगर सड़ा (1960 के अंक) — संपादक: सुशील कुमार बागे, निरल एनम होरो — प्रकाशक : गोपाल मुंजाल
83. झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा (त्रै.) — संपादक/प्रकाशक : वंदना टेटे, चेशायर होम रोड, बरियातु, रांची - 834009
84. जोहार दिसुम खबर (पाक्षिक) — संपादक/प्रकाशक : अश्विनी कुमार पंकज, 203, एम. जी. टॉवर, पूर्वी जेल रोड, रांची - 834001
85. प्रभात खबर (दैनिक) — कोकर औद्योगिक क्षेत्र, रांची
86. रांची एक्सप्रेस (दैनिक) — बड़ालाल स्ट्रीट, अपर बाजार, रांची
87. शालपत्र — संपादक/प्रकाशक : मनमोहन पाठक/वीर भारत तलवार, धनबाद
88. सेंड़ा सेतेंग (त्रैमासिक) — संपादक/प्रकाशक : नवीन मुण्डू, दाऊद नगर, डिबडी, डुरूण्डा, रांची

इंटरनेट

89. एचटीटीपी://इन डॉट विकिपिडिया डॉट ओआरजी/विकि/मुण्डा-पीपुल
90. एचटीटीपी://इन डॉट विकिपिडिया डॉट ओआरजी/विकि/मुण्डारी-लैंग्वेजेज
91. एचटीटीपी://एथनोलॉग डॉट कॉम/मुण्डारी

साक्षात्कार

1. श्री गंदुरा मुण्डा, रांगरोंग, अड़की, राँची (निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखंड) — *हसद:*
2. श्री पण्डा बोदरा, अध्यक्ष - मुण्डा समाज विकास समिति, राँची — *हसद:*
3. श्री सोमा सिंह मुण्डा, सेरेंगहातु, अड़की, राँची (सहायक निदेशक, झारखंड जनजातीय कल्याण एवं शोध संस्थान, रांची) — *हसद:*
4. श्री जेठा नाग, अध्यक्ष - वनवासी कल्याण आश्रम, राँची — *हसद:*
5. श्री रतन सिंह मानकी, उम्र - 56, कुड़ापुर्ती, खूँटी — *हसद:*
6. श्री नवीन मुन्डू, सम्पादक, 'सेंड़ा सेतेंग' मुण्डारी पत्रिका, राँची — *हसद:/नागुरी*
7. श्री शिवलाल किस्कू "मुरूतबाहा" — *नागुरी (मुंडारी, संताली)*
8. श्री बुधराम मुण्डा, सिमडेगा — *नागुरी*
9. श्री चमरा मुण्डा, अध्यक्ष-अखिल भारतीय सरना समाज, राँची (झारखण्ड) — *नागुरी*
10. श्रीमती ज्योति भेंगरा (शिक्षिका), डोड़मा, खूँटी — *नागुरी*
11. प्रो. राजेश तोपनो, तोरपा, खूँटी — *नागुरी*

₹ 600.0

ISBN 978-93-85981-17

सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस

एन-3/25, मोहन गार्डन, उत्तम नगर नई दिल्ली-110059

दूरभाष : +91-9899665801, ई-मेल : satyampub_2006@yahoo.com

9 789385 981173